पी एन जी आर बी
PNGRB

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
Petroleum and Natural Gas Regulatory Board



पीएनजीआरबी

दर्पण

2025-2026



पीएनजीआरबी दर्पण

2025-26

पीएनजीआरबी दर्पण
2025-26

वार्षिक पत्रिका: षष्टम संस्करण, वर्ष 2025 - 2026

संरक्षक
डॉ. अनिल कुमार जैन
अध्यक्ष

सदस्य - वाणिज्यिक
श्री अंजनी कुमार तिवारी

सदस्य - तकनीकी
श्री जयंत नारायण दास

मार्गदर्शक
श्री अंजन कुमार मिश्रा
सचिव

मुख्य सतर्कता अधिकारी
श्री रजनेश सिंह
आईआरएसएम

संपादक
श्री मुक्तिकाम फुकन
निदेशक (प्रशासन प्रभाग एवं मानव संसाधन)

संपादक मंडल
श्री आशुतोष भट्ट
उप-निदेशक (निगरानी-1)

श्री गौरव शर्मा
उप-निदेशक (प्राधिकरण-1)

सामग्री संकलनकर्ता
सहायक परामर्शदाता (राजभाषा)
(राजभाषा अनुभाग)

सुश्री अलोना यादव
सहायक परामर्शदाता (पीआर और एसएम)
आवरण पृष्ठ रूपरेखा एवं सज्जा

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अत: पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए पीएनजीआरबी प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
1.	पीएनजीआरबी दृष्टिकोण	1
2.	हमारे प्रेरणा स्रोत	2
3.	संरक्षक की कलम से	3
4.	सह-सरंक्षक की ओर से	4
5.	सह-सरंक्षक की ओर से	5
6.	सचिव की ओर से संदेश	6
7.	मुख्य सतर्कता अधिकारी की कलम से	7
8.	संपादकीय	8
9.	वंदे मातरम्	9
10.	पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड के अध्यक्ष - डॉ. अनिल कुमार जैन का साक्षात्कार	10
11.	जीत कहीं और हार कहीं	12
12.	पीएनजीआरबी ने 6 अक्टूबर 2025 को मनाया अपना 19वाँ स्थापना दिवस	13
13.	फोबोफोबिया! फोबियाओं की रोचक दुनिया	14
14.	स्वच्छता, शुचिता एवं सदाचार - संतुष्ट एवं सफल जीवन के आधार	18
15.	आधी शताब्दी की ओर मुड़कर देखते हुए	19
16.	बस खुद को ये याद दिलाना तुम	21
17.	कार्य–जीवन संतुलन : अनुशासन, सेवा और स्वास्थ्य की मेरी यात्रा	22
18.	सत्यनिष्ठा और ईमानदारी में अंतर	24
19.	डाउनस्ट्रीम तेल एवं गैस क्षेत्र में सुरक्षा, पारदर्शिता एवं सुशासन को सुदृढ़ करने की दिशा में पीएनजीआरबी के प्रयास	25
20.	सामाजिक विकास में शिक्षकों को सशक्त बनाने की भूमिका और शिक्षा के पुनर्निर्माण का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण	27
21.	शुक्राना – जीवन की सबसे सुंदर इबादत	33
22.	बहुआयामी पड़ाव है जिदंगी!	35
23.	पीएनजीआरबी के सम्मेलन/संगोष्ठी - टोरेंट गैस के सिटी गेट और सीएनजी मदर स्टेशन का दौरा	37
24.	भारत के ऊर्जा परिवर्तन को साक्ष्य-आधारित अंतर्दृष्टियों से गति प्रदान करने पर संगोष्ठी	38
25.	भारत में सीजीडी विकास को गति देने हेतु पुणे में आयोजित सम्मेलन	38

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
26.	पीएनजीआरबी स्ट्रेटेजिक रिट्रीट 2.0 का आयोजन	39
27.	पीएनजीआरबी समागम में प्रस्तुतियाँ - ऊर्जा सुरक्षा: भारत में गैस की मांग की अगली लहर को गति देना	40
28.	पीएनजीआरबी में पीएनजी ड्राइव 2.0 का समापन समारोह	41
29.	पीएनजीआरबी में दिवसों का आयोजन - संविधान दिवस 2025; शपथ ग्रहण समारोह	42
30.	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026	43
31.	विश्व पर्यावरण दिवस 2026	43
32.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026	45
33.	पीएनजीआरबी ने स्वच्छता पखवाड़ा 2026 का सफल आयोजन	45
34.	कार्यालय में भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन	46
35.	व्याख्यान/प्रशिक्षण/कार्यशालाएं - पीएनजीआरबी में 23 अप्रैल 2026 को रणनीतिक हाइड्रोकार्बन भंडार पर विशेष व्याख्यान का आयोजन	47
36.	पीएनजीआरबी द्वारा 'अंतरंग व्यापार निषेध निषेध विनियम, 2015' पर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन - 30.01.2026	48
37.	पीएनजीआरबी में एआई के उपयोग पर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन - 9 मार्च 2026	49
38.	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में हिंदी कार्यशाला का आयोजन	50
39.	पॉश अधिनियम, 2013 पर कार्यशाला का आयोजन - 15 मई 2026	51
40.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में राजभाषा और भारतीय भाषाओं का भविष्य	52
41.	पीएनजीआरबी में राजभाषा से संबंधित गतिविधियां- वित्तीय वर्ष के दौरान आयोजित कार्यशालाएं	55
42.	कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा, 2026 का आयोजन	57
43.	राजभाषा हिंदी: हमारी प्रशासनिक पहचान और गौरव	59
44.	राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, जागरूक रहें, सुरक्षित रहें	60
45.	क्योंकि... तुम माँ नहीं हो	61
46.	मुझे बहुत दूर मत ब्याहना...!	63
47.	सफलता की कहानी: एक छोटे किसान की मेहनत	65
48.	छूटते रिश्ते, बचती यादें	66
49.	'विकास' विनाशकारी कैसे हो जाता है?	67
50.	जलवायु परिवर्तन : अस्तित्व के सामने खड़ी वैश्विक चुनौती	68
51.	कविताएं- कर्म की वाणी	69

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
52.	यही हूँ मैं	69
53.	हिंदी: हमारी पहचान	70
54.	प्राकृतिक गैस – स्वच्छ ऊर्जा का संदेश	71
55.	पीएनजीआरबी के संग हरित हाइड्रोजन की नई उड़ान	72
56.	कर्म – जैसा बोओगे, वैसा पाओगे	73
57.	पर्यावरण से जुड़ा हमारा समाज	74
58.	ऊर्जा के बिना जीवन : एक दिन की कल्पना	75
59.	एक बूंद ईंधन की कीमत	76
60.	दैनिक जीवन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग	77
61.	एआई और वर्कप्लेस: तकनीक की रफ्तार या नैतिकता की सीमाएं?	78
62.	सत्यवचन	80
63.	दीपोपर्व उत्सव	81
64.	नई सोच, नई उड़ान	81
65.	पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए कर्मियों की सूची	82
66.	पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए कर्मियों की सूची	84
67.	दैनिक उपयोग में आने वाली संक्षिप्त टिप्पणियाँ	86
68.	इनसे मदद लें	92

पीएनजीआरबी दृष्टिकोण

पीएनजीआरबी का लक्ष्य एक ऐसी विश्वस्तरीय एवं प्रभावी व्यवस्था का निर्माण करना है, जिसके माध्यम से प्रतिस्पर्धी ऊर्जा बाजार के जरिए उपभोक्ताओं को किफायती मूल्य पर उच्च गुणवत्तापरक तेल एवं गैस उपलब्ध हों और उनकी नियमित एवं विश्वसनीय आपूर्ति बनी रहें तथा सुरक्षा के सर्वोच्च मानकों का पूर्णतः पालन सुनिश्चित किया जा सकें।



हमारे प्रेरणा स्रोत



"हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।"

—नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

"भारत की प्रत्येक भाषा, भारत की संस्कृति का गहना है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है और किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी की प्रतिस्पर्धा नहीं है।"

—अमित शाह (गृह एवं सहकारिता मंत्री)



अध्यक्ष

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

संरक्षक की कलम से



(डॉ. अनिल कुमार जैन)

पीएनजीआरबी की गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' के षष्टम संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष, गौरव एवं आत्मीय संतोष की अनुभूति हो रही है।

भारत मूलतः संस्कृति-प्रधान देश है। इस देश में अनेक संप्रदाय, भाषाएं और संस्कृतियां है। हमारे देश में अनेकों विविधता होते हुए भी उनमें एकतत्व के दर्शन होते है। एकतत्व के दर्शन जिस भाषा के माध्यम से परिलक्षित होते है, वह भाषा 'हिंदी' है। यह एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसने समस्त भारतीय जनमानस को एकता के सूत्र में परस्पर जोड़ा है। इस भाषा ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही कारण रहा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्मात्री सभा द्वारा दिनांक 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया तथा 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के लागू होने के साथ ही संविधान की धारा 343 के अनुसार 'हिंदी' भारत संघ की राजभाषा बनी। तब से अब तक हिंदी ने भाषा और राजभाषा के रूप में एक लंबी यात्रा तय की है।

हिंदी एक सशक्त, संपन्न और समृद्ध भाषा है। यह भारत की जनभाषा है, संपर्क भाषा है और संसर्ग भाषा है। हिंदी हमारी कार्यालयीन कार्यप्रणाली को सरल बनाती है। ई-कार्यालय, मोबाइल एप्लिकेशन और सोशल मीडिया में हिंदी का उपयोग हमारी कार्यकुशलता तथा पहुँच को और अधिक सुगम एवं प्रभावशाली बना रहा है। इसलिए हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना अधिक से अधिक कार्य मूल रूप से हिंदी में करें और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि 'पीएनजीआरबी दर्पण' का यह संस्करण हम सबको प्रेरित करेगा। मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि हम सब मिलकर पीएनजीआरबी को नई ऊँचाइयों पर ले जाएँगे, साथ ही राजभाषा हिंदी के गौरव को भी अक्षुण्ण रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

सदस्य

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(श्री अंजनी कुमार तिवारी)

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी), भारत सरकार की गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' का षष्टम संस्करण सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष एवं प्रसन्नता हो रही है।

'भाषा' संप्रेषण का सबसे सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है। किसी भाषा को कोई सरकार स्थापित नहीं करती, बल्कि जनसामान्य के निरंतर प्रयोग और व्यवहार में उसके समावेश से वह भाषा अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त करती है। हिंदी भाषा की वास्तविक शक्ति उसके विशाल भाषायी समुदाय में निहित है। हिंदी न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी अपना परचम फहरा रही है। हमारे देश में विविध समुदायों, संस्कृतियों को हिंदी ने परस्पर एक दूसरे से जोड़ा है और उनकी कला, इतिहास और साहित्य को प्रभावित किया है। हिंदी अगर भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है तो पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' इस संस्कृति को परिवर्धित और परिपुष्ट करने का माध्यम बनेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह पत्रिका केवल हमारी रचनात्मक और सृजनात्मकता अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैं, बल्कि कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक उपयोग को प्रोत्साहित करने का सशक्त माध्यम भी है।

मुझे विश्वास है कि हम सभी अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देकर राजभाषा के विकास में अपना सार्थक योगदान दे सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से ही राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और अधिक व्यापक एवं प्रभावी बनाया जा सकता है। इस दिशा में 'पीएनजीआरबी दर्पण' के षष्टम संस्करण का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन और भविष्य के प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वंदे मातरम!

सदस्य

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

सह-संरक्षक की कलम से



(श्री जयंत नारायण दास)

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के षष्ठम संस्करण का प्रकाशन हो रहा है, यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

भारत विविध भाषाओं, बोलियों, परंपराओं और संस्कृतियों का देश है। यही हमारी भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता, हमारी विशिष्ट पहचान और हमारी शक्ति है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की समृद्ध और गौरवशाली परंपरा में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी ने सदियों से देश के विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के मध्य भावों, विचारों और अनुभूतियों के आदान-प्रदान में सेतु की भूमिका निभाई है। इसकी सहजता, व्यापकता और आत्मीयता में भारत की अनेक भाषाओं एवं बोलियों की भाव-संपदा का सुंदर समावेश दिखाई देता है।

"पीएनजीआरबी दर्पण" इसी भाषाई एवं सांस्कृतिक समन्वय की भावना को मूर्त करने वाला एक सार्थक प्रयास है। जिस प्रकार विभिन्न नदियाँ अपनी स्वतंत्र पहचान एवं विशिष्टता बनाए रखते हुए एक व्यापक धारा का निर्माण करती हैं, उसी प्रकार इस पत्रिका में विभिन्न विचार, अनुभव, संवेदनाएँ और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ एक साझा मंच पर संगमित होती हैं। यह पत्रिका हमारे कार्मिकों को हिंदी में सृजन एवं अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनके भीतर निहित साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को पहचानने और उसे सामने लाने का अवसर भी प्रदान करती है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल कार्यालयीन दायित्वों के निर्वहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे संवैधानिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय एकात्मता और सांस्कृतिक चेतना से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक, सहज एवं प्रभावी प्रयोग न केवल कार्य-व्यवहार को सरल, सुगम एवं सुबोध बनाता है, बल्कि अधिकारियों एवं कार्मिकों के आत्मविश्वास, सहभागिता और कार्यकुशलता को भी सुदृढ़ता प्रदान करता है।

मुझे आशा है कि "पीएनजीआरबी दर्पण" का यह षष्ठम संस्करण भी ज्ञान, विचार, साहित्य, संस्कृति और सृजनात्मकता का सुंदर संगम प्रस्तुत करेगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे अधिकारियों एवं कार्मिकों के उत्साह एवं प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करेगा। मेरी यह भी कामना है, कि यह पत्रिका निरंतर नए आयाम स्थापित करें, सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करें और कार्यालय में हिंदी के सहज एवं प्रभावी प्रयोग की भावना को और अधिक सशक्त बनाए।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

सचिव

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

संदेश



(श्री अंजन कुमार मिश्रा)

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड, भारत सरकार की गृह पत्रिका "पीएनजीआरबी दर्पण" के षष्ठम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत एक बहु-भाषी और बहु-संस्कृति सम्पन्न देश है। अनेक बोलियों एवं अनेक संस्कृतियों के बीच हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता के दिनों से सारे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। इसलिए संविधान सभा ने दिनांक 24 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। फलस्वरूप हिंदी संघ की राजभाषा दिनांक 26 जनवरी, 1950 से बनी। 'अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा हिंदी होगी और लिपि देवनागरी होगी, अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा'। अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए है।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन प्रावधानों के माध्यम से केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा हिंदी और अंग्रेजी के प्रयोग से संबंधित व्यावहारिक व्यवस्थाओं को सुदृढ़ आधार मिला। वर्तमान में राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व तक सीमित न रहकर प्रशासनिक कार्यों, जनसंपर्क, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों तथा विभिन्न संस्थागत गतिविधियों में निरंतर विस्तार पा रहा है।

राजभाषा का वास्तविक उद्देश्य तभी सार्थक होगा, जब हिंदी कार्यालयीन कार्यों की भाषा बनने के साथ-साथ सहज अभिव्यक्ति, रचनात्मकता और ज्ञान-विनिमय की भाषा भी बनें। इस दृष्टि से गृह पत्रिकाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। गृह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचार, अनुभव, रचनात्मक प्रतिभा, साहित्यिक अभिरुचि तथा संस्थागत उपलब्धियों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही यह कार्यालय में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करने और कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का प्रभावी मंच भी है।

'पीएनजीआरबी दर्पण' का षष्ठम संस्करण इसी भावना को आगे बढ़ाने वाला सराहनीय प्रयास है। यह पत्रिका पीएनजीआरबी के कार्यकलापों, उपलब्धियों और संस्थागत गतिविधियों के साथ-साथ अधिकारियों एवं कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी एक मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका कार्यालय में आपसी संवाद और आत्मीयता को बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी के प्रति रुचि और अपनत्व की भावना को भी सुदृढ़ता प्रदान करती हैं। निस्संदेह, इस प्रकार के प्रयास राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को गति प्रदान करते हैं और कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करते हैं।

इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए मैं संपादक मंडल की पूरी टीम, पीएनजीआरबी के अधिकारियों एवं कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

मुख्य सतर्कता अधिकारी की कलम से



(श्री रजनेश सिंह, आईआरएसएमई)

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड की गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' के षष्ठम संस्करण को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष, गौरव एवं आत्मीय संतोष की अनुभूति हो रही है।

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह हमारी संस्कृति, जीवन-मूल्यों, परंपराओं और सामूहिक पहचान की अभिव्यक्ति भी होती है। भारत की समृद्ध भाषाई विविधता में हिंदी का विशिष्ट स्थान है। संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी ने अपनी सरलता, सहजता, व्यापक स्वीकार्यता और अभिव्यक्ति की सामर्थ्य के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों के बीच संवाद एवं संपर्क के एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है।

हिंदी केवल साहित्य और शासकीय कार्यों की भाषा नहीं है, बल्कि यह करोड़ों भारतीयों के दैनिक जीवन, व्यवहार और भावनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। हिंदी की वास्तविक शक्ति इसकी समावेशी प्रकृति में निहित है, जो भारत की विभिन्न भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों और परंपराओं को साथ लेकर चलती है। हमारी भाषाई विविधता हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक समृद्धि और राष्ट्रीय एकता की महत्वपूर्ण आधारशिला है।

पंडित मदन मोहन मालवीय ने अत्यंत सारगर्भित शब्दों में कहा था— "हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।" यह विचार आज भी उतना ही प्रासंगिक है। सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का निरंतर बढ़ता प्रयोग इसकी जीवंतता, व्यापकता और बदलते समय के साथ स्वयं को ढालने की क्षमता को दर्शाता है।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में हम राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मौलिक लेखन और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी प्रेरित करते रहे हैं। 'पीएनजीआरबी दर्पण' इसी प्रयास का एक सशक्त माध्यम है। यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों को अपने विचारों, अनुभवों, रचनात्मक प्रतिभा, ज्ञान और दृष्टिकोण को साझा करने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करती है। साथ ही, यह संगठन में सीखने, संवाद, सृजनात्मकता और परस्पर सहभागिता की संस्कृति को भी प्रोत्साहित करती है। इस गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता का भी परिचायक है। मुझे विश्वास है कि 'पीएनजीआरबी दर्पण' आने वाले समय में भी एक ऐसे जीवंत मंच के रूप में विकसित होती रहेगी, जो न केवल हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करे, बल्कि संगठन के भीतर संवाद, सौहार्द और सहभागिता के भाव को भी और सुदृढ़ बनाए।

मैं पीएनजीआरबी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस प्रयास में पूरे उत्साह के साथ सहभागी बनें और अपने दैनिक शासकीय कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को अपनाएँ। आइए, हम सभी अपनी भाषाई विरासत के प्रति सम्मान और गौरव की भावना को सुदृढ़ करते हुए हिंदी के प्रभावी एवं सार्थक प्रयोग के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, अखंडता, समावेशिता और आत्मनिर्भरता के मूल्यों को और मजबूत करने में अपना योगदान दें।

संपादकीय

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड

निदेशक (प्रशासन प्रभाग एवं मानव संसाधन)



(श्री मुक्तिकाम फुकन)

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी), भारत सरकार की गृह पत्रिका 'पीएनजीआरबी दर्पण' के षष्ठम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल कार्यालयीन गतिविधियों, उपलब्धियों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों का सशक्त माध्यम है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल है।

भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है। यहाँ विभिन्न भाषाएँ, बोलियाँ, संस्कृतियाँ, परंपराएँ, रीति-रिवाज और जीवन-पद्धतियाँ सदियों से एक साथ विकसित होती रही हैं। इस बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत के बीच हिंदी भाषा ने संपर्क और संवाद की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को एक-दूसरे से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी हिंदी ने जन-जन तक विचारों और राष्ट्रीय चेतना को पहुँचाने में प्रभावी माध्यम का कार्य किया। इस प्रकार हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की सामासिक संस्कृति, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकात्मता की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है।

स्वतंत्र राष्ट्र, अपना संविधान, राष्ट्रध्वज, राजचिह्न, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय गीत और राजभाषा—ये सभी शब्द हमारे भीतर गौरव, आत्मसम्मान और राष्ट्रीय चेतना की भावना जागृत करते हैं। ये हमारी राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुदृढ़ बनाने में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक, सहज, सरल और प्रभावी प्रयोग हो। हिंदी का प्रयोग किसी भाषा के प्रति प्रतिस्पर्धा या विरोध का विषय न होकर भारतीय भाषाओं के बीच सहयोग, समन्वय और परस्पर सम्मान की भावना को मजबूत करने का माध्यम होना चाहिए।

आज के डिजिटल युग में हिंदी के समक्ष अवसरों का एक विस्तृत संसार उपलब्ध है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संचार और आधुनिक तकनीकी माध्यमों के विकास के साथ हिंदी का प्रयोग नए क्षेत्रों में निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे समय में यह आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी को सरल, सुबोध, व्यावहारिक और आधुनिक तकनीकी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाते हुए कार्यालयीन कार्यों में अपनाया जाए। इससे न केवल राजभाषा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति होगी, बल्कि प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता, सहजता और प्रभावशीलता भी बढ़ेगी।

मेरा विश्वास है कि 'पीएनजीआरबी दर्पण' का यह संस्करण राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने, कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने तथा कार्यालय में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरणा प्रदान करने में सफल होगा। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रति सम्मान और प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा मिलेगी तथा इसके सकारात्मक परिणाम भविष्य में भी देखने को मिलेंगे। मैं संपादक मंडल, वरिष्ठ अधिकारियों तथा समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप पत्रिका को और अधिक उपयोगी, ज्ञानवर्धक, समसामयिक एवं आकर्षक बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें निरंतर अवगत कराते रहेंगे।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वन्दे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।। 3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदय़े तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ।। 4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।। 5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 6।।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड के अध्यक्ष, डॉ. अनिल कुमार जैन का साक्षात्कार

प्रस्तुति - डॉ. सुनीता



प्रश्न 1. भारत के ऊर्जा मिश्रण में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी 2030 तक बढ़ाने का लक्ष्य कितना संभव है और इसके कार्यान्वयन में सबसे बड़ी व्यवधान क्या है?

उत्तर: भारत के ऊर्जा मिश्रण में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी बढ़ाने का लक्ष्य 2030 तक संभव है, किंतु यह चुनौतीपरक है। प्राकृतिक गैस स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है तथा यह कोयले और तेल पर निर्भरता घटाने में भी सहायक हो सकती है। इसके लिए निवेश, गैस पाइपलाइन, वितरण अवसंरचना और प्रभावी नियामकीय की व्यवस्था अति आवश्यक है। इसके कार्यान्वयन की सबसे बड़ी समस्या ऊर्जा संक्रमण और सामर्थ्य के बीच संतुलन बनाए रखने की है। भारत में व्यापक निम्न-आय जनसंख्या होने के कारण महंगी 'ऊर्जा' दबाव बढ़ा सकती है। अतः सुदृढ़ नियामकीय, निजी निवेश, अवसंरचना विस्तार, प्रतिस्पर्धी बाजार और उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा से यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न 2. यह माना जाता है कि सीएनजी अपेक्षाकृत स्वच्छ ईंधन है, लेकिन कई शहरों में सीएनजी स्टेशनों पर लंबी कतारें दिखाई देती हैं। क्या देश में सीएनजी इंफ्रास्ट्रक्चर मांग के अनुरूप नहीं है?

उत्तर: सीएनजी अपेक्षाकृत स्वच्छ ईंधन है और भारत में इसके उपयोग का तेजी से विस्तार हुआ है। वर्तमान में पीएनजीआरबी ने सीजीडी नेटवर्क का विस्तार कुछ शहरों से बढ़ाकर संपूर्ण देशभर में करने का सार्थक प्रयास किया है तथा 34,200 किमी से अधिक गैस पाइपलाइनों को अधिकृत किया है। इससे यह उजागर होता है कि देश में सीएनजी इंफ्रास्ट्रक्चर का व्यापक विकास हुआ है। हालांकि, कुछ शहरों में लंबी कतारें यह संकेत देती हैं कि बढ़ती मांग के अनुपात में स्टेशन क्षमता, स्थानीय वितरण नेटवर्क और आपूर्ति व्यवस्था को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। यह समस्या पूर्णतः इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी के कारण नहीं है, बल्कि मांग और उपलब्ध क्षमता के मध्य स्थानीय असंतुलन की वजह से है। भविष्य में नियोजित अवसंरचना विस्तार के माध्यम से इसे कम किया जा सकता है।

प्रश्न 3. नगर गैस वितरण नेटवर्क का विस्तार छोटे शहरों तक हो रहा है, लेकिन क्या इसके लिए कंपनियों को दिए गए लाइसेंस और उनकी वास्तविक सेवा-क्षमता के बीच कोई अंतर है?

उत्तर: कुछ स्थितियों में, लाइसेंस प्राप्त क्षेत्र और वास्तविक सेवा-क्षमता के बीच अंतर हो सकता है। किसी कंपनी को सीजीडी लाइसेंस देना केवल एक क्षेत्र सौंपना नहीं होता

है, बल्कि वहाँ समयबद्ध तरीके से गैस का बुनियादी ढाँचा विकसित करने का उत्तरदायिकत्व होता है। छोटे शहरों में सीमित मांग, शुरुआती निवेश, पाइपलाइन बिछाने में लगने वाला समय और अन्य स्थानीय चुनौतियाँ सेवा-विस्तार की गति को प्रभावित कर सकती हैं। पीएनजीआरबी कंपनियों के निर्धारित कार्यों और लक्ष्यों की निरंतर निगरानी करता है, ताकि लाइसेंस का लाभ वास्तविक उपभोक्ताओं तक पहुँच सकें। इसलिए सीजीडी की सफलता केवल लाइसेंसों की संख्या से नहीं, बल्कि पाइपलाइन नेटवर्क, पीएनजी कनेक्शन, सीएनजी सुविधाओं और सुरक्षित एवं विश्वसनीय गैस सेवा की वास्तविक पहुँच से निर्धारित होती है।

प्रश्न 4. पाइपलाइन और गैस वितरण नेटवर्क के विस्तार में दुर्घटनाओं और लीकेज का ज़ोखिम रहता है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से क्या मौजूद नियम पर्याप्त हैं?

उत्तर: पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) पाइपलाइन तथा गैस वितरण नेटवर्क की सुरक्षा के लिए तकनीकी, सुरक्षा और सेवा मानकों से संबंधित आवश्यक नियम, विनियम एवं प्रक्रियाओं का निर्माण करता है। इनका उद्देश्य सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करना, मानव निर्मित दुर्घटनाओं सहित समस्त प्रकार की दुर्घटनाओं की रोकथाम करना और गैस रिसाव के जोखिम को कम करना है।

हालाँकि, केवल नियम-विनियम बनाना पर्याप्त नहीं है। पाइपलाइन और गैस वितरण नेटवर्क में दुर्घटनाएँ तथा लीकेज तकनीकी खामियों के साथ-साथ मानवीय त्रुटियों जैसे गलत संचालन, तृतीय पक्ष अवैध खुदाई, रखरखाव में लापरवाही, सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन न करना, अपर्याप्त प्रशिक्षण अथवा आपातकालीन स्थिति में गलत निर्णय लेने के कारण भी हो सकते हैं। इसलिए सुरक्षा व्यवस्था के कार्यान्वयन के लिए कर्मचारियों का नियमित प्रशिक्षण, मानक संचालन प्रक्रियाओं का सख्ती से पालन, कार्यों का पर्यवेक्षण, सुरक्षा ऑडिट और आपातकालीन अभ्यास भी आवश्यक हैं।

बोर्ड का दृष्टिकोण केवल नियमों के अनुपालन तक सीमित नहीं है, बल्कि गैस की हानि और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए सुरक्षा तथा कार्यक्षमता में निरंतर सुधार करना भी है। इसके लिए नियमित निरीक्षण, रिसाव का शीघ्र पता लगाने वाली आधुनिक तकनीकों का उपयोग, जोखिम-आधारित निगरानी और घटनाओं से प्राप्त सीख के आधार पर सुधार आवश्यक हैं।

अतः मौजूदा नियम सुरक्षा के लिए एक आवश्यक आधार प्रदान करते हैं, लेकिन उनकी पर्याप्तता का वास्तविक निर्धारण प्रभावी क्रियान्वयन, मानवीय त्रुटियों की रोकथाम, नियमित निगरानी और बदलती परिस्थितियों के अनुसार मानकों की समीक्षापर निर्भर करता है। पीएनजीआरबी द्वारा समय-समय पर सुरक्षा मानकों की समीक्षा एवं सुधार तथा उनके कार्यान्वयन की निगरानी से पाइपलाइन और गैस वितरण नेटवर्क को अधिक सुरक्षित बनाया जा सकता है।

प्रश्न 5. भारत 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य लेकर चल रहा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में पीएनजीआरबी की भूमिका क्या रहेगी और इसके लिए आगामी पाँच वर्षों की शीर्ष प्राथमिकताएँ क्या होंगी?

उत्तर: भारत के 2070 तक नेट जीरो लक्ष्य में पीएनजीआरबी की भूमिका स्वच्छ, सुरक्षित और कम-कार्बन ऊर्जा व्यवस्था को बढ़ावा देने की होगी। आगामी पाँच वर्षों में हमारी प्रमुख प्राथमिकताएँ प्राकृतिक गैस के उपयोग और वितरण का विस्तार, गैस नेटवर्क में होने वाली हानि को कम करना, संपीड़ित जैव गैस और हाइड्रोजन जैसे स्वच्छ ईंधनों को बढ़ावा देना तथा पाइपलाइन अवसंरचना को भविष्य के ईंधनों के अनुकूल बनाने की होंगी। इसके साथ ही, तकनीक और आंकड़ों के आधार पर निगरानी, ऊर्जा दक्षता, पर्यावरण संरक्षण और उपभोक्ता हितों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। हमारा लक्ष्य एक ऐसा प्रभावी नियामक ढाँचा विकसित करना है, जो निवेश, नवाचार और स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन को गति प्रदान करें और यह सुनिश्चित करें कि इस परिवर्तन का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचे तथा कोई भी पीछे न छूटे।

प्रश्न 6. यदि आपको भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र में अगले पाँच वर्षों में एक बड़ा सुधार करने का अवसर मिलें, तो आप क्या सुधार करना चाहेगें?

उत्तर: यदि मुझे अगले पाँच वर्षों में भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्र में सुधार एवं बढ़ोत्तरी को लेकर कार्य करने का अवसर मिलें, तो मैं जन कल्याण की भावना से कार्य करते हुए एक सरल, पारदर्शी और मजबूत नियामक व्यवस्था स्थापित करने को प्राथमिकता दूँगा। मेरा लक्ष्य एक ऐसे नियामक ढाँचे का निर्माण करना होगा, जिसमें विनियम-नियम स्पष्ट हों, समय पर निर्णय लिये जाएं तथा सभी हितधारकों व आवाम के साथ एक समान व्यवहार हों। इससे निजी और सरकारी क्षेत्र में निवेश बढ़ेगा, प्रतिस्पर्धा को सुदृढ़ता प्राप्त होगी तथा गैस पाइपलाइन और नगर गैस नेटवर्क का तेजी से विस्तार होगा। इसका प्रत्यक्ष लाभ उपभोक्ताओं को किफ़ायती, सुरक्षित और स्वच्छ ऊर्जा प्राप्ति के रूप में मिलेगा। यह व्यवस्था हाइड्रोजन जैसी नई ऊर्जा के विकास और भारत की ऊर्जा सुरक्षा को भी सुदृढ़ता प्रदान करेगी।

सदस्य - (वाणिज्यिक)
श्री अंजनी कुमार तिवारी



जीत कहीं और हार कहीं
जीत कहीं और हार कहीं, पर मेरा अंदाज वहीं,
कभी समझिए समझ समझ कर, समझाने की बात नहीं,
जीत कहीं और हार कहीं, पर मेरा अंदाज वहीं

खुली हवा है, घुटन वहीं है, ऐसी कोई बात नहीं,
कहां बताऊँ, किसी सुनाऊँ, परदे में कुछ बात नहीं,
जीत कहीं और हार कहीं, पर मेरा अंदाज वहीं

अभी समुंदर सूख चुका है, मेघों की तैयारी है
बरसाती मेढ़क भी उछले, बादल इनपे भारी हैं,
मतवाले मोरो से कह दो, नाचन की तैयारी है,
जीत कहीं और हार कहीं, पर मेरा अंदाज वहीं

बहुत हुआ अब चलो कहे अब, फिर सुनने का मिज़ाज नहीं,
यहां वीराना सूख चुका है, पत्तों में हरियाली है
चलो किनारा करो यहां से, ऐसी कोई बात नहीं
जीत कहीं और हार कहीं, पर मेरा अंदाज वहीं

राष्ट्रीय अखण्डता, सांस्कृतिक एकता तथा आपसी सद्भाव
के लिए केवल एक ही सम्पर्क भाषा है वह है हिंदी
- फादर कामिल बुल्के

पीएनजीआरबी ने 6 अक्टूबर 2025 को मनाया अपना 19वाँ स्थापना दिवस

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने 6 अक्टूबर, 2025 को डॉ. अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में अपना 19वां स्थापना दिवस मनाया। यह आयोजन भारत के तेल एवं गैस क्षेत्र में लगभग दो दशकों की नियामकीय उत्कृष्टता का प्रतीक रहा, जिसमें श्री हरदीप सिंह पुरी, माननीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री; श्री पंकज जैन, सचिव पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार; डॉ. अरविंद पंगढ़िया, नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष, 16वां वित्त आयोग; द्वारा विचारोत्तेजक सत्र प्रस्तुत किए गए।



दिनांक 6 अक्टूबर, 2025 को आयोजित 19वें स्थापना दिवस की झलकियां

फोबोफोबिया! फोबियाओं की रोचक दुनिया



श्री मुक्तिकाम फुकन
निदेशक (प्रशासन प्रभाग एवं मानव संसाधन)

(यह लेख मूल रूप से वर्ष 2012 में लिखा गया था और ऑयल के दिसांग स्पोर्ट्स क्लब के वार्षिक खेल समारोह की स्मारिका में प्रकाशित हुआ था।)

यह सब 20 दिसंबर 2012 से शुरू हुआ। मैं अपने और अपने परिवार के सामने आने वाली संभावित **"प्रलय" (दुनिया के अंत)** के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक ध्यान आया कि 21 दिसंबर 2012 का दिन शुक्रवार था और इतिहास में शुक्रवार को कई बार अशुभ संकेतों से जोड़ा जाता रहा है, लेकिन यह तो सामान्य शुक्रवार था, **"शुक्रवार की 13 तारीख"** भी नहीं थी।

फिर सवाल उठा कि माया सभ्यता के कैलेंडर में सदियों पहले दर्ज इस भविष्यवाणी से पूरी दुनिया इतनी डर क्यों गई थी? मुझे लगा कि या तो 21 दिसंबर 2012 से डरने वाले लोगों को किसी खास तरह का फोबिया था या फिर माया कैलेंडर बनाने वाले व्यक्ति को।

यहीं से मेरी जिज्ञासा बढ़ी। खोजबीन करने पर पता चला कि 2012 में घबराने वाले लोगों के डर को **"फ्रिगेट्रीस्काइडेकाफोबिया"** कहा जाता है, जबकि शुक्रवार के डर को **"फ्रिग्गाफोबिया"** कहा जाता है। वहीं, केवल शुक्रवार की 13 तारीख से डरने को **"पैरास्केविडेकाट्रियाफोबिया"** कहते हैं।

वाह! यह तो सचमुच बहुत दिलचस्प था।

दरअसल, फोबिया का यह विषय मुझे इतना रोचक लगा कि मैंने इसके बारे में और जानकारी जुटाने का फैसला किया। इंटरनेट के इस दौर में, जहाँ एक क्लिक पर जानकारी मिल जाती है, मैंने फोबियाओं की इस अनोखी दुनिया के बारे में खोजना शुरू किया। साथ ही, मैंने यह भी जानने की कोशिश की कि कहीं मेरे या मेरे प्रियजनों में भी कोई अनजाना फोबिया तो नहीं है।

मुझे हमेशा लगता था कि मेरा छोटा बच्चा बिजली की कड़क और गरज़ से बहुत डरता है। खोजने पर पता चला कि इसे भी एक नाम दिया गया है—**"ऐस्ट्राफोबिया"**, यानी बिजली और गरज का डर।

लगभग हर बच्चा कार में घूमना पसंद करता है। लेकिन क्या किसी को कार में बैठने से भी डर लग सकता है? हवाई यात्रा से डरने वाले लोगों के बारे में तो सुना था, लेकिन कार में बैठने के डर ने मुझे हैरान कर दिया। इसे **"अमाक्सोफोबिया"** कहते हैं।

और **"एगोराफोबिया"** क्या है? यदि आपका सपना बड़ा नेता बनने का है, तो पहले यह देख लें कि कहीं आपको खुली जगहों या भीड़ से डर तो नहीं लगता। खुली जगहों या भीड़ से डर को एगोराफोबिया कहा जाता है।

एक और हैरान करने वाली बात! फूल हर मौके की शोभा बढ़ाते हैं — चाहे खुशी का अवसर हों या दुख का। लेकिन अगर किसी को **"एंथोफोबिया"** है, तो उसे फूल देने से बचें, क्योंकि एंथोफोबिया का मतलब फूलों से डर है।

एक सच्ची घटना

एक प्रसिद्ध प्रबंधन विशेषज्ञ ने एक सफल मार्केटिंग कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी

(सीईओ) का पद संभाला। पद संभालने के पहले ही दिन उन्होंने अपने निजी शौचालय के सभी शीशे हटाने का आदेश दे दिया। बहुत कम लोगों को इसका कारण पता था।

समय बीतता गया। वे ज्यादातर समय अपने कमरे में ही रहते और बाहर बहुत कम निकलते। कंपनी की सभी बैठकें भी उनके कमरे में ही होती थीं। उनके इस अजीब व्यवहार से सभी हैरान थे।

एक दिन कंपनी के बोर्ड रूम में एक महत्वपूर्ण बैठक होनी थी। बैठक से एक दिन पहले वे तैयारी देखने के लिए बोर्ड रूम में गए। वहाँ लगे सुंदर और पुराने शीशों को देखकर उन्होंने रातोंरात सभी शीशे हटवा दिए।

दुर्भाग्य से, ये शीशे कंपनी के मालिक ने बहुत पसंद (मन) से खरीदे थे। अगले दिन जब मालिक ने देखा कि बहुमूल्य शीशे गायब हैं, तो उन्होंने तुरंत सीईओ को नौकरी से निकाल दिया।

बेचारे सीईओ की नौकरी शीशों की वजह से चली गई। लेकिन वे भी क्या करते? वे **"कैटोप्ट्रोफोबिया",** यानी शीशों के डर से पीड़ित थे।

मानसून हमारे कृषि प्रधान देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बारिश की फुहारें, मिट्टी की सोंधी-सोंधी खुशबू और बूंदों की आवाज़ लगभग सभी को आनंद देती है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें बारिश बिल्कुल पसंद नहीं होती। उन्हें **"ओम्ब्रोफोबिया",** यानी बारिश का डर होता है।

और **"चियोनोफोबिया"** का मतलब है बर्फ से डर।

मुझे आज भी दसवीं की परीक्षा से पहले के दिन याद हैं। उन दिनों घर में सबसे बड़ी चर्चा यही होती थी कि मुझे चौथे विषय के रूप में उच्च गणित लेना चाहिए या जीवविज्ञान।

लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा कि कहीं मुझे जानवरों, पौधों, पेड़ों, कुत्तों, पक्षियों, मकड़ियों, बैक्टीरिया, कीटाणुओं या सबसे जरूरी — संख्याओं से ही डर तो नहीं लगता!

कुछ उदाहरण देखिए—

- Zoophobia – जानवरों का डर।
- Botanophobia – पौधों का डर।
- Dendrophobia – पेड़ों का डर।
- Cynophobia – कुत्तों का डर।
- Ornithophobia – पक्षियों का डर।
- Arachnophobia – मकड़ियों का डर।
- Bacteriophobia – बैक्टीरिया का डर।
- Verminophobia – कीटाणुओं का डर।
- Arithmophobia – संख्याओं का डर।

फिर आते हैं किशोरावस्था और युवावस्था के सुनहरे दिन — उत्साह, प्रेम, रोमांस और जीवनभर साथ रहने के वादे...

लेकिन अगर किसी को **एंड्रोफोबिया** (पुरुषों का डर), **गाइनोफोबिया** (महिलाओं का डर) या **गेमोफोबिया** (विवाह का डर) हो, तो इन सबका क्या होगा?

और अगर किसी को **वेनुस्ट्राफोबिया,** यानी सुंदर महिलाओं का डर, हो जाए, तो **"Men are from Mars, Women are from Venus"** वाली बात सच लगने लगेगी।

कहावत है—**"रोज़ एक सेब खाइए, डॉक्टर को दूर भगाइए।"**

यह सलाह खास तौर पर उन लोगों के लिए उपयोगी हो सकती है जिन्हें इएट्रोफोबिया, यानी डॉक्टरों का डर, हो।

इसी तरह—

- Hypochondria – बीमारी का डर।
- Hemophobia – रक्त का डर।

तो सेब खाते रहिए और डॉक्टर से दूर रहिए!

स्वाद लेकर भोजन कीजिए, लेकिन अपना वजन नियंत्रित रखना भी जरूरी है। कहीं **ओबेसोफोबिया**, यानी मोटा होने का डर, आपको परेशान न करने लगे।

अब एक और रोचक फोबिया।

कोइनोफोबिया वाले लोग आखिर रहते कहाँ होंगे? शायद खुले आसमान के नीचे, क्योंकि **कोइनोफोबिया कमरों का डर है।**

सूर्य प्राचीन समय से ही समय बताने का एक महत्वपूर्ण साधन रहा है और जीवन का आधार भी है। लेकिन कुछ लोग **हेलियोफोबिया**, यानी सूर्य के डर से भी पीड़ित होते हैं।

आज के समय में घड़ी हमारे जीवन का जरूरी हिस्सा है, लेकिन **क्रोनोमेंट्रोफोबिया** से पीड़ित लोगों के लिए घड़ी भी डर का कारण बन सकती है।

अब फोबियाओं की सूची इतनी लंबी है कि उसे पूरा लिखना संभव नहीं है। फिर भी कुछ रोचक फोबिया देखिए—

- Autophobia – अकेले रहने का डर।
- Necrophobia – मृत्यु या मृत शरीर का डर।
- Tachophobia – तेज गति का डर।
- Leukophobia – सफेद रंग का डर।
- Melanophobia – काले रंग का डर।
- Chromophobia – रंगों का डर।
- Glossophobia – लोगों के सामने बोलने का डर।
- Mageirocophobia – खाना पकाने का डर।
- Ailurophobia (Elurophobia) – बिल्लियों का डर।
- Papyrophobia – कागज़ का डर।
- Ablutophobia – नहाने या धोने का डर।
- Dromophobia – सड़क पार करने का डर।
- Cyberphobia – कंप्यूटर का डर।
- Equinophobia – घोड़ों का डर।
- Bibliophobia – किताबों का डर।
- Noctiphobia – रात का डर।

- Nosocomephobia – अस्पतालों का डर।
- Nyctophobia – अंधेरे का डर।
- Pteromerhanophobia – हवाई यात्रा का डर।
- Scolionophobia – स्कूल जाने का डर।
- Selenophobia – चंद्रमा का डर।
- Pyrophobia – आग का डर।

अब तो मैं भी इन अजीब-अजीब नामों की इतनी लंबी सूची सुनाकर खुद को किसी विदूषक (क्लाउन) जैसा महसूस करने लगा हूँ।

लेकिन सच कहूँ तो विदूषक बनना भी आसान नहीं है। लोग उन्हें देखकर हँसते और खुश होते हैं। लेकिन अगर किसी को **कौलरोफोबिया,** यानी विदूषकों का डर, हो तो उसके लिए यह बिल्कुल खुशी की बात नहीं होगी।

फोबियाओं की यह खोज अभी जारी है। मैंने सोचा कि इस अनोखी दुनिया के बारे में मिली कुछ रोचक बातें आपके साथ भी साझा करूँ।

लेकिन अंत में एक जरूरी चेतावनी—

इन फोबियाओं के बारे में इतना भी मत पढ़िए कि खुद ही उनसे डरने लगें।

क्योंकि अगर ऐसा हुआ, तो आपको हो जाएगा—

“फोबोफोबिया” — यानी फोबियाओं का ही डर।

टिप्पणी: 2012 में तथाकथित "प्रलय" की जो भविष्यवाणी की गई थी, उसे व्यापक रूप से खारिज किया जा चुका था, जिसके अनुसार 21 दिसंबर 2012 को माया सभ्यता के कैलेंडर का एक चक्र समाप्त होने के साथ दुनिया का अंत होने वाला था। कभी-कभी इसे भूलवश 20 दिसंबर कहा जाता है, जबकि यह भविष्यवाणी सार्वभौमिक रूप से 21 दिसंबर 2012 से ही संबंधित थी।

स्वच्छता, शुचिता एवं सदाचार - संतुष्ट एवं सफल जीवन के आधार



श्री घन श्याम
प्रधान सलाहकार
(रणनीतिक योजना प्रभाग)

स्वच्छता, शुचिता एवं सदाचार केवल तीन शब्द नहीं, बल्कि अपने आप में एक अविरल और निर्मल विचारगंगा हैं, जिनके मर्म को गहनता से समझने की आवश्यकता है।

स्वच्छता को ही लें; शीर्ष नेतृत्व की पहल पर विगत एक दशक से हम 'स्वच्छता दिवस' को एक राष्ट्रीय मिशन के रूप में मनाते आ रहे हैं। परंतु क्या हम इसके वास्तविक अर्थ को समझ पाए हैं? क्या स्वच्छता का अर्थ केवल इर्द-गिर्द बिखरे कचरे को समेटना ही है या इसका कोई व्यापक संदेश भी है? समग्र स्वच्छता मिशन का उद्देश्य केवल भौतिक गंदगी का सफाया करना ही नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार, असमानता, अहंकार तथा पारस्परिक द्वेष जैसी उन मानसिक विकृतियों को दूर करना भी है, जो अनेकों सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत कहे जाने वाले लोगों के मन-मस्तिष्क में भी पसरी हुई हैं।

भौतिक गंदगी को तो झाड़ू से साफ किया जा सकता है, परंतु इसे स्थायी बनाने के लिए आदतों में सुधार करना आवश्यक है। केवल झाड़ू थामकर या वृक्षारोपण की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कर देने से ही बदलाव नहीं आता; जब तक कि व्यवस्था बदलने की सोच हमारी प्रतिज्ञा न बन जाए। जिस प्रकार जिद्दी दागों को छुड़ाने के लिए कठोर परिश्रम और उपयुक्त साधनों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार समाज और मन में जमी गहरी बुराइयों को मिटाने के लिए कड़े संकल्प और दृढ आचरण की आवश्यकता होती है। मन में कलुषता लिए बैठा व्यक्ति चाहे कितना ही बाह्य आडंबर या पूजा-पाठ कर लें, उसकी साधना निष्फल ही रहती है।

स्वच्छता का वास्तविक महत्व शुचिता के साथ ही है। शुचिता का समग्र अर्थ विचार, आचरण और कार्यप्रणाली की पवित्रता व ईमानदारी है। यह तभी संभव है जब मन, वचन और कर्म में एकरूपता हों। कार्यों में पारदर्शिता, निष्पक्षता, उत्तरदायित्व, नियमों का पालन और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को प्राथमिकता देना ही शुचिता को चरितार्थ करता है। स्वच्छता, शुचिता के यही गुण व्यक्ति, संस्था और समाज में पारस्परिक सद्भाव को सुदृढ़ बनाते हैं।

यह दोनों मूल्य सदाचार के अभाव में अधूरे हैं। सदाचार का अर्थ है — नैतिक मूल्यों, मर्यादाओं और मानवीय आदर्शों के अनुरूप जीवन जीना। सत्य, विनम्रता, समयबद्धता, संवेदनशीलता और क्रोध व अहंकार पर नियंत्रण इसके मुख्य स्तंभ हैं। सदाचार व्यक्ति के चरित्र की पहचान है, जो सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण के सुदृढ़ आधार का निर्माण करती है।

निष्कर्ष यही है कि स्वच्छता, शुचिता और सदाचार का सम्मिलन ही एक श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण करते हैं। आइए, इस मिशन को केवल बाह्य रूप में नहीं, बल्कि अपने विचारों और आचरण

में भी पूर्णतः अपनाएं तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें। यहीं एक अच्छे नागरिक के रुप में राष्ट्र की सच्ची सेवा होगी।

आधी शताब्दी की ओर मुड़कर देखते हुए



सुश्री अनुराग गोहेन फुकन
उप-महाप्रबंधक (सीएंडपी)
(ऑयल इंडिया लिमिटेड)

हम लगभग बिना किसी शोर-शराबे के अपने जीवन के पचासवें दशक में प्रवेश कर गए।

इस पड़ाव पर पहुँचकर हमें यह एहसास हुआ कि मृत्यु का सामना करने की संभावना अब बहुत दूर नहीं रह गई है और हमारे पास जो अमूल्य समय शेष है, वह इतना कम है कि उसे अब व्यर्थ की बातों में गंवाया नहीं जा सकता।

हमने देखना शुरू किया कि हमारी मानसिक और शारीरिक फुर्ती तथा शारीरिक शक्ति, निरंतर क्षीण होती जा रही है। जीवन की बढ़ती उम्र की गुणवत्ता अब धीरे-धीरे दवाइयों और बढ़ते खर्चों से अधिक प्रभावित होने लगी थी। हमें अपने अस्तित्व की नश्वरता और उसकी वास्तविकता का पहले से अधिक गहरा बोध होने लगा।

जीवन के इस मुकाम पर आकर हमने जाना कि अकेले रहना वास्तव में सुकूनदायक हो सकता है और एकांत अत्यंत संतोषप्रद होता है। हमने सीखा कि अकेलापन लोगों की कमी से नहीं, बल्कि अनुचित संगति से पैदा होता है। यह भी समझ में आया कि बड़ी भीड़ से मिलने वाला मानसिक सुरक्षा का आभास उस गहरे मानसिक अलगाव की पीड़ा को कम नहीं कर सकता, जो उस भीड़ की परायी संस्कृति से उत्पन्न होती है।

हमने यह भी अनुभव किया कि जीवन में "कम" ही वास्तव में "अधिक" होता है। इसलिए हमने अपने जीवन के हर कोने से अनावश्यक वस्तुओं और बोझ को हटाना शुरू कर दिया। हमें समझ आया कि सादगी अपने आप में एक विशेष शक्ति है। अनावश्यक वस्तुओं और आदतों को त्यागने से केवल समय, धन और स्थान की ही बचत नहीं होती, बल्कि हमारी ऊर्जा और ध्यान भी अधिक सार्थक कार्यों के लिए मुक्त हो जाते हैं।

हम जीवन के उस मोड़ पर पहुँचे जहाँ बाहरी आकर्षण हमें पहले जैसा उत्साहित नहीं करता था। अब हमें किसी वस्तु के बाहरी आवरण की अपेक्षा उसके भीतर की गुणवत्ता और शुद्धता अधिक प्रभावित करने लगी। हमने जाना कि चमक-दमक चाहे जितनी आकर्षक क्यों न हो, वह संपूर्णता का केवल एक छोटा-सा हिस्सा है। बाहरी सजावट कभी भी वास्तविक सुंदरता और गुणवत्ता का स्थान नहीं ले सकती।

धीरे-धीरे हमें यह भी अनुभव हुआ कि केवल हमारे विचारों की दिशा ही नहीं बदली, बल्कि वस्तुओं, रंगों और पसंद की हमारी कसौटी भी बदल गई। अब हम लोकप्रियता की अपेक्षा सुविधा और उपयोगिता को अधिक महत्व देने लगे। हम नए और अनजाने रंगों तथा अनुभवों को अपनाने का साहस करने लगे। हमने अपने पुराने प्रिय रंगों के एकाधिकार को सीमित किया और नए रंगों को अपने जीवन तथा कल्पना को सजाने का अवसर दिया।

हम उस अवस्था तक पहुँच गए जहाँ अपमान, आलोचना या अस्वीकृति पर तत्काल प्रतिक्रिया देना हमने छोड़ दिया। इसके स्थान पर हमने अपने भीतर के घावों को मौन रहकर भरना सीखा। हमें समझ आया कि अपमान और दुर्व्यवहार केवल किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत धारणाएँ हैं और अस्वीकृति अक्सर हमें किसी बेहतर दिशा की ओर ले जाने वाला संकेत होती है।

भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी हम अधिक परिपक्व हुए। हमने अनुभव किया कि जब भीतर के घाव मौन में भर रहे होते हैं, उसी समय हमारे भीतर जागरूकता भी चुपचाप हमें अपने वास्तविक स्वरूप को जानने की ओर प्रेरित कर रही होती है।

हम अपनी भावनाओं, संवेदनाओं, इच्छाओं, आवेगों और प्रवृत्तियों के प्रति पहले से अधिक सजग हुए। आत्मचिंतन और आत्मविश्लेषण के माध्यम से हमने जाना कि हम पूर्ण नहीं हैं; हम अनेक कमियों और बिखराव से भरे हुए हैं। हमारी अपेक्षाएँ, आशाएँ और भय ही प्रायः हमारे दुःख, निराशा और मोहभंग के बीज बन जाते हैं।

हमें यह विचार भी सार्थक लगा कि अज्ञान हर समय सुखद नहीं होता और आत्म-खोज के अध्याय के बिना जीवन की शिक्षा अधूरी रहती है।

इसीलिए हमने अपने आध्यात्मिक सफर को गंभीरता, निरंतरता और भीतर की ओर अग्रसर होकर अपनाया, ताकि दुःख के बोझ से स्वयं को मुक्त कर सकें।

हाँ... यह सच है...

पचास वर्ष की आयु के बाद भी हमारा विकास रुका नहीं था। हम अब भी शांत, सहज और निरंतर सीख रहे थे।

और सीखने की यह यात्रा आज भी समाप्त नहीं हुई है।

(यह मूल लेख का संशोधित संस्करण है, जिसे पूर्व में द हिंदू में प्रकाशित किया गया था।)

(यह मूल लेख का संशोधित संस्करण है, जिसे पूर्व में द हिंदू में प्रकाशित किया गया था।)

सब को हिंदी सीखनी चाहिए,
इसके द्वारा सारे भारत को सुविधा होगी
- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

बस खुद को ये याद दिलाना तुम



श्री प्रदीप तनवर
निदेशक
(तकनीकी प्रभाग)

बस खुद को ये याद दिलाना तुम,
फूलों की तरह खिलना और मुस्कुराना तुम।
जब कभी लगने लगे, सब खाली-खाली है,
मौसम बदलेंगे, कभी बहार तो, कभी पतझड़ है।
ना टूटना, ना रूठना, ना करना कोई बहाना तुम,
चाहे कैसी भी आए जिंदगी में धूप-छांव, मुस्कुराना तुम।
हर सुबह लेकर आए एक नई उम्मीद की किरण,
ना डरना, ना घबराना, कभी ना पछताना तुम।
बारिश सी बिछकर, सावन का संदेशा लाना,
बनकर बहार, हर दिल को सुकून देना।
जिंदगी की नई-नई कोपलें बढ़ाना तुम,
भले ही राहों में कांटों का साया हो।
दुनिया की बंदिशों से कभी न डरना,
याद रखना, कभी ना नम हो जाना तुम।
ओस की बूंदें बनकर पत्तों पर सजना,
हवा के झोंकों के संग हर पल बहना।
ढूँढती रह जाएँ आँखें, ना गुम हो जाना तुम,
कामयाबी के हर ऊंचे शिखर को छूना।
वक़्त बदले या बदले ये पूरी दुनिया,
बहुत कुछ पाने की होड़ में, मत भूल जाना तुम।
फूलों की तरह खिलना और मुस्कुराना तुम,
बस खुद को ये याद दिलाना तुम।

कार्य–जीवन संतुलन : अनुशासन, सेवा और स्वास्थ्य की मेरी यात्रा



लेफ्टिनेंट कमांडर विद्यासागर मेहता
उप-निदेशक
(प्रशासन प्रभाग)

1. कार्य–जीवन संतुलन मेरे लिए केवल एक प्रबंधन का सिद्धांत नहीं, बल्कि बचपन से सीखा हुआ जीवन का संस्कार है। मेरा पालन-पोषण ऐसे परिवार में हुआ, जहाँ मेरे दादा, पिता और चाचाओं ने सीमा सुरक्षा बल (BSF), भारतीय सेना और भारतीय नौसेना में रहकर राष्ट्र की सेवा की। उनकी व्यस्त और चुनौतीपूर्ण दिनचर्या के बावजूद मैंने उन्हें परिवार, स्वास्थ्य और कर्तव्य के बीच अद्भुत संतुलन बनाए रखते हुए देखा। यही अनुभव मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा बना।

2. इन्हीं मूल्यों से प्रेरित होकर मैंने 06 अगस्त 2007 को भारतीय नौसेना में एक कमीशंड अधिकारी के रूप में अपना सैन्य जीवन प्रारम्भ किया। बारह वर्षों की सेवा ने मुझे नेतृत्व, अनुशासन और समय-प्रबंधन के साथ यह भी सिखाया कि व्यस्ततम परिस्थितियों में भी यदि दिनचर्या व्यवस्थित हो, तो कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन सहज रूप से स्थापित किया जा सकता है।

3. सैन्य जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अनुशासन को केवल नियमों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे जीवनशैली का हिस्सा बना देता है। विद्यालय जीवन से ही मेरी रुचि तैराकी में रही और नौसेना में रहते हुए मैंने लंबी दूरी की दौड़ को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाया। प्रतिदिन प्रातः जल्दी उठकर व्यायाम करना, समय पर कार्यालय पहुँचना और पूरे उत्साह के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करना मेरी दिनचर्या बन गई। यही नियमितता मेरे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति सिद्ध हुई।

4. इस संतुलित जीवनशैली का सकारात्मक प्रभाव मेरे व्यक्तित्व और कार्य दोनों पर दिखाई दिया। जहाँ एक ओर कार्यस्थल पर मेरी उत्पादकता और एकाग्रता बढ़ी, वहीं दूसरी ओर मैं अपनी फिटनेस के लक्ष्यों को भी निरंतर प्राप्त करता रहा। इसी अनुशासन के बल पर मैंने 10 किलोमीटर की दौड़ से लेकर 42 किलोमीटर की पूर्ण मैराथन तक अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया और अंततः विश्व की प्रतिष्ठित सहनशक्ति प्रतियोगिताओं में से एक आयरनमैन 70.3 गोवा को सफलतापूर्वक पूरा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। 1.9 किलोमीटर तैराकी, 90 किलोमीटर साइकिलिंग और 21 किलोमीटर दौड़ वाली इस कठिन प्रतियोगिता को आठ घंटे में पूरा करना मेरे लिए केवल एक खेल उपलब्धि नहीं, बल्कि यह विश्वास था कि अनुशासन, निरंतरता और संतुलित जीवनशैली से असंभव प्रतीत होने वाले लक्ष्य भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

5. मैं भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा प्रारम्भ किए गए "फिट इंडिया आंदोलन" का भी विशेष उल्लेख करना चाहूँगा। इस अभियान ने पूरे देश में स्वास्थ्य और फिटनेस के प्रति नई चेतना का संचार किया है तथा यह संदेश दिया है कि स्वस्थ शरीर ही सफल जीवन की आधारशिला है। नियमित व्यायाम और सक्रिय जीवनशैली केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि कार्यक्षमता और सकारात्मक सोच को भी सुदृढ़ बनाती है।

6. मैं अपने वर्तमान संगठन, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) का भी आभारी हूँ, जिसने कर्मचारियों के कार्य–जीवन संतुलन को सदैव महत्व दिया है। एक संवेदनशील और प्रगतिशील संगठन वही होता है, जो कर्मचारियों

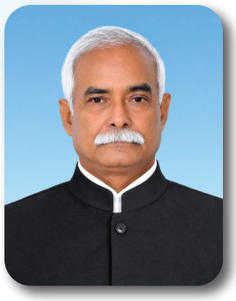
के स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और व्यक्तिगत जीवन का सम्मान करें। ऐसे वातावरण में कर्मचारी अधिक प्रेरित, संतुष्ट और रचनात्मक बनते हैं।

आज के प्रतिस्पर्धी और तेज़ गति वाले जीवन में कार्य–जीवन संतुलन केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं, बल्कि व्यावसायिक सफलता की भी अनिवार्य शर्त बन चुका है। मेरा अनुभव यही कहता है कि अनुशासन, समय-प्रबंधन, नियमित व्यायाम और सकारात्मक सोच के माध्यम से हम अपने कार्य और व्यक्तिगत जीवन दोनों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

7. अंततः, मेरा विश्वास है कि स्वस्थ शरीर, संतुलित मन और अनुशासित जीवन ही स्थायी सफलता की वास्तविक पहचान हैं। यदि हम प्रतिदिन स्वयं के लिए थोड़ा समय निकालें, तो हम न केवल अपने कार्यस्थल पर बेहतर प्रदर्शन करेंगे, बल्कि एक अधिक संतुलित, स्वस्थ और प्रेरणादायी जीवन भी जी सकेंगे।



सत्यनिष्ठा और ईमानदारी में अंतर



श्री प्रेम कुमार जारुहार
उप-परामर्शदाता
(प्रशासन प्रभाग)

सत्यनिष्ठा और ईमानदारी को आम बोलचाल में लगभग एक ही अर्थ में समझा जाता है। लेकिन दोनों में अंतर है। ईमानदारी हमारे व्यवहार में आसानी से दिखाई दे सकती है, जबकि सत्यनिष्ठा अक्सर दिखाई नहीं देती। यह हमारे अंदर के मूल्यों और सिद्धांतों से जुड़ी होती है।

सत्यनिष्ठा और ईमानदारी को अगर उदाहरण से समझें, तो कहा जा सकता है कि सत्यनिष्ठा माउंट एवरेस्ट की चोटी की तरह है, जिस तक पहुँचना आसान नहीं है, जबकि ईमानदारी उससे छोटी चोटियों की तरह है, जो अपेक्षाकृत आसानी से हासिल की जा सकती हैं।

मान लीजिए, आप एक सरकारी अधिकारी हैं और कोई व्यक्ति अपना काम करवाने के बदले आपको पैसे देने की कोशिश करता है। अगर आप पैसे लेने से मना कर देते हैं, तो आपको ईमानदार कहा जाएगा। यानी आप रिश्वत नहीं लेते और गलत काम से दूर रहते हैं।

लेकिन मान लीजिए कि वही व्यक्ति अपना पैसा गलती से आपके पास छोड़कर चला जाता है और आपको पता चलता है कि उसमें काफी पैसे हैं। अगर आप वह पैसा अपने पास रख लेते हैं, तो शायद कोई आपको बेईमान न कहे, क्योंकि आपने पैसे मांगे नहीं थे और ऐसा करने पर किसी नियम का सीधा उल्लंघन भी नहीं हुआ। लेकिन सवाल यह है कि क्या आप सत्यनिष्ठ हैं?

बिल्कुल नहीं।

सत्यनिष्ठा का अर्थ है कि आपके नैतिक मूल्य आपके व्यवहार में तब भी दिखाई दें, जब आपको कोई देख नहीं रहा हो। अगर आप वह पैसा उसके असली मालिक को लौटा देते हैं, तो आप ईमानदार होने के साथ-साथ सत्यनिष्ठ भी हैं। आपने ऐसी स्थिति में भी अपने सही मूल्यों का साथ दिया, जब कोई आपको देख नहीं रहा था।

ईमानदार लोग बहुत मिल जाते हैं, लेकिन सत्यनिष्ठ लोग कम मिलते हैं। इसका कारण यह है कि सत्यनिष्ठा ईमानदारी से आगे की बात है। सत्यनिष्ठा का मतलब है कि आप अपने मूल्यों और सिद्धांतों से किसी भी परिस्थिति में समझौता न करें और जो सही है, उस पर दृढ़ रहें।

ईमानदारी को अक्सर दूसरे लोगों या समाज के नजरिए से देखा जाता है। वहीं सत्यनिष्ठा इस बात से जुड़ी है कि आप अकेले में भी अपने मूल्यों पर कायम रहते हैं। इसलिए किसी भी परिस्थिति में अपने मूल्यों से न हटना ही सत्यनिष्ठा है।

ईमानदारी में कभी-कभी परिस्थितियों के अनुसार बदलाव की गुंजाइश हो सकती है, लेकिन सत्यनिष्ठा में ऐसा नहीं होता। सत्यनिष्ठ व्यक्ति कठिन परिस्थिति में भी अपने मूल्यों से समझौता नहीं करता। वह जो सही मानता है, उस पर दृढ़ता से कायम रहता है।

इसे इस तरह भी समझ सकते हैं कि ईमानदार व्यक्ति सही काम करता है, जबकि सत्यनिष्ठ व्यक्ति सही काम करने से तब भी पीछे नहीं हटता, जब कोई उसे देख नहीं रहा हो या उसके ऐसा करने से उसे कोई लाभ न मिल रहा हों।

केवल ईमानदार व्यक्ति कभी-कभी "मुख में राम, बगल में छुरी" जैसी स्थिति में भी दिखाई दे सकता है, यानी सामने कुछ और तथा पीछे कुछ और। लेकिन सत्यनिष्ठ व्यक्ति के व्यवहार में ऐसा विरोधाभास नहीं होता।

सत्यनिष्ठा और ईमानदारी केवल व्यक्तियों के लिए ही नहीं, बल्कि संस्थाओं के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। किसी संस्था के मूल्य और सिद्धांत भी हो सकते हैं। इसलिए कोई संस्था भी ईमानदार और सत्यनिष्ठ तभी बन सकती है, जब उसमें काम करने वाले लोग इन मूल्यों को अपने व्यवहार में अपनाएँ।

डाउनस्ट्रीम तेल एवं गैस क्षेत्र में सुरक्षा, पारदर्शिता एवं सुशासन को सुदृढ़ करने की दिशा में पीएनजीआरबी के प्रयास



श्री विजय कुमार
उप-निदेशक
(तकनीकी प्रभाग)

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने तेल और गैस क्षेत्र में सुरक्षा बढ़ाने, कामकाज में पारदर्शिता लाने और सुशासन को मजबूत करने के लिए कई नए नियम बनाए हैं और मौजूदा नियमों में बदलाव किए हैं। ये कदम उद्योग की बदलती जरूरतों, हितधारकों की अपेक्षाओं और देश में एक सुरक्षित और बेहतर ऊर्जा व्यवस्था बनाने के उद्देश्य के अनुरूप हैं।

तकनीकी विनियमों हालिया संशोधन एवं उनका उद्देश्य

- पीएनजीआरबी ने 23 जुलाई 2025 को 12 संशोधन अधिसूचित किए। इनका उद्देश्य तकनीकी नियमों में "चूक और उसके परिणाम" से जुड़े प्रावधानों को और सुदृढ़ करना था। इन संशोधनों से नियमों का पालन न करने पर कार्रवाई की एक समान, स्पष्ट और पारदर्शी प्रक्रिया तय की गई। पहले से ही पीएनजीआरबी अधिनियम, 2006 और संबंधित नियमों में दंड देने का प्रावधान था। नए बदलावों से कार्रवाई की प्रक्रिया को और स्पष्ट तथा एक जैसा बनाया गया है। इसमें नियमों के उल्लंघन की पहचान, उसे सुधारने का अवसर, सुनवाई और उचित कार्रवाई तय करने की स्पष्ट व्यवस्था की गई है। इससे निष्पक्षता और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित होता है। साथ ही, ऐसे उल्लंघनों पर प्रभावी रोक लगती है, जिनसे मानव जीवन, संपत्ति और पर्यावरण की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

- दिसंबर 2025 में पीएनजीआरबी ने 'नगर अथवा स्थानीय प्राकृतिक गैस वितरण नेटवर्क हेतु सुरक्षा मानकों सहित तकनीकी मानक एवं विनिर्देश विनियम, 2008 में संशोधन किया। इसके तहत पीएनजी से चलने वाले घरेलू गैस चूल्हों का भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के आईएस17153 मानक के अनुसार होना अनिवार्य किया गया। यह बदलाव एलपीजी चूल्हों को पीएनजी के लिए बदलकर इस्तेमाल करने से होने वाली सुरक्षा और कम दक्षता की समस्याओं को देखते हुए किया गया है। ऐसे चूल्हे सही तरीके से काम नहीं कर सकते और सुरक्षा से जुड़े जोखिम पैदा कर सकते हैं। बीआईएस मानकों के अनुसार बने और अधिक दक्षता वाले पीएनजी चूल्हों के इस्तेमाल से गैस की बचत, घर के अंदर हवा की गुणवत्ता में सुधार और उपभोक्ताओं की सुरक्षा बढ़ेगी। इससे लंबे समय में खर्च कम होगा और पीएनजी के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।

- जनवरी 2026 में रिफाइनरियों और गैस प्रोसेसिंग संयंत्रों के लिए टी4एस विनियमों में संशोधन किया गया। इसमें तीसरे पक्ष से निरीक्षण, महत्वपूर्ण उपकरणों की खरीद और उनके रखरखाव से जुड़े नियमों को और मजबूत किया गया। इससे निरीक्षण प्रमाणपत्रों की सही जांच, गुणवत्ता नियंत्रण और महत्वपूर्ण उपकरणों की बेहतर निगरानी सुनिश्चित होगी। महत्वपूर्ण उच्च-दाब फिटिंग और वाल्वों की खरीद, पॉज़िटिव मटेरियल आइडेंटिफिकेशन (पीएमआई) और उपकरणों के रखरखाव की तय प्रक्रियाओं को अनिवार्य किया गया है। इन उपायों का उद्देश्य उपकरणों के खराब होने और कामकाज से जुड़े जोखिमों को कम करना है। ये बदलाव एक बड़ी रिफाइनरी दुर्घटना से मिली सिफारिशों को ध्यान में रखकर किए गए हैं। इसके साथ ही आईएसओ 50001, आईएसओ 14001 और राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता योजनाओं जैसे ऊर्जा और पर्यावरण प्रबंधन से जुड़े प्रावधान भी शामिल किए गए हैं। इससे सुरक्षा के साथ-साथ ऊर्जा की बचत और पर्यावरण संरक्षण पर भी ध्यान दिया जाएगा। इन उपायों से कामकाज की सुरक्षा और विश्वसनीयता, आपूर्ति व्यवस्था में पारदर्शिता, ऊर्जा दक्षता में सुधार, उत्सर्जन में कमी और पेट्रोलियम से जुड़े महत्वपूर्ण ढांचे की लंबे समय तक मजबूती सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

प्रस्तावित एवं आगामी तकनीकी विनियामक सुधार

डाउनस्ट्रीम तेल एवं गैस क्षेत्र के विभिन्न तकनीकी विनियमों में प्रस्तावित प्रमुख सुधार निम्नलिखित हैं—

- पिछले पाँच वर्षों की प्रमुख दुर्घटनाओं के मूल कारणों की जांच से पता चला है कि लगभग 90 प्रतिशत दुर्घटनाएँ मानवीय गलतियों के कारण हुईं। इनमें प्रक्रियाओं में गलती, पर्याप्त निगरानी न होना और सुरक्षा नियमों का सही तरीके से पालन न करना प्रमुख कारण रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, जुलाई 2025 में अधिसूचित पीएनजीआरबी आपातकालीन प्रतिक्रिया एवं आपदा प्रबंधन योजना विनियमों में संशोधन प्रस्तावित है। इसके तहत दुर्घटना के बाद जिम्मेदारी तय करने की व्यवस्था को और सख्त किया जाएगा। इसमें गलतियों और नियमों के उल्लंघन पर स्पष्टीकरण लेना, जिम्मेदारी तय करना, संबंधित संस्था द्वारा अनुशासनात्मक कार्रवाई करना और सभी बड़ी दुर्घटनाओं में उचित मुआवजा सुनिश्चित करना शामिल है।
- पेट्रोलियम प्रतिष्ठानों के लिए पीएनजीआरबी के टी4एस विनियमों में संशोधन प्रस्तावित है। एम.बी.लाल समिति की लंबे समय की सिफारिशों को लागू करते हुए, बहुत अधिक जोखिम वाले पेट्रोलियम प्रतिष्ठानों में सुरक्षा और आपातकालीन स्थिति से निपटने की व्यवस्था मजबूत करने के लिए 'फायर एंड इमरजेंसी रिस्पॉन्स ऑगमेंटेशन (फेरा)' सुविधाएँ शुरू करने का प्रस्ताव है। इनका उद्देश्य घटनाओं को स्तर -III की बड़ी आपातकालीन स्थिति निर्माण को रोकना तथा लोगों, संपति-संपदा, पर्यावरण को होने वाले बड़े नुकसान से बचना है। प्रस्तावित संशोधनों में अग्निशमन व्यवस्था, विशेषकर प्रशिक्षित कर्मचारियों और आपातकालीन स्थिति से निपटने की एकीकृत व्यवस्था को मजबूत करने का प्रावधान है। इससे गंभीर आपातकालीन स्थितियों पर जल्दी और प्रभावी तरीके से नियंत्रण पाने में मदद मिलेगी।
- पेट्रोलियम एवं गैस जैसे खतरनाक पदार्थों के सड़क परिवहन में निहित सुरक्षा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, पीएनजीआरबी पृथक "सड़क सुरक्षा विनियम" तैयार कर रहा है। इसमें चालक प्रशिक्षण की संरचित व्यवस्था, वाहनों की उन्नत डिजाइन एवं सुरक्षा, यात्रा जोखिम प्रबंधन प्रणाली तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं सूचना प्रौद्योगिकी आधारित आधुनिक उपकरणों के उपयोग जैसे प्रावधान शामिल किए जाएंगे।

पारदर्शिता एवं सुशासन को बढ़ावा

सभी संशोधनों, नए विनियमों और अन्य नियामक सुधारों में पीएनजीआरबी ने पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई है। इसके लिए हितधारकों से व्यापक चर्चा की गई और सार्वजनिक विचार-विमर्श (Open House) आयोजित किए गए। प्रारूप संशोधनों पर आम लोगों और संबंधित पक्षों से सुझाव और टिप्पणियाँ भी मांगी जाती हैं। इस प्रक्रिया से अलग-अलग पक्षों के विचारों को शामिल करने में मदद मिलती है और नियम उद्योग की वास्तविक जरूरतों के अनुसार बनाए जा सकते हैं। इससे विनियमित संस्थाओं का पीएनजीआरबी पर विश्वास बढ़ता है, नियमों की गुणवत्ता बेहतर होती है और नियमों का पालन करना अधिक आसान और स्पष्ट बनता है।

विनियामक दृष्टिकोण

अधिसूचित और प्रस्तावित संशोधन तथा नए विनियम पीएनजीआरबी की उस सोच को दर्शाते हैं, जिसका उद्देश्य तकनीकी रूप से मजबूत, भविष्य की जरूरतों के लिए तैयार और सुरक्षित तेल एवं गैस क्षेत्र विकसित करना है। इन सुधारों के माध्यम से बोर्ड एक पारदर्शी, समान और मजबूत नियामक ढाँचा बनाना चाहता है, जो बेहतर इंजीनियरिंग मानकों, सुरक्षित कार्यप्रणाली और जिम्मेदार प्रशासन को बढ़ावा दें।

स्पष्ट नियमों, मजबूत तकनीकी मानकों और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप व्यवस्था के माध्यम से ये विनियम सभी हितधारकों के हितों का ध्यान रखते हैं। साथ ही, यह सुनिश्चित करते हैं कि लोगों की सुरक्षा, संपत्तियों की सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण तेल एवं गैस क्षेत्र के विकास का मुख्य हिस्सा बने रहें।

भारत का ऊर्जा क्षेत्र जैसे-जैसे बड़ा और अधिक जटिल हो रहा है, वैसे-वैसे पीएनजीआरबी सुरक्षा और सुशासन को निरंतर बेहतर बनाने की दिशा में प्रतिबद्ध और प्रयासरत है।

सामाजिक विकास में शिक्षकों को सशक्त बनाने की भूमिका और शिक्षा के पुनर्निर्माण का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण



श्री शिव शंकर प्रसाद
परामर्शदाता
(प्रशासन प्रभाग)

किसी भी देश की असली ताकत केवल उसकी इमारतों, सड़कों, उद्योगों या प्राकृतिक संसाधनों में नहीं होती। उसकी सबसे बड़ी ताकत उसके जागरूक, सक्षम, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक होते हैं। ऐसे नागरिक केवल किताबों, परीक्षाओं और डिग्रियों से तैयार नहीं होते। इसके लिए ऐसी शिक्षा जरूरी है, जो व्यक्ति को केवल नौकरी पाने के लिए तैयार न करें, बल्कि उसे अपने जीवन को बेहतर बनाने, समाज में योगदान देने और देश के विकास में भाग लेने के योग्य बनाए। आज हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल है — क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था युवाओं को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर रही है? क्या स्कूल और विश्वविद्यालय से निकलने वाले विद्यार्थी आत्मनिर्भर, उद्यमी, संवेदनशील और सामाजिक जिम्मेदारी समझने वाले बन रहे हैं? या वे केवल डिग्री लेकर नौकरी मिलने का इंतजार कर रहे हैं? अगर शिक्षा का परिणाम ऐसे लाखों युवा बनना है, जो अपनी ऊर्जा, ज्ञान और क्षमता का उपयोग तभी कर पाएं जब उन्हें कोई नौकरी मिलें, तो हमें शिक्षा की दिशा और उसके उद्देश्य पर गंभीरता से पुन: विचार करने की ज़रूरत है।

1. शिक्षा का उद्देश्य: केवल उपाधि नहीं, जीवन की तैयारी

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में किताबों, पाठ्यक्रम, अंकों और परीक्षाओं को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। विद्यार्थी की सफलता अक्सर इस बात से तय होती है कि वह कितना याद रख सकता है और परीक्षा में कितने अंक ला सकता है। इससे शिक्षा का बड़ा हिस्सा केवल याद करने तक सीमित हो गया है। जबकि जीवन की असली चुनौतियों के लिए केवल याददाश्त ही नहीं, बल्कि सही निर्णय लेने की क्षमता, कौशल, साहस, रचनात्मकता और आत्मविश्वास भी जरूरी हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं होना चाहिए। सही मायने में शिक्षा वह है जो व्यक्ति को —

- अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम बनाए;
- अपनी आजीविका के साधन खुद विकसित करने के योग्य बनाए;
- समाज की समस्याओं को समझने में मदद करें;
- अपने ज्ञान का व्यावहारिक उपयोग करना सिखाए;
- दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करें।

हमें ऐसे युवाओं की जरूरत है जो केवल नौकरी तलाशने वाले न हों, बल्कि नए काम और अवसर पैदा करने वाले बनें। हमें ऐसे डॉक्टर चाहिए, जिनमें सेवा की भावना हो, ऐसे इंजीनियर और तकनीशियन चाहिए, जो समाज के लिए उपयोगी काम करें, ऐसे वैज्ञानिक चाहिए जो नई समस्याओं के समाधान खोजें और ऐसे शिक्षक चाहिए जो विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें सही दिशा दें।

2. परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं माना जाता था। गुरु की जिम्मेदारी विद्यार्थी के समग्र विकास की होती थी। विद्यार्थी केवल सुनता या पढ़ता ही नहीं था, बल्कि सीखता था, अभ्यास करता था और सीखे हुए ज्ञान को अपने व्यवहार में उतारता था। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें अतीत में लौट जाना चाहिए या आधुनिक शिक्षा को छोड़ देना चाहिए। जरूरत इस बात की है कि हम अपनी पुरानी शिक्षा पद्धति की उन अच्छी बातों को अपनाएँ, जिनमें —

- गुरु और शिष्य के बीच मजबूत और व्यक्तिगत संबंध था;
- शिक्षा और जीवन एक-दूसरे से जुड़े हुए थे;
- ज्ञान के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता था;
- विद्यार्थी की रुचि और क्षमता के अनुसार उसके विकास पर ध्यान दिया जाता था;
- समाज के लिए उपयोगी बनना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

आज जरूरत ऐसे समन्वित शिक्षा मॉडल की है, जिसमें आधुनिक विज्ञान, गणित और तकनीक की शक्ति के साथ भारतीय शिक्षा परंपरा की मानवीय सोच और जीवन से जुड़ी सीख का भी मेल हों।

3. शिक्षक: केवल विषय-अध्यापक नहीं, जीवन-निर्माता

शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। स्कूल की इमारतें, किताबें, प्रयोगशालाएँ और तकनीक जरूरी साधन हैं, लेकिन विद्यार्थी को सही दिशा देने में एक अच्छे, संवेदनशील और सक्षम शिक्षक की भूमिका सबसे अहम होती है। आज शिक्षक की भूमिका अक्सर केवल एक विषय पढ़ाने तक सीमित हो गई है। उनसे उम्मीद की जाती है कि वे समय पर पाठ्यक्रम पूरा करें, परीक्षाएँ कराएँ और विद्यार्थियों के प्रदर्शन का आकलन करें। लेकिन क्या शिक्षा की जिम्मेदारी केवल इतनी ही है? एक अच्छे शिक्षक का काम केवल गणित, विज्ञान या भाषा पढ़ाना नहीं है। उसका असली काम विद्यार्थी को समझना, उसकी क्षमता को पहचानना और उसे विकसित करना, उसकी समस्याओं को समझना और उसे जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। इसलिए शिक्षक को केवल पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास का मार्गदर्शक और संरक्षक माना जाना चाहिए।

4. शिक्षकों को सक्षम बनाने की अवधारणा

शिक्षकों को सक्षम बनाने का अभिप्राय केवल शिक्षक का वेतन बढ़ाना या उसे कोई प्रशासनिक पद देना नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ है - शिक्षक को इतना सक्षम और अधिकार संपन्न बनाना हैं, कि वह विद्यार्थियों के विकास में आने वाली समस्याओं को दूर करने में प्रभावी भूमिका निभा सके। इसके लिए शिक्षक को उचित स्तर पर—

- प्रशासन का सहयोग,
- संस्थान में जरूरी अधिकार,
- वित्तीय सहायता की सिफारिश करने की क्षमता,
- स्थानीय प्रशासन से संपर्क करने की सुविधा, और
- विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान के लिए स्पष्ट व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिए।

यदि किसी विद्यार्थी की पढ़ाई गरीबी, पारिवारिक परेशानी, सामाजिक समस्या या संसाधनों की कमी के कारण प्रभावित हो रही है, तो शिक्षक केवल मूक दर्शक बनकर न रह जाए। उसके पास ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिसके माध्यम से वह स्थानीय निकायों और प्रशासन से विद्यार्थी के लिए जरूरी सहायता दिला सकें।

सशक्त शिक्षक ही सशक्त विद्यार्थी का निर्माण कर सकता है और सशक्त विद्यार्थी ही सशक्त समाज का आधार बनता है।

5. प्राथमिक शिक्षा: भय-मुक्त, मातृभाषा आधारित और जीवन से जुड़ी होनी चाहिए

प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों पर किताबों का अधिक बोझ डालना नहीं होना चाहिए। बचपन के प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और स्वाभाविक रूप से सीखने की क्षमता को बढ़ाना अधिक जरूरी है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को —

- मातृभाषा या स्थानीय भाषा में;
- कहानी सुनाने;
- चित्र बनाने;
- खेल;
- चलचित्र और अन्य दृश्य माध्यमों;
- प्रयोगों;
- आसपास के परिवेश को समझने;
- और रोजमर्रा के जीवन से जुड़े अनुभवों के माध्यम से रोचक और सहज बनाया जा सकता है।

इस स्तर पर परीक्षा और रटने के बजाय बच्चों की जिज्ञासा और समझ को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच व्यक्तिगत संबंध भी प्राथमिक शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक शिक्षक को सीमित संख्या में, जैसे लगभग दस विद्यार्थियों के समग्र विकास की जिम्मेदारी दी जा सकती है। इस व्यवस्था में शिक्षक केवल कक्षा में पढ़ाने वाला नहीं होगा, बल्कि इन बच्चों के विकास का जिम्मेदार मार्गदर्शक भी होगा। शिक्षक की जिम्मेदारी होगी कि वह ध्यान रखे कि—

- बच्चा नियमित रूप से स्कूल जा रहा है या नहीं;
- उसका स्वास्थ्य और पोषण कैसा है;
- परिवार या आसपास की कोई समस्या उसकी पढ़ाई में बाधा तो नहीं बन रही है;
- बच्चे की रुचि और विशेष प्रतिभा क्या है और उसे आगे कैसे विकसित किया जा सकता है।
- शिक्षक के काम का मूल्यांकन भी केवल परीक्षा के परिणामों के आधार पर न हो। इसे विद्यार्थियों के वास्तविक विकास और उनकी क्षमता में हुए सुधार से भी जोड़ा जाना चाहिए।

6. विकास विद्यालय: ज्ञान और कौशल का संगम

प्राथमिक शिक्षा के बाद, लगभग 12 वर्ष की आयु से विद्यार्थियों के लिए ऐसे विकास विद्यालय की व्यवस्था की जा सकती है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल अगली कक्षा या उच्च शिक्षा में प्रवेश की तैयारी करना न हो, बल्कि बच्चों को जीवन और आजीविका के लिए भी तैयार करना हो। यहाँ विद्यार्थियों को—

- विज्ञान;
- गणित;
- सामाजिक विज्ञान;
- भाषा;
- तकनीकी ज्ञान;
- अलग-अलग व्यावसायिक कौशल;
- उत्पादन और सेवा से जुड़ी गतिविधियाँ;
- तथा उनकी रुचि के अनुसार विशेष प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

इस स्तर पर हर विद्यार्थी को केवल विषयों की जानकारी ही नहीं, बल्कि किसी न किसी व्यावहारिक कौशल को सीखने और उसमें दक्ष होने का अवसर मिलना चाहिए। जो विद्यार्थी उच्च शिक्षा, विज्ञान, अनुसंधान या अन्य शैक्षणिक क्षेत्रों में आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें संबंधित विषयों का गहन अध्ययन कराया जाए। वहीं, अन्य विद्यार्थियों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार तकनीकी, उत्पादन, सेवा या उद्यमिता के क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए तैयार किया जाए। इस तरह शिक्षा का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को एक ही तरीके से तैयार करना नहीं होगा, बल्कि हर विद्यार्थी की रुचि, क्षमता और जरूरत के अनुसार उसके विकास पर ध्यान देना होगा।

7. नोडल शिक्षक की व्यवस्था

विकास विद्यालय में शिक्षक की दोहरी भूमिका हो सकती है—

1. विषय-अध्यापक के रूप में, और
2. नोडल शिक्षक के रूप में

विषय-अध्यापक के रूप में वह अपने विषय की पढ़ाई कराएगा। वहीं, नोडल शिक्षक के रूप में वह कुछ तय विद्यार्थियों के समग्र विकास की जिम्मेदारी संभालेगा। नोडल शिक्षक का काम केवल यह देखना नहीं होगा कि विद्यार्थी परीक्षा में पास हुआ या नहीं। वह यह भी सुनिश्चित करेगा कि विद्यार्थी —

- किसी उपयोगी कौशल को सीखें और उसमें दक्ष हों;
- आत्मविश्वासी बने;
- अपने भविष्य के लिए सही दिशा चुन सकें;
- सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को समझ सके; और
- आत्मनिर्भर बनने की क्षमता विकसित करे।

ऐसे शिक्षक को स्थानीय प्रशासन और सामाजिक संस्थाओं से संपर्क करने के लिए जरूरी सहयोग और अधिकार भी दिए जाने चाहिए।

8. शिक्षा और प्रशासन का मानवीय समन्वय

आज शिक्षा और प्रशासन की व्यवस्थाएँ प्रायः अलग-अलग काम करती हैं। शिक्षा व्यवस्था अपने काम तक सीमित रहती है और प्रशासन अपनी प्रक्रियाओं में व्यस्त रहता है। इससे समाज की वास्तविक समस्याओं और नीतियाँ बनाने के बीच दूरी पैदा हो सकती है। इस दूरी को कम करने के लिए शिक्षा और प्रशासन के बीच बेहतर संवाद और अनुभवों का आदान-प्रदान जरूरी है। इसके लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जा सकती है, जिसमें अच्छे शिक्षकों को प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ निभाने का अवसर मिलें और प्रशासन का अनुभव रखने वाले लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका दी जाए। इससे दो बड़े लाभ हो सकते हैं—

- प्रशासन को समाज और लोगों की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी;
- शिक्षा व्यवस्था को प्रशासनिक संसाधनों और विकास योजनाओं का बेहतर सहयोग मिल सकेगा।

जो शिक्षक वर्षों से बच्चों और उनके परिवारों की वास्तविक समस्याओं को समझते हैं, उन्हें यदि प्रशासनिक जिम्मेदारी दी जाए, तो वे प्रशासन में अधिक संवेदनशील और मानवीय दृष्टिकोण ला सकते हैं। इसी तरह, प्रशासनिक अनुभव रखने वाले लोग यदि शिक्षा के नेतृत्व से जुड़ें, तो वे शिक्षा और विकास योजनाओं के बीच बेहतर तालमेल बना सकते हैं। इस तरह लंबे समय में शिक्षा और सामाजिक प्रशासन के बीच बेहतर तालमेल और साझा जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा सकती है।

9. "सीखते हुए कमाना": शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा

हमारे देश में बहुत से बच्चों की शिक्षा आर्थिक परेशानियों के कारण रुक जाती है। कई परिवारों के लिए बच्चे को स्कूल भेजना केवल शिक्षा का सवाल नहीं है, बल्कि परिवार की आय और रोजी-रोटी से भी जुड़ा है। इस समस्या का समाधान शिक्षा को समाज और कामकाज से जोड़कर किया जा सकता है। बच्चों की उम्र और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्कूलों में ऐसी गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं, जिनसे विद्यार्थी—

- उत्पादन की प्रक्रिया को समझें;
- उपयोगी वस्तुएँ और सेवाएँ बनाना सीखें;
- कृषि, शिल्प, तकनीक और स्थानीय व्यवसायों के बारे में जानें; और
- अपने श्रम की गरिमा को समझें।

इससे शिक्षा और जीवन के बीच की दूरी कम हो सकती है। इसका उद्देश्य बच्चों से श्रम करवाना नहीं है। इसका उद्देश्य उन्हें काम करने के कौशल, उत्पादन, उद्यमिता और आत्मसम्मान से परिचित कराना है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो विद्यार्थी में यह विश्वास पैदा करें — "मैं केवल नौकरी मिलने का इंतजार करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ। मैं अपने ज्ञान और कौशल से अपने लिए और समाज के लिए नए अवसर पैदा कर सकता हूँ।"

10. बेरोजगारी और शिक्षा के बीच बढ़ती दूरी

आज बहुत से युवा उच्च शिक्षा और डिग्री हासिल करने के बाद भी नौकरी पाने के लिए संघर्ष करते हैं। इसका एक कारण यह है कि शिक्षा और रोजगार की जरूरतों के बीच सही सामंजस्य नहीं है।

डिग्री से यह पता चलता है कि व्यक्ति ने कुछ ज्ञान प्राप्त किया है, लेकिन जीवन में सफल होने के लिए उसे—

- व्यावहारिक अनुभव;
- समस्याओं को हल करने की क्षमता;
- तकनीकी ज्ञान और कौशल;
- अच्छी तरह बातचीत करने की क्षमता;
- नेतृत्व करने की क्षमता; और
- अपना काम शुरू करने की क्षमता की भी जरूरत होती है।

इसलिए शिक्षा का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि विद्यार्थी ने कितनी परीक्षाएँ पास की हैं। यह भी देखा जाना चाहिए कि वह अपने ज्ञान और कौशल का वास्तविक जीवन में कितना अच्छा उपयोग कर सकता है।

11. स्वावलम्बी भारत के लिए स्वावलम्बी युवा

भारत जैसे विशाल देश में केवल सरकारी और बड़े निजी संस्थानों में उपलब्ध नौकरियाँ सभी युवाओं की जरूरतें पूरी नहीं कर सकतीं। इसलिए हमें ऐसे युवाओं को तैयार करना होगा जो छोटे और बड़े स्तर पर —

- उद्योग शुरू कर सकें;
- सेवाएँ दे सकें;
- स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर सकें;
- नई तकनीक अपना सकें;
- और रोजगार के नए अवसर पैदा कर सकें।

हमारे देश को केवल नौकरी की तलाश करने वाले युवाओं की नहीं, बल्कि उद्यमी, नए विचार देने वाले, कुशल तकनीशियन, वैज्ञानिक, शिक्षक और समाजसेवी युवाओं की भी जरूरत है। जब युवा अपने ज्ञान और कौशल के आधार पर खुद काम शुरू करने और दूसरों के लिए भी अवसर पैदा करने की क्षमता विकसित करेंगे, तभी बेरोजगारी और निराशा के इस दुष्चक्र को तोड़ा जा सकेगा।

12. शिक्षक का मूल्यांकन: परीक्षा परिणाम से आगे

यदि शिक्षक को विद्यार्थियों के जीवन और विकास की व्यापक जिम्मेदारी दी जाती है, तो उसके काम का मूल्यांकन भी उसी आधार पर होना चाहिए। शिक्षक की सफलता केवल इस बात से तय नहीं होनी चाहिए कि उसकी कक्षा के विद्यार्थियों ने कितने अंक प्राप्त किए हैं। यह भी देखा जाना चाहिए कि उसके विद्यार्थियों में—

- कितना आत्मविश्वास बढ़ा;
- उनके ज्ञान और कौशल में कितना सुधार हुआ;
- कितने विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनें;
- कितने विद्यार्थियों ने उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा या उद्यमिता के क्षेत्र में सफलता हासिल की; और
- वे समाज के प्रति कितने जिम्मेदार नागरिक बनें।

इस प्रकार शिक्षक की सफलता और सम्मान को उसके विद्यार्थियों के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव से जोड़ा जा सकता है।

13. शिक्षा: राष्ट्र-निर्माण का सबसे प्रभावी साधन

आज हमारा समाज बड़े बदलावों के दौर से गुजर रहा है। तकनीक, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, आर्थिक बदलाव और समाज की बढ़ती अपेक्षाओं के कारण युवाओं के सामने नई चुनौतियाँ हैं। यदि हम आने वाली पीढ़ी को आत्मविश्वास, जरूरी संसाधनों और कौशल से सक्षम नहीं बना पाए, तो बेरोजगारी, निराशा और सामाजिक असंतोष की समस्याएँ बढ़ सकती हैं। इसलिए शिक्षा को केवल एक सरकारी कार्यक्रम या परीक्षा की व्यवस्था के रूप में नहीं देखना चाहिए। इसे देश के भविष्य को बनाने की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखना होगा। इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। शिक्षक को जरूरी अधिकार और संसाधन दिए बिना उससे बेहतर परिणामों की उम्मीद करना उचित नहीं है। यदि हम शिक्षक को ज्ञान, संसाधन, प्रशासनिक सहयोग और समाज में उचित सम्मान दें, तो वही शिक्षक लाखों विद्यार्थियों के जीवन को सही दिशा दे सकता है।

निष्कर्ष: सशक्त शिक्षक से सशक्त समाज तक

शिक्षक-सशक्तीकरण वस्तुतः किसी एक व्यक्ति या वर्ग का सशक्तीकरण नहीं है। यह समाज की भावी पीढ़ी को सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। जिस प्रकार एक बीज को विशाल वृक्ष बनने के लिए उपयुक्त भूमि, जल, प्रकाश और संरक्षण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार एक बच्चे की अंतर्निहित क्षमता को विकसित होने के लिए एक सक्षम, संवेदनशील और अधिकार-संपन्न शिक्षक की आवश्यकता होती है। अतः शिक्षा के पुनर्निर्माण की दिशा में हमें निम्नलिखित मूल सिद्धांतों को अपनाना चाहिए —

1. शिक्षा को परीक्षा-केंद्रित नहीं, जीवन-केंद्रित बनाया जाए।
2. ज्ञान और कौशल के बीच संतुलन स्थापित किया जाए।
3. प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास के लिए एक उत्तरदायी शिक्षक अथवा नोडल शिक्षक की व्यवस्था हों।
4. शिक्षकों को विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक संस्थागत, प्रशासनिक और वित्तीय समर्थन दिया जाए।
5. प्राथमिक शिक्षा को मातृभाषा, अनुभव, जिज्ञासा और रचनात्मकता पर आधारित बनाया जाए।
6. माध्यमिक स्तर पर कौशल, तकनीक, उद्यमिता और व्यावहारिक अनुभव को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाए।
7. शिक्षा और प्रशासन के बीच निरंतर संवाद और अनुभव-विनिमय की व्यवस्था विकसित की जाए।
8. शिक्षा का अंतिम उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर, उत्तरदायी और सक्षम नागरिक का निर्माण होना चाहिए।

अंततः हमें यह समझना होगा कि किसी देश का भविष्य केवल संसद, सरकारी कार्यालयों और योजनाओं से नहीं बनता, बल्कि कक्षाओं और शिक्षकों के माध्यम से भी आकार लेता है। यदि हम शिक्षक को केवल पढ़ाने वाला कर्मचारी मानेंगे, तो शिक्षा की शक्ति सीमित हो जाएगी। लेकिन यदि शिक्षक को समाज बनाने वाला, जीवन की सही दिशा दिखाने वाला और आने वाली पीढ़ी को तैयार करने वाला मानकर उसे जरूरी अधिकार, संसाधन और सम्मान दिया जाए, तो शिक्षा केवल डिग्री देने की व्यवस्था नहीं रहेगी। वह समाज में बदलाव लाने का सबसे मजबूत माध्यम बन जाएगी।

एक सक्षम शिक्षक अच्छे और सक्षम विद्यार्थी तैयार करता है। सक्षम विद्यार्थी आत्मनिर्भर परिवार बनाते हैं और आत्मनिर्भर परिवारों से ही एक मजबूत, समृद्ध और संवेदनशील राष्ट्र का निर्माण होता है।



शुक्राना – जीवन की सबसे सुंदर इबादत

(हर हाल में ईश्वर का धन्यवाद करना ही सच्ची समृद्धि है)



सुश्री गरिमा मल्होत्रा
परामर्शदाता
(जनसंपर्क एवं सोशल
मीडिया तथा सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग)

हमारे जीवन में अनगिनत कारण हैं, जिनके लिए हम ईश्वर का शुक्राना कर सकते हैं — हमारी साँसें, हमारा परिवार, हमारी सेहत, हमारे रिश्ते और वह हर छोटा-बड़ा सुख, जो हमें रोज़ मिलता है। मगर सच यह है कि हममें से अधिकांश लोग इन नेमतों को हल्के में ले लेते हैं। हम उस पर ध्यान देते हैं जो हमारे पास नहीं है और जो है, उसके लिए धन्यवाद कहना भूल जाते हैं।

दुनिया में करोड़ों लोग ऐसे हैं, जिनके पास न घर है, न भोजन, न स्वस्थ शरीर, न परिवार का सहारा — फिर भी वे हिम्मत से, मुस्कुराते हुए जीवन जीते हैं। अगर हम ठहरकर सोचें, तो पाएँगे कि हम उनसे कहीं बेहतर स्थिति में हैं। यही सोच हमें शिकायत की जगह शुक्राना को अपनाने की प्रेरणा देती है।

हर पल, हर परिस्थिति में शुक्राना

- सुबह आँख खुलते ही अपनी साँसों का शुक्राना करें — क्योंकि असंख्य लोग ऐसी सुबह देखने के लिए अब इस दुनिया में नहीं हैं।
- भोजन करते समय उसका शुक्राना करें — क्योंकि लाखों लोग भूखे पेट सो जाते हैं।
- परिवार और दोस्तों के साथ बैठते समय शुक्राना करें — क्योंकि बहुत से लोग अकेलेपन के अंधेरे में जीते हैं।
- कठिनाइयों में भी शुक्राना करें — क्योंकि वही मुश्किलें हमें मज़बूत, समझदार और सहनशील बनाती हैं।

शुक्राना हमें सिखाता है कि सुख हो या दुःख, हर परिस्थिति में ईश्वर का धन्यवाद करना ही सच्चा विश्वास है।

'शुक्राना' – एक शब्द में समाई चार आशीषें

शब्द शुक्राना सिर्फ़ धन्यवाद नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है। इस शब्द के हर अक्षर में ईश्वर के अलग-अलग स्वरूप बसते हैं —

- श (Sh) – शंकर भगवान की कृपा और आशीर्वाद
- क (K) – कृष्ण भगवान का प्रेम और मधुरता
- रा (Ra) – राम भगवान की मर्यादा और धर्म की शिक्षा
- ना (Na) – गुरु नानक देव जी की करुणा और सेवा का भाव

जब हम "शुक्राना" बोलते हैं, तो मानो हम चारों ओर से इन चारों दिव्य शक्तियों का आशीर्वाद अपने जीवन में आमंत्रित करते हैं।

कहानी – बूढ़ा माली और कृतज्ञता का जादू

गाँव के किनारे एक बूढ़ा माली, हरिराम, रहता था। न बड़ी संपत्ति, न आलीशान घर—बस मिट्टी का एक छोटा सा घर और आँगन में खिले फूलों का प्यारा बगीचा। गुलाब, गेंदा, चंपा, रातरानी—हर फूल उसके लिए दोस्त जैसा था।

लोग अक्सर पूछते—

"हरिराम, तुम्हारे पास इतना कम होते हुए भी तुम हमेशा मुस्कुराते क्यों हो?"

हरिराम कहता—

"क्योंकि मैं रोज़ अपने पास जो है, उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ।"

एक साल भयंकर सूखा पड़ा। खेत बंजर हो गए, कुएँ सूख गए, लोग चिंतित और निराश हो गए। लेकिन हरिराम फिर भी रोज़ अपने फूलों को पानी देता, उनसे बातें करता और आसमान की ओर देखकर मुस्कुराता।

एक दिन एक बच्चा पूछ बैठा—

"बाबा, पानी की इतनी कमी में भी आप फूलों को पानी दे रहे हैं और मुस्कुरा रहे हैं, क्यों?"

हरिराम ने एक खाली घड़ा दिखाकर कहा—

"देख बेटा, यह घड़ा अभी खाली है। अगर मैं इसके खालीपन पर ध्यान दूँ, तो दुखी हो जाऊँगा। लेकिन अगर मैं याद करूँ कि कल इसमें पानी था, जिससे मैंने फूलों और खुद को बचाया, तो मैं खुश हो जाता हूँ। यही है कृतज्ञता—मुश्किल समय में भी धन्यवाद कहना।"

कुछ हफ़्तों बाद बारिश आई, खेत हरे हो गए, कुएँ भर गए। लेकिन गाँव के लोग कहते थे—

"हमने जीना हरिराम से सीखा—कठिन समय में भी शुक्राना करना।"

निष्कर्ष – शुक्राना को जीवन का मंत्र बनाएँ

हमारे पास जितना है, वह किसी और के लिए सपना हो सकता है। इसलिए शिकायत करने से पहले एक पल ठहरें और मन ही मन कहें—

"शुक्राना, प्रभु!"

जब हम हर परिस्थिति में शुक्राना करना सीख लेते हैं, तो जीवन में कड़वाहट की जगह मिठास, शिकायत की जगह संतोष और डर की जगह विश्वास भर जाता है। क्योंकि अंत में, जो व्यक्ति शुक्राना करना जानता है—वही वास्तव में सबसे समृद्ध है, दिल से।



शुक्राना



बहुआयामी पड़ाव है जिंदगी!



श्री गौरव शर्मा
उप-निदेशक
(प्राधिकरण प्रभाग)

जीवन कई पड़ावों से होकर गुजरता है। इसका शुरू होना और कब खत्म होना, यह सब नियति के हाथ में है। जीवन के हर पड़ाव की अपनी कुछ जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य होते हैं। इन्हें निभाते-निभाते ही हमारा पूरा जीवन आगे बढ़ता रहता है।

जब हम पैदा होते हैं, तब हमारी पहली जरूरत अपनी सुरक्षा और देखभाल होती है। जो काम हम खुद नहीं कर पाते, वे हमारे माता-पिता करते हैं। धीरे-धीरे हम बड़े होते हैं और स्कूल जाना शुरू करते हैं। इस समय हमारी जिम्मेदारी होती है कि हम मन लगाकर पढ़ाई करें और अच्छे संस्कार सीखें।

माता-पिता और रिश्तेदार अक्सर हमसे पूछते हैं कि हम अभी क्या कर रहे हैं और भविष्य में क्या करना चाहते हैं। वे हमें आगे बढ़ने और अपने भविष्य के लिए सही दिशा चुनने के बारे में बताते और समझाते हैं।

माता-पिता भी कई बार अपनी पसंद और राय बच्चों पर थोप देते हैं। बच्चा उस उम्र में बहुत कुछ समझ नहीं पाता और माता-पिता के सपनों को पूरा करने में ही अपना जीवन लगा देता है। जब वह दसवीं और बारहवीं की परीक्षा पास करके कॉलेज जाता है, तो उसके अपने सपने भी बनने लगते हैं। अब उसे माता-पिता और रिश्तेदारों की बार-बार दी जाने वाली सलाह अच्छी नहीं लगती। वह चाहता है कि उसकी बात सुनी जाए, उसे अपनी पसंद से फैसले लेने की आजादी मिले और ऐसे दोस्त हों, जो उसका साथ दें। उसे लगने लगता है कि वह घर-परिवार की जिम्मेदारियों में बंधा हुआ है।

वह सोचता है कि अच्छी कमाई कैसे हों, नौकरी करें या अपना कारोबार शुरू करें। इसी बीच परिवार की ओर से शादी करने, परिवार बढ़ाने और बच्चे होने का दबाव भी शुरू हो जाता है। यह जीवन का ऐसा समय होता है जब उसे लगता है कि समय बहुत तेजी से बीत रहा है और उसे बहुत कुछ करना है। उसका जीवन तेजी से बदल रहा होता है। काम की जगह पर नई जिम्मेदारियाँ होती हैं और घर पर भी नई जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं। यह उम्र का वह पड़ाव है, जहाँ व्यक्ति न पूरी तरह छोटा रहता है और न ही पूरी तरह बड़ा।

उसके सपने समुद्र में तैरती उस नाव की तरह हो जाते हैं, जिसका कोई एक माझी नहीं होता और जिसे हर कोई अपनी दिशा में चलाना चाहता है। माता-पिता बूढ़े हो चुके होते हैं और बच्चे भी बड़े हो जाते हैं। कार्यस्थल पर भी न तो वरिष्ठ उसे ज्यादा महत्व देते हैं और न ही कनिष्ठ। वह जीवन के ऐसे पड़ाव पर होता है, जहाँ उसे लगता है कि उसके जीवन में कुछ भी उसकी इच्छा के अनुसार नहीं हो रहा, फिर भी जिंदगी आगे बढ़ती रहती है। युवावस्था के सपने धीरे-धीरे पीछे छूट जाते हैं और बुढ़ापे का डर सताने लगता है। देखते-देखते बच्चे बड़े हो जाते हैं। जिस तरह कभी वह अपने माता-पिता की उम्मीदों के दबाव को महसूस करता था, उसी तरह अब वह भी अपने बच्चों से उम्मीदें रखने लगता है। इस समय जिम्मेदारियाँ और तनाव दोनों बढ़ जाते हैं। वह थका हुआ होने के बावजूद लगातार आगे बढ़ता रहता है, क्योंकि अब उसे लगता है कि परिवार की जिंदगी का पूरा बोझ उसी के कंधों पर है। माता-पिता धीरे-धीरे इस दुनिया से विदा होने लगते हैं या विदा हो चुके होते हैं। बच्चे बड़े हो जाते हैं, लेकिन वे शायद उसकी भावनाओं को उस तरह नहीं समझते। वे अपनी युवावस्था में होते हैं और वह खुद बुढ़ापे की ओर बढ़ रहा होता है। उसकी आँखों की चमक भी

धीरे-धीरे कम होने लगती है। इस उम्र में यदि वह अपने लिए कुछ सोचता है या अपने सपनों को पूरा करने की बात करता है, तो कई बार बच्चे भी उस पर ताने कसने लगते हैं। तब वह खुद से पूछता है — क्या मैं सच में बूढ़ा हो गया हूँ? क्योंकि उम्र भले ही बढ़ गई हो, उसके सपने आज भी वैसे ही हैं।

कई बार हम केवल लोगों को दिखाने के लिए खुद को काम में लगाए रखते हैं। 60 वर्ष की उम्र के बाद भी अपने सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करते रहते हैं और खुद को जिम्मेदार मानते हैं। लेकिन कई बार बच्चे हमारी ओर ध्यान नहीं देते, रिश्तेदार भी दूर हो जाते हैं और जब हम अपने अनुभव दूसरों के साथ बाँटना चाहते हैं, तो कोई सुनने वाला नहीं होता। धीरे-धीरे जीवन अपनी रफ्तार से आगे बढ़ता रहता है और हर पड़ाव हमारे सामने नई जिम्मेदारियाँ लेकर आता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ अपने जीवन को भी खुलकर जिएँ। अपने सपनों को पूरा करने के लिए कल का इंतजार न करें।

ज़िंदगी में युवा रहना है तो अपने पैशन से इश्क कर लो, वो आपको हमेशा युवा रखेगा, नौकरी तो ज़िम्मेदारी निभाने का दूसरा नाम है।



जिंदगी की महक और जिंदगी का सफ़र

पीएनजीआरबी के सम्मेलन/संगोष्ठी

पीएनजीआरबी टीम का 23 नवंबर, 2025 को टोरेंट गैस के सिटी गेट और सीएनजी मदर स्टेशन, चेन्नई का दौरा

पीएनजीआरबी की टीम ने तमिलनाडु के चेन्नई में टोरेंट गैस के सिटी गेट स्टेशन (सीजीडी) एवं सीएनजी मदर स्टेशन का दौरा किया तथा सिटी गैस वितरण (सीजीडी) नेटवर्क के प्रमुख परिचालन पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

दौरे के दौरान टीम ने महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं जैसे कि गैस कस्टडी ट्रांसफर प्रणाली, ओडोराइजेशन (गंधीकरण) व्यवस्था, सीएनजी कैस्केड फिलिंग परिचालन, ऑनलाइन मदर सीएनजी स्टेशन की कार्यप्रणाली, अग्निशमन व्यवस्था एवं सुरक्षा अवसंरचना का अवलोकन किया गया।

इस दौरान हुए संवाद एवं अवलोकन से सीजीडी नेटवर्क में अपनाई जा रही सुरक्षा प्रथाओं, अवसंरचना की विश्वसनीयता तथा परिचालन दक्षता की बेहतर समझ प्राप्त हुई। यह दौरा सुरक्षित, दक्ष एवं उपभोक्ता-केंद्रित गैस वितरण प्रणाली को बढ़ावा देने के प्रति पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करता है।





भारत के ऊर्जा परिवर्तन को साक्ष्य-आधारित अंतर्दृष्टियों से गति प्रदान करने पर संगोष्ठी - दिनांक 7.1 2026

पीएनजीआरबी ने टेरी के नेतृत्व में भारत के ऊर्जा परिवर्तन के तहत विभिन्न वाहन ईंधनों का तुलनात्मक अध्ययन करने की घोषणा की। पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन ने अपने मुख्य संबोधन में साक्ष्य-आधारित नीतियों, संतुलित ईंधन विकल्पों और टिकाऊ परिवहन पर जोर दिया। उन्होंने भविष्य के लिए तैयार भारत बनाने की दिशा में सतत प्रयासों की आवश्यकता पर भी बल दिया।





भारत में सीजीडी विकास को गति देने हेतु पुणे में आयोजित सम्मेलन - दिनांक 17-18 फरवरी 2026

“भारत में सीजीडी विकास को गति देने के लिए वैश्विक नवाचारों का लाभ उठाना” विषय पर सम्मेलन का आयोजन पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) द्वारा महाराष्ट्र प्राकृतिक गैस लिमिटेड (एमएनजीएल) के सहयोग से 17-18 फरवरी 2026 को पुणे में किया गया। इस सम्मेलन में वरिष्ठ नियामकों, उद्योग जगत के नेताओं और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों ने भाग लेकर सीजीडी क्षेत्र के विस्तार के अगले चरण की रूपरेखा तैयार की।

पीएनजीआरबी के सदस्यों और उद्योग से जुड़े लोगों ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। इनमें गैस की मांग बढ़ाना, एलएनजी का बेहतर उपयोग (छोटे स्तर के एलएनजी और सीबीजी का उपयोग), गैस की सुरक्षित आपूर्ति, डिजिटलीकरण, स्वचालन, साइबर सुरक्षा और गैस बुनियादी ढांचे का तेजी से विस्तार शामिल था। सम्मेलन में भारत सरकार के पूर्व वित्त सचिव और पेट्रोलियम सचिव डॉ. विजय केलकर ने भी विशेष व्याख्यान दिया।




पीएनजीआरबी स्ट्रेटेजिक रिट्रीट 2.0 का आयोजन - दिनांक 28 मार्च 2026



अगस्त 2025 में आयोजित अपने प्रथम स्ट्रेटेजिक लीडरशिप रिट्रीट के बाद, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने 28 मार्च 2026 को स्ट्रेटेजिक रिट्रीट 2.0 का आयोजन किया। प्रथम रिट्रीट में रिट्रीट में केवल वरिष्ठ नेतृत्व ने भाग लिया था, जबकि इस बार पूरे पीएनजीआरबी परिवार ने इसमें हिस्सा लिया, क्योंकि सर्वश्रेष्ठ रणनीतियां उन्हीं लोगों द्वारा निर्मित होती हैं जो उन्हें क्रियान्वित करते हैं। प्रत्येक प्रभाग, प्रत्येक प्रकोष्ठ तथा जमीनी स्तर पर विनियमन को आकार देने वाले सभी अधिकारियों एवं परामर्शदाताओं ने पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन तथा सदस्य (वाणिज्यिक) श्री अंजनी कुमार तिवारी के साथ विचार-विमर्श में सक्रिय योगदान दिया।





इस दौरान निम्नलिखित चार रणनीतिक विषयों पर मुख्यत: चर्चा की गई:

→ आगामी वर्षों में पीएनजीआरबी का प्रमुख फोकस क्या होना चाहिए
→ पीएनजीआरबी से संचार — पारदर्शी एवं प्रासंगिक
→ वर्ष 2050 में पीएनजीआरबी की प्रासंगिकता — उपभोक्ता-केंद्रित ऊर्जा परिवर्तन
→ पीएनजीआरबी में क्षमता निर्माण — कमियां और उन्हें दूर करने के उपाय

पीएनजीआरबी समागम में प्रस्तुतियाँ - दिनांक 20-22 अप्रैल, 2026

पीएनजीआरबी ने 20 अप्रैल, 2026 को अपने पहले "समागम 2026" का उद्घाटन किया। यह एक नेतृत्व संवाद मंच था, जिसमें सभी प्रभागों को एक साथ लाया गया। इस अवसर पर तेल और गैस उद्योग के वरिष्ठ नेताओं के साथ नियामक ढांचे, प्रमुख पहलों और भविष्य की प्राथमिकताओं पर चर्चा की गई।

ढाई दिनों तक चले इस कार्यक्रम में 11 विषयगत सत्र आयोजित किए गए। पहले दिन कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल जैन, गेल (इंडिया) लिमिटेड के सीएमडी श्री दीपक गुप्ता, पीएनजीआरबी के सदस्य श्री अंजनी कुमार तिवारी, गेल (इंडिया) लिमिटेड के ईडी श्री प्रवीर अग्रवाल और पीएनजीआरबी के सचिव श्री अंजन कुमार मिश्रा उपस्थित रहे।





सम्मेलन - ऊर्जा सुरक्षा: भारत में गैस की मांग की अगली लहर को गति देना - दिनांक 9-10 अप्रैल, 2026

पीएनजीआरबी एवं आईजीएल द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित दो-दिवसीय सम्मेलन "ऊर्जा सुरक्षा: भारत में गैस मांग की अगली लहर को गति देना" में नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों एवं अन्य हिस्सेदारों ने भाग लिया और भारत के गैस-आधारित ऊर्जा भविष्य को सुदृढ़ बनाने पर विचार-विमर्श किया।

सम्मेलन में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के सचिव डॉ. नीरज मित्तल सहित कई उद्योग विशेषज्ञों ने भाग लिया। उन्होंने











भारत की गैस-आधारित अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए रणनीतिक योजना प्रस्तुत की। दो दिनों तक चले पैनल सत्रों में स्वच्छ और मजबूत ऊर्जा भविष्य के लिए अवसंरचना के विस्तार, सहायक नीतियों और उद्योग के बीच सहयोग पर विशेष जोर दिया गया।

पीएनजीआरबी में पीएनजी ड्राइव 2.0 का समापन समारोह

पीएनजी ड्राइव 2.0 का समापन समारोह पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव, पीएनजीआरबी के अध्यक्ष, बोर्ड के सदस्यों, पीएनजीआरबी के सचिव तथा तेल विपणन कंपनियों (ओएमसी) और तेल एवं गैस क्षेत्र की प्रमुख इकाइयों के वरिष्ठ प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित किया गया।

1 जनवरी से 30 जून 2026 तक संचालित पीएनजी ड्राइव 2.0 ने घरेलू पाइप्ड प्राकृतिक गैस (डीपीएनजी) को अपनाने में तेजी लाई, नगर गैस वितरण (सीजीडी) अवसंरचना के बेहतर उपयोग को बढ़ावा दिया तथा भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन को गति प्रदान की।

इस अभियान के अंतर्गत 15.31 लाख पीएनजी पंजीकरण, 12.10 लाख पीएनजी कनेक्शन, 13.37 लाख बिलयुक्त उपभोक्ता, 5,991 वाणिज्यिक कनेक्शन, 1,193 औद्योगिक कनेक्शन, 474 सीएनजी स्टेशन, 32 नए जिलों में सीजीडी आपूर्ति का विस्तार तथा 23 नए भौगोलिक क्षेत्रों (जीए) को प्राकृतिक गैस पाइपलाइन (एनजीपीएल) नेटवर्क से जोड़ने जैसी तमाम उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त हुईं।

पीएनजी ड्राइव 2.0 स्वच्छ घरों, सुरक्षित रसोईघरों तथा गैस-आधारित सतत अर्थव्यवस्था के निर्माण के प्रति पीएनजीआरबी की निरंतर प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करता है।



पीएनजीआरबी में दिवसों का आयोजन

पीएनजीआरबी में संविधान दिवस का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन - 26 नवम्बर 2025

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने आज 26 नवम्बर 2025 को **संविधान दिवस शपथ ग्रहण समारोह** का आयोजन किया, जिसमें न्याय, स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के संविधान प्रदत्त मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया गया।

यह अवसर भारत के संविधान के प्रति सम्मान व्यक्त करने तथा पारदर्शी, उत्तरदायी एवं सुशासन की कार्य संस्कृति को और सुदृढ़ करने के संकल्प का प्रतीक रहा।



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 का आयोजन

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने भारत के ऊर्जा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलाओं की प्रतिभा, समर्पण और नेतृत्व को संबोधित करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2026 का आयोजन किया। इस अवसर के महत्व को देखते हुए पीएनजीआरबी की महिला कर्मचारियों के लिए विशेष लंच का आयोजन किया गया। सभी ने साथ समय बिताया और इस अवसर को उत्साह के साथ मनाया।





विश्व पर्यावरण दिवस 2026 का आयोजन





पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित करते हुए विश्व पर्यावरण दिवस 2026 मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत सदस्य (वाणिज्यिक) श्री अंजनी कुमार तिवारी, सदस्य (तकनीकी) श्री जयंत नारायण दास और सचिव, पीएनजीआरबी, श्री अंजन कुमार मिश्रा ने पीएनजीआरबी के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ वृक्षारोपण अभियान से की। यह अभियान पर्यावरण संरक्षण के प्रति पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

उत्सव के तहत सततता प्रकोष्ठ ने "जलवायु और हमारे भविष्य के लिए प्रकृति से प्रेरणा" विषय पर तीन दिवसीय कर्मचारी सहभागिता कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें निबंध लेखन, स्लोगन लेखन और पोस्टर बनाने की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। इसमें प्रतिभागियों की रचनात्मकता और उत्साहपूर्ण भागीदारी के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। यह आयोजन सतत विकास और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देने के लिए पीएनजीआरबी की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



हिंदी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है।
हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार करना हो चाहिए
- रवीन्द्र नाथ ठाकुर

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 का आयोजन

पीएनजीआरबी ने "स्वस्थ उम्र के लिए योग" शीर्षक के तहत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 मनाया। इस अवसर पर योग विशेषज्ञ श्रीमती हिमानी शोखंड के नेतृत्व में योग सत्र का आयोजन किया गया।

इस योग सत्र में पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन और सचिव श्री अंजन कुमार मिश्रा सहित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। इस पहल से स्वस्थ जीवन, बेहतर स्वास्थ्य और संतुलित जीवनशैली के लिए योग के महत्व को बढ़ावा मिला।



पीएनजीआरबी में स्वच्छता पखवाड़ा 2026 का सफल आयोजन

पीएनजीआरबी ने "स्वस्थ उम्र के लिए योग" शीर्षक के तहत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 मनाया। इस अवसर पर योग विशेषज्ञ श्रीमती हिमानी शोखंड के नेतृत्व में योग सत्र का आयोजन किया गया।

इस योग सत्र में पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन और सचिव श्री अंजन कुमार मिश्रा सहित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। इस पहल से स्वस्थ जीवन, बेहतर स्वास्थ्य और संतुलित जीवनशैली के लिए योग के महत्व को बढ़ावा मिला।



पखवाड़े के दौरान कार्मिकों ने पोस्टर बनाने, स्लोगन लिखने, शुभंकर (मैस्कॉट) बनाने, बेकार सामग्री से उपयोगी वस्तुएँ बनाने, स्वच्छता रैली, कार्यस्थल की सफाई और वृक्षारोपण जैसी विभिन्न गतिविधियों में उत्साह से भाग लिया। इन गतिविधियों से स्वच्छता और सतत विकास की भावना को बढ़ावा मिला।

स्वच्छता पखवाड़े के समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यस्थल को स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखने में उत्कृष्ट योगदान के लिए स्वच्छता कर्मचारियों को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया।





कार्यालय में भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

पीएनजीआरबी ने भारत का 80वां स्वतंत्रता दिवस गर्व, देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना के साथ मनाया। समारोह में 'वंदे मातरम्' और राष्ट्रगान के सामूहिक गान ने पूरे वातावरण को देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत कर दिया।

इस अवसर पर पीएनजीआरबी के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन; सदस्य (तकनीकी) श्री जयंत नारायण दास; तथा पीएनजीआरबी के वरिष्ठ अधिकारियों और विशेषज्ञ सलाहकार एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी ने स्वतंत्रता सेनानियों के साहस एवं बलिदान को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस समारोह ने राष्ट्र सेवा तथा सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने की पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता को दर्शाया।



व्याख्यान/प्रशिक्षण/कार्यशालाएं

पीएनजीआरबी में 23 अप्रैल 2026 को रणनीतिक हाइड्रोकार्बन भंडार पर विशेष व्याख्यान का आयोजन





पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) में रणनीतिक हाइड्रोकार्बन भंडार विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसे इंडियन स्ट्रेटेजिक पेट्रोलियम रिजर्व्स लिमिटेड के पूर्व सीईओ एवं प्रबंध निदेशक श्री एच.पी.एस. आहूजा द्वारा व्याख्यान दिया गया।

सत्र के दौरान भारत में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की भंडारण सुविधाओं और उनकी क्षमता के बारे में जानकारी दी गई। रणनीतिक भंडार के लिए उपयुक्त भौगोलिक क्षेत्रों तथा हाइड्रोकार्बन भंडार के निर्माण और रखरखाव से जुड़े तकनीकी, सुरक्षा संबंधी पहलुओं, कार्यप्रणालियों और तकनीकों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

चर्चा में भारत की ऊर्जा सुरक्षा और लंबे समय तक ऊर्जा आपूर्ति को मजबूत बनाए रखने में रणनीतिक भंडारों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विशेष जोर दिया गया।

पीएनजीआरबी द्वारा 'अंतरंग व्यापार निषेध निषेध विनियम, 2015' पर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन - 30.01.2026

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड (पीएनजीआरबी) ने भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा लागू "अंतरंग व्यापार निषेध विनियम, 2015" पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अंतरंग व्यापार से जुड़े नियमों, अप्रकाशित मूल्य-संवेदनशील सूचना (यूपीएसआई) और नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। प्रशिक्षण में बाजार में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनाए रखने में इन नियमों की भूमिका के बारे में भी जानकारी दी गई।

सेबी के वरिष्ठ अधिकारियों—श्री अलियासगर एस. मिथवानी, कार्यकारी निदेशक; सुश्री वर्षा अग्रवाल, महाप्रबंधक; और श्री जावेद ज़मान टी. एस., सहायक महाप्रबंधक—ने उदाहरणों और केस के आधार पर चर्चा करते हुए महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। सत्र का समापन पीएनजीआरबी के सदस्य (निगरानी एवं अवसंरचना) श्री ए. रमना कुमार और सदस्य (तकनीकी) श्री जयंत नारायण दास के उद्बोधन से हुआ। उन्होंने नैतिक आचरण, बेहतर शासन और कर्मचारियों की क्षमता बढ़ाने के लिए लगातार प्रशिक्षण के प्रति पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता दोहराई।





पीएनजीआरबी में एआई के उपयोग पर प्रशिक्षण सत्र का आयोजन - 9 मार्च 2026

पीएनजीआरबी के आईटी प्रभाग ने एआई के उपयोग और प्रशासनिक कार्यों में एआई के इस्तेमाल पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य अधिकारियों और कर्मचारियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर आधारित उपकरणों और उनके व्यावहारिक उपयोग की जानकारी देना था। इससे काम को अधिक आसान और प्रभावी बनाने, उत्पादकता बढ़ाने और बेहतर निर्णय लेने में मदद मिल सकेगी।

सत्रों के दौरान प्रशासनिक कार्यों में एआई के उपयोग, डेटा विश्लेषण, कार्यप्रवाह स्वचालन, दस्तावेज़ प्रबंधन तथा स्मार्ट कार्यप्रणाली से जुड़े विभिन्न उपयोग मामलों पर चर्चा की गई। इन कार्यशालाओं ने तकनीक-सक्षम, दक्ष एवं भविष्य-उन्मुख कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रति पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता को और मजबूत किया।



पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड में हिंदी कार्यशाला का आयोजन - 26 फरवरी 2026

पीएनजीआरबी में 26 फरवरी 2026 को 'राष्ट्रभाषा और राजभाषा का स्वरूप: चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन विशिष्ट अतिथि (प्रो.) डॉ. अपर्णा सारस्वत, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया।

कार्यशाला में पीएनजीआरबी के सचिव श्री अंजन कुमार मिश्रा जी ने विशिष्ठ अतिथि प्रो. डॉ. अपर्णा सारस्वत को गुलदस्ता, पुस्तक और स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।

कार्यशाला में कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इससे भविष्य में अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा में करने के लिए अच्छा और सकारात्मक माहौल बना।







हिंदी कार्यशाला की झलकियां

पॉश अधिनियम, 2013 पर कार्यशाला का आयोजन - 15 मई 2026

पीएनजीआरबी ने अपने अधिकारियों और कर्मचारियों में जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 पर "जांच प्रक्रिया के चरण" विषय पर एक जागरूकता सत्र आयोजित किया।

राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व संयुक्त सचिव और आईएसटीएम की पूर्व निदेशक डॉ. सुनीता एच. खुराना ने इस सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कार्यस्थल पर सुरक्षा, पॉश जांच के विभिन्न चरणों, आंतरिक समिति की भूमिका, शिकायतों की समय-सीमा, गोपनीयता तथा निष्पक्ष और साक्ष्य-आधारित जांच के महत्व के बारे में जानकारी दी।

कार्यशाला में पीएनजीआरबी के अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। आंतरिक समिति के सदस्य भी इस सत्र में शामिल हुए। यह कार्यक्रम सुरक्षित, समावेशी और सम्मानजनक कार्यस्थल बनाने के लिए पीएनजीआरबी की प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।



पॉश कार्यशाला की झलकियां

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में राजभाषा और भारतीय भाषाओं का भविष्य



सुश्री मीता सिंह
सहायक परामर्शदाता
(प्रशासन प्रभाग)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में आधिकारिक और भारतीय भाषाओं का भविष्य एक महत्वपूर्ण और समावेशी परिवर्तन की ओर अग्रसर है, जो मुख्यतः व्यापक सरकारी पहलों और तकनीकी प्रगति से प्रेरित है। किसी एक भाषा के प्रभुत्व को बढ़ावा देने के बजाय, भाषाई विविधता को बनाए रखने, संचार अंतराल को पाटने और भारत की विशाल गैर-अंग्रेजी भाषी आबादी के लिए डिजिटल समावेशन सुनिश्चित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ उठाया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमाता (एआई) के युग में राजभाषाओं और भारतीय भाषाओं का भविष्य एक महत्वपूर्ण विषय है । एआई के विकास ने भाषा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है, और यह भाषा के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के आगमन ने भाषाओं के साथ हमारे संवाद के तरीके में क्रांति ला दी है। एआई के ज़रिए, भाषाओं का अनुवाद ज़्यादा सटीक और कुशलता से किया जा सकता है, और भाषा संबंधी बाधाओं को दूर किया जा सकता है। लेकिन आधिकारिक भाषाओं और भारतीय भाषाओं के भविष्य के लिए इसका क्या अर्थ है? इस निबंध में, हम आधिकारिक भाषाओं और भारतीय भाषाओं पर एआई के प्रभाव और एआई के युग में इन भाषाओं के भविष्य का पता लगाएँगे।

राजभाषाओं का महत्व-

राजभाषाएँ वे भाषाएँ होती हैं जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होती है और उनका प्रयोग किया जाता है। ये वे भाषाएँ हैं जिनका प्रयोग आधिकारिक दस्तावेज़ों, सरकारी कार्यवाहियों और सार्वजनिक सेवाओं में किया जाता है। राजभाषाएँ किसी देश के कामकाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि ये संचार और प्रशासन के लिए एक साझा भाषा प्रदान करती हैं। आधिकारिक भाषाओं पर एआई का प्रभाव-एआई में आधिकारिक भाषाओं को व्यापक रूप से प्रभावित करने की क्षमता है। एआई के माध्यम से, आधिकारिक भाषाओं का अधिक सटीक और कुशल अनुवाद किया जा सकता है, और भाषा संबंधी बाधाओं को दूर किया जा सकता है। इससे विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों के लिए अधिक सुलभता और समावेशिता संभव हो सकती है। इसके अतिरिक्त, एआई डिजिटल संसाधन और उपकरण बनाकर आधिकारिक भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद कर सकता है जो इन भाषाओं को सिखाने और सीखने में मदद कर सकते हैं।

भारतीय भाषाओं का महत्व-

भारतीय भाषाएँ भारत के लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ हैं। ये भारतीय संस्कृति और पहचान का अभिन्न अंग हैं। भारतीय भाषाएँ लाखों लोगों द्वारा बोली जाती हैं और इनकी एक समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत है। भारतीय भाषाएँ भारत की विविधता और बहुलवाद का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। भारतीय भाषाओं पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव-कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) भारतीय भाषाओं पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के माध्यम से, भारतीय भाषाओं का अधिक सटीक और कुशल अनुवाद किया जा सकता है, और भाषा संबंधी बाधाओं को दूर किया जा सकता है। इससे विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों के लिए पहुँच और समावेशिता में वृद्धि हो सकती है। इसके अतिरिक्त, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ऐसे डिजिटल संसाधन और उपकरण बनाकर भारतीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन में मदद कर सकती है जो इन भाषाओं को सिखाने और सीखने में मदद कर सकते हैं।

भारत के भाषाई परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की परिवर्तनकारी भूमिका

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस बात की पुनर्कल्पना कर रही है कि डिजिटल युग में भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं और सैकड़ों बोलियों का उपयोग और संरक्षण कैसे किया जाता है। इसका प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि भाषा प्रत्येक नागरिक के लिए प्रौद्योगिकी, शिक्षा और प्रशासन की आधारशिला बने।

प्रमुख सरकारी पहल और प्लेटफ़ॉर्म:

भारत सरकार का इंडियाएआई मिशन और डिजिटल इंडिया भाषानी पहल इस परिवर्तन के केंद्र में हैं, जो भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए एआई-संचालित समाधान प्रदान करते हैं:

- भाषिनी (भारत के लिए भाषा इंटरफ़ेस): राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) के अंतर्गत एक अग्रणी एआई-आधारित भाषा अनुवाद प्लेटफ़ॉर्म। यह 22 से अधिक अनुसूचित भाषाओं और कई जनजातीय भाषाओं का समर्थन करते हुए, वास्तविक समय में वाक्-से-वाक् और पाठ-से-पाठ अनुवाद सेवाएँ प्रदान करता है। भाषिनी को सीपीजीआरएएमएस शिकायत पोर्टल और भारतीय रेलवे पूछताछ प्रणालियों जैसी सरकारी सेवाओं में एकीकृत किया गया है।
- भारतजेन एआई: भारत का पहला सरकारी वित्त पोषित, घरेलू मल्टीमॉडल वृहद भाषा मॉडल (एलएलएम) जो 22 भारतीय भाषाओं का समर्थन करता है और पाठ, भाषण और छवि समझ को एकीकृत करता है।
- आदि-वाणी: 2024 में लॉन्च किया जाने वाला एक एआई-संचालित प्लेटफॉर्म, जो संताली, भीली और गोंडी जैसी आदिवासी भाषाओं के वास्तविक समय अनुवाद और संरक्षण के लिए समर्पित है, जो पारंपरिक रूप से मौखिक संचरण पर निर्भर हैं।
- एआईकोश (डेटासेट प्लेटफॉर्म): यह प्लेटफॉर्म भारतीय एआई मॉडलों के प्रशिक्षण के लिए बड़े, उच्च गुणवत्ता वाले डेटासेट विकसित कर रहा है, जो डिजिटल पांडुलिपियों, लोककथाओं और सरकारी अभिलेखों से डेटा का लाभ उठा रहा है।

अवसर और प्रभाव:

एआई विभिन्न क्षेत्रों में समावेशिता और नवाचार के लिए व्यापक अवसर प्रस्तुत करता है:

समावेशी शासन: एआई उपकरण सरकारी दस्तावेजों, निर्णयों (जैसे, सर्वोच्च न्यायालय के मामलों को स्थानीय भाषाओं में) और सेवाओं का अनुवाद करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि नागरिक अपनी मूल भाषा में जुड़ सकें।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा: एआई-संचालित शिक्षण ऐप और मेडिकल चैटबॉट स्थानीय बोलियों में जानकारी और सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच और परिणामों में सुधार हो सकता है। तकनीकी पुस्तकों सहित शैक्षिक सामग्री का अनुवाद अनुवादक ऐप और ई-कुंभ पोर्टल के माध्यम से कई भारतीय भाषाओं में किया जा रहा है।

आर्थिक विकास: ई-कॉमर्स, डिजिटल भुगतान (वॉयस-सक्षम यूपीआई) और क्षेत्रीय भाषाओं में नौकरी पोर्टल तक पहुंच को सक्षम करके, एआई ने करोड़ों उपयोगकर्ताओं के लिए बाजार खोल दिया है, जो अपनी मूल भाषा में सामग्री पसंद करते हैं।

सांस्कृतिक संरक्षण: प्रौद्योगिकी लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण और संरक्षण योजना (एसपीपीईएल) और भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल संग्रह संचयिका जैसी पहलों के माध्यम से लुप्तप्राय भाषाओं को दस्तावेजित और डिजिटलीकृत करने में मदद करती है।एआई डिजिटल संसाधनों और उपकरणों का निर्माण करके भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद कर सकता है, जो इन भाषाओं को सिखाने और सीखने में मदद कर सकते हैं।



चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा

यद्यपि संभावनाएँ अपार हैं, फिर भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इनमें कई बोलियों के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले, लेबल किए गए डेटासेट की कमी और एआई एल्गोरिदम में पूर्वाग्रहों को कम करने की आवश्यकता शामिल है।एआई के युग में राजभाषाओं और भारतीय भाषाओं के भविष्य में कई चुनौतियां भी हैं:

- **भाषा की सीमाएं:** एआई भाषा की सीमाओं को पार करने में मदद कर सकता है, लेकिन यह भाषा की सीमाओं को पूरी तरह

से दूर नहीं कर सकता है।

- सांस्कृतिक प्रभाव/सांस्कृतिक संवेदनशीलता: एआई भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को प्रभावित कर सकता है, जिससे भाषा की संस्कृति और पहचान पर प्रभाव पड़ सकता है। यदि AI को विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों और बारीकियों को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया है, तो यह सांस्कृतिक रूप से असंवेदनशील भी हो सकता है।

- नैतिक चिंताएं: एआई के विकास के साथ नैतिक चिंताएं भी हैं, जैसे कि भाषा के उपयोग की नैतिकता और भाषा के स्वामित्व की नैतिकता।

- भाषा संबंधी बाधाएँ: हालाँकि एआई भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने में मदद कर सकता है, लेकिन यह नई बाधाएँ भी पैदा कर सकता है। उदाहरण के लिए, अगर एआई को विभिन्न भाषाओं को समायोजित करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया है, तो यह विभिन्न भाषाएँ बोलने वालों के बीच एक डिजिटल विभाजन पैदा कर सकता है।

-डिजिटल विभाजन: यदि एआई उन लोगों के लिए सुलभ नहीं है जिनके पास प्रौद्योगिकी तक पहुंच नहीं है, तो यह डिजिटल विभाजन को और भी बढ़ा सकता है।

एआई के युग में राजभाषाओं का भविष्य निम्नलिखित हो सकता है:- अनुवाद की सुविधा: एआई के साथ राजभाषाओं का अनुवाद अधिक सटीक और कुशलता से किया जा सकता है।

- भाषा की सुलभता: एआई राजभाषाओं को अधिक सुलभ बनाने में मदद कर सकता है, जिससे उनका उपयोग अधिक लोगों द्वारा किया जा सकता है।एआई अनुवाद और व्याख्या सेवाएं प्रदान करके भाषाओं को अधिक सुलभ बनाने में मदद कर सकता है, जो भाषा संबंधी बाधाओं को तोड़ने में मदद कर सकता है।

- भाषा की सुरक्षा: एआई राजभाषाओं की सुरक्षा में मदद कर सकता है, जिससे उनका उपयोग अधिक सुरक्षित हो सकता है।- भाषा की प्रगति: एआई भारतीय भाषाओं की प्रगति में मदद कर सकता है, जिससे उनका उपयोग अधिक व्यापक हो सकता है।

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान: एआई लोगों को विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के बारे में जानकारी साझा करने और सीखने के लिए एक मंच प्रदान करके सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी सुविधाजनक बना सकता है।

एआई युग में भारतीय भाषाओं का भविष्य भाषा दान कार्यक्रम जैसी पहलों के माध्यम से निरंतर सामुदायिक सहयोग पर निर्भर करता है, जहाँ नागरिक एआई सटीकता में सुधार के लिए ध्वनि और पाठ के नमूने प्रदान करते हैं। यह सहयोगात्मक, समावेशी दृष्टिकोण भारत को दुनिया भर की विविध आबादी के लिए अनुकूलित बहुभाषी एआई समाधान विकसित करने में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित कर रहा है।निष्कर्षतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के युग में राजभाषाओं और भारतीय भाषाओं का भविष्य जटिल और बहुआयामी है। हालाँकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में इन भाषाओं को व्यापक रूप से प्रभावित करने की क्षमता है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ और अवसर भी हैं जिन पर विचार करना आवश्यक है। इन चुनौतियों और अवसरों को समझकर, हम यह सुनिश्चित करने के लिए कार्य कर सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का विकास और उपयोग इस प्रकार किया जाए जिससे भाषा संरक्षण, भाषा सुलभता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिले।



पीएनजीआरबी में राजभाषा से संबंधित गतिविधियां

वित्तीय वर्ष के दौरान आयोजित कार्यशालाएं

राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुपालन में कार्यालय में हिंदी में कार्य करने में कार्मिकों को आ रही कठिनाइयों के निराकरण तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नियमित रूप से हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इन कार्यशालाओं में राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की जानकारी देने के साथ-साथ सरकारी कामकाज में हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग का अभ्यास कराया जाता है। वर्षभर में कुल 06 हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गई।

वर्ष के दौरान निम्नलिखित विषयों पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया—

क्रमांक	दिनांक	कार्यशाला का विषय
1.	21 मई 2025	राजभाषा अधिनियम एवं नियम की संपूर्ण जानकारी
2.	13 अगस्त 2025	राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन
3.	20 नवंबर 2025	हिंदी वॉइस टाइपिंग में निपुणता
4.	24 दिसंबर 2025	राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) और मंगल फ़ॉन्ट में हिंदी टाइपिंग
5.	26 फरवरी 2026	राष्ट्रभाषा और राजभाषा का स्वरूप: चुनौतियां एवं संभावनाएं
6.	16 जून 2026	हिंदी आईटी टूल एवं उनकी उपयोगिता



उक्त कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रावधानों, राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन तथा कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही, हिंदी में कार्य करने की व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए वॉइस टाइपिंग, मंगल फ़ॉन्ट में हिंदी टाइपिंग तथा विभिन्न हिंदी आईटी टूल के उपयोग का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया।

विशेष रूप से राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) से संबंधित प्रावधानों तथा हिंदी टाइपिंग के अभ्यास से प्रतिभागियों को कार्यालयीन दस्तावेजों एवं पत्राचार में हिंदी के प्रभावी प्रयोग में सहायता मिली। इसी प्रकार, 'राष्ट्रभाषा और राजभाषा का स्वरूप: चुनौतियां एवं संभावनाएं' विषयक कार्यशाला के माध्यम से राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा की संवैधानिक एवं व्यावहारिक स्थिति तथा हिंदी के समक्ष वर्तमान चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया गया।

वित्तीय वर्ष के दौरान आयोजित अंतिम कार्यशाला में हिंदी आईटी टूल एवं उनकी उपयोगिता पर विशेष बल दिया गया। इससे कार्मिकों को तकनीकी माध्यमों का उपयोग करते हुए हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने, टाइपिंग एवं अन्य डिजिटल कार्यों को अधिक सुगम और प्रभावी ढंग से संपादित करने की जानकारी प्राप्त हुई।

कुल मिलाकर, हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सरल, सहज एवं प्रभावी बनाने में सहायता मिली। कार्यशालाओं में सैद्धांतिक जानकारी के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया गया, जिससे कार्मिकों को हिंदी में सरकारी कामकाज करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने में उपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस प्रकार, राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुरूप आयोजित इन कार्यशालाओं का उद्देश्य सफलतापूर्वक प्राप्त हुआ तथा कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में यह एक प्रभावी पहल सिद्ध हुई।



कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा, 2026 का आयोजन

पीएनजीआरबी में दिनांक 16 सितंबर, 2026 से 30 सितंबर, 2026 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार इस वर्ष हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के संदेश के माध्यम से हुआ। इस समारोह में पीएनजीआरबी के निदेशक (प्रशासन प्रभाग एवं मानव संसाधन), और सहायक परामर्शदाता (राजभाषा) की प्रतिभागिता रही।

पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई :-

दिनांक 17.09.2026 को राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इस प्रतियोगिता में राजभाषा नियम, अधिनियम, नीति एवं हिन्दी पुस्तकों के लेखकों से संबंधित और सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए और इस प्रतियोगिता में 52 कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

दिनांक 18.09.2026 को वरिष्ठ अधिकारियों के लिए हिंदी हस्ताक्षर लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 21.09.2026 को हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता (स्वरचित) का आयोजन बोर्ड के सदस्य, श्री अंजनी कुमार तिवारी और सदस्य, श्री जयंत नारायण दास की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें 16 कार्मिकों ने सहभागिता की।

दिनांक 22.09.2026 को "हिंदी वाद-प्रतिवाद प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। जिसमें कार्मिकों ने सहभागिता की।

दिनांक 23.09.2026 को राजभाषा नीति एवं उसका कार्यान्वयन विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में राजभाषा नीति के उद्देश्यों, सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग तथा राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुपालन पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा हिंदी में कार्य करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों के समाधान के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यशाला में राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में प्रत्येक कार्मिक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व पर भी विशेष बल दिया गया।

दिनांक 24.09.2025 को हिंदी श्रुतलेखन एवं शब्द ज्ञान प्रतियोगिता (डिक्टेशन अर्थात् सुनकर लिखना) (केवल बहु कार्यकारी कर्मचारी/एमटीएस के लिए) का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने भाग लिया।

दिनांक 25.09.2025 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कार्मिकों ने बढ़-चढ़ के भाग लिया।

दिनांक 28/09/2026 को हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कार्मिकों ने भाग लिया।

दिनांक 30.09.2026 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। माननीय अध्यक्ष एवं बोर्ड के सदस्यों तथा सचिव ने अपने कर-कमलों से उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए।

माननीय अध्यक्ष एवं बोर्ड के सदस्यों ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं, कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन आयोजनों में कार्मिकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालयीन कार्यों में इसके प्रभावी प्रयोग को केवल हिंदी पखवाड़े तक सीमित न रखते हुए वर्षभर निरंतर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समय-समय पर हिंदी निबंध, वाद-विवाद, भाषण, कविता-पाठ, प्रश्नोत्तरी, टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन जैसी प्रतियोगिताओं तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे कार्मिकों को हिंदी के प्रयोग के लिए निरंतर प्रेरणा एवं अवसर प्राप्त हो सकें।

उन्होंने आगे कहा कि नियमित रूप से आयोजित ऐसी गतिविधियों से कार्मिकों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी तथा वे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित

होंगे। इससे कार्यालय में राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को भी गति मिलेगी और हिंदी में कार्य करने की स्वस्थ एवं सकारात्मक कार्य-संस्कृति विकसित होगी। उन्होंने सभी कार्मिकों से आह्वान किया कि वे राजभाषा हिंदी को अपने नियमित कार्यालयीन कार्यों का अभिन्न हिस्सा बनाते हुए अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें तथा राजभाषा के संवर्धन में अपना सक्रिय योगदान दें। माननीय अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्यों ने सभी विजेताओं प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी।

पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियॉं निम्नानुसार हैं :-













राजभाषा हिंदी: हमारी प्रशासनिक पहचान और गौरव



श्री राहुल श्रीवास्तव
कैशियर
(प्रशासन प्रभाग)

14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार, हमारे देश की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी है। कार्यालयी संदर्भ में राजभाषा का सीधा अर्थ 'राज-काज की भाषा' है, अर्थात् वह भाषा जिसका उपयोग हमारे दैनिक प्रशासनिक कार्यों, फाइलों और बैठकों में किया जाता है।

ऐतिहासिक और संवैधानिक आधार

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रनायकों ने हिंदी को देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा माना था। आजादी के बाद इसे प्रशासनिक कामकाज की मुख्य भाषा बनाया गया। संविधान के अनुच्छेद 351 के तहत केंद्र सरकार को यह जिम्मेदारी दी गई है कि वह हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास को बढ़ावा दे। वहीं, राजभाषा अधिनियम, 1963 के अंतर्गत कार्यालयों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के प्रयोग की भी व्यवस्था की गई है, ताकि सभी विभागों में समन्वय बना रहें।

कार्यालयी कामकाज में भूमिका और वर्तमान स्थिति

आज के डिजिटल युग में कार्यालयों का स्वरूप बदला है। ई-ऑफिस (e-Office) प्रणालियों, राजभाषा विभागों के सहयोग और कंप्यूटर टूल्स के कारण अब सरकारी काम हिंदी में करना बहुत आसान हो गया है। हर तिमाही में होने वाली राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें और कार्यालयों में आयोजित होने वाले 'हिंदी पखवाड़े' हमें अपने दैनिक कार्यों में इसके उपयोग की याद दिलाते हैं।

हालाँकि, आज भी हमारी मुख्य चुनौती अनुवाद पर निर्भरता को कम करना है। कार्यालयी फाइलों पर केवल औपचारिकता के लिए हिंदी का प्रयोग करने के बजाय, हमें मूल रूप से हिंदी में टिप्पण और प्रारूपण करने की आदत डालनी होगी।

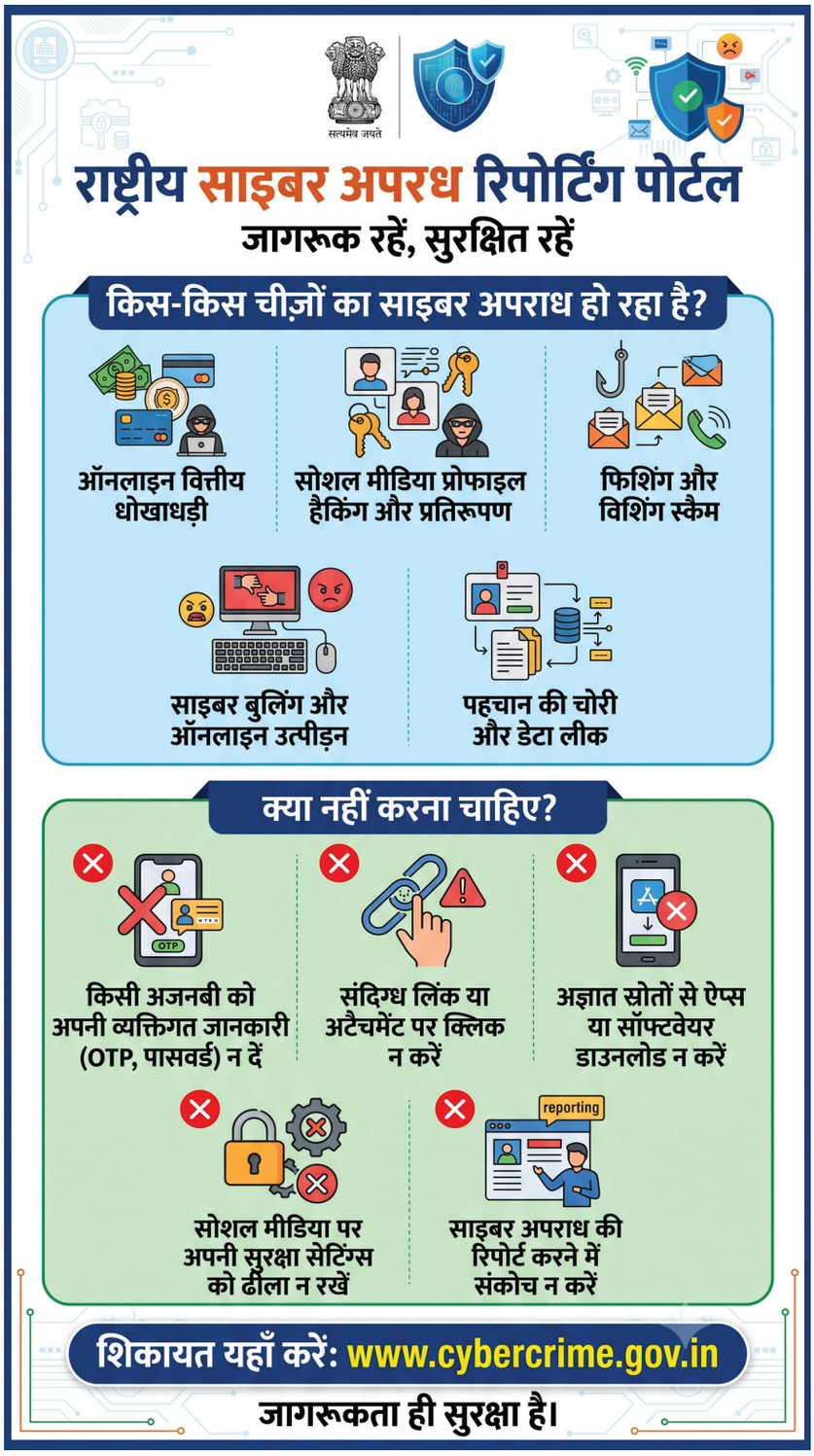
हमारा संकल्प

एक जिम्मेदार लोक सेवक और कर्मचारी होने के नाते, राजभाषा का सम्मान करना और अपने दायित्वों में इसका सही प्रयोग करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है। हर साल 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाना तभी सार्थक होगा, जब हम अपने कार्यालय के दैनिक कार्यों में सहजता और गर्व के साथ हिंदी को अपनाएंगे। आइए, अपनी भाषा को केवल फाइलों तक सीमित न रखकर इसे अपने कार्य-व्यवहार का हिस्सा बनाएं।





श्री आशुतोष पवन
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(आईटी प्रभाग)



क्योंकि... तुम माँ नहीं हो!



श्रीमती मेघा सिंह
प्रधान निजी सचिव
(अध्यक्ष कार्यालय)

पुत्र-वियोग में तड़पती गांधारी जब श्रीकृष्ण को शाप देने अग्रसर होती हैं, तब श्रीकृष्ण शांत स्वर में कहते हैं—

माते, मैं शोक, मोह और पीड़ा—इन सबसे परे हूँ।
न मुझे विजय का गर्व है, न पराजय का विषाद। न मान मुझे बाँधता है, न अपमान।
न जीवन, न मृत्यु—किसी में मैं आबद्ध नहीं हूँ। मैं न सत्य में बँधा हूँ, न असत्य में।
काल और महाकाल—दोनों मेरे अधीन हैं; मैं उन्हीं के माध्यम से अपने कार्य सिद्ध कराता हूँ।

हे माता, यह युद्ध अवश्यम्भावी था।
जो चले गए हैं, उनके लिए विलाप मत करो। जो शेष हैं—उन्हें स्वीकारो।
वर्तमान को अपनाओ, क्योंकि अतीत का शोक ही दुख का मूल है।

कृष्ण की वाणी सुनकर गांधारी विलाप करती हुई कह उठती हैं— कृष्ण...!!!
तुम यह सब कह सकते हो, क्योंकि...., क्योंकि..., क्योंकि, तुम माँ नहीं हो।

तुम क्या जानो एक माँ की ममता क्या होती है? तुम क्या समझो पुत्र-शोक की असहनीय पीड़ा?

तुम मोह-त्याग और ज्ञान की बातें करते हो,
तो जाओ—अपनी माता देवकी से पूछो कि पुत्र-वियोग क्या होता है!

पूछना उनसे—

कैसा लगता था जब कंस एक-एक कर उसके कलेजे के टुकड़े छीन लेता था।
जब उसका दूध उतरता था और गोद सूनी रह जाती थी,
तब उसकी आत्मा पर क्या बीतती थी—
यह पूछना... वासुदेव से भी पूछना...!!
इतना कहकर गांधारी धरती पर गिर पड़ती हैं। कृष्ण उन्हें संभालते हैं, उनके अश्रु पोंछते हैं।
रुँधे कंठ से गांधारी फिर कहती हैं— कृष्ण...
तुम्हारी माता ने छह पुत्र खोए, पर मैंने अपने सौ पुत्र खो दिए हैं...!
कृष्ण...!! कृष्ण करुण स्वर में उत्तर देते हैं—
माते,

कौरवों ने स्वयं वह मार्ग चुना, जिसका अंत विनाश ही था।
मैं किसी के कर्म-क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। कर्म का फल तो प्रत्येक को भोगना ही पड़ता है।

अश्रुपूरित नेत्रों से कृष्ण को देखते हुए गांधारी कहती हैं—
हूँ... यह कहना सरल है, केशव। पर एक माँ के लिए उसका पुत्र ही सर्वस्व होता है।
वह योग्य हो या अयोग्य— माँ की ममता पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
लोग कहते हैं तुम आदि ब्रह्म हो, पर हो तो पुरुष ही — जिसका हृदय वज्र का होता है।
माता पार्वती भी अपने पुत्र गणेश का शोक सहन नहीं कर पाईं।

हे कृष्ण, कभी "माँ" बनकर देखना—
तब जानोगे कि तुम्हारा गीता-ज्ञान ममता के सामने कितना ठहर पाता है।
यदि मोह-ममता अज्ञान है, तो फिर तुमने इस संसार की रचना ही क्यों की?

बना लेते केवल ज्ञानियों का लोक— मोह और ममता की क्या आवश्यकता थी?
तुम भी जानते हो—
तुम्हारा ज्ञान नीरस, निर्जीव और इतना कठोर यथार्थवादी है कि उससे संसार नहीं चल सकता।
इसीलिए तुम स्वयं मोह और ममता का सहारा लेते हो।
माते,..... !
जिसने आपकी पुत्रवधू का अपमान किया, उस छाती का चीरना अनिवार्य था
जिसने द्रौपदी के केशों को छूने का दुस्साहस किया, इनका विनाश आवश्यक था,
उस जंघा का टूटना आवश्यक था, जिसने आपकी पुत्रवधू का अपमान किया।
अन्यथा मनुष्य इन कृत्यों को आदर्श बना लेता और फिर शिष्ट समाज की कल्पना भी असंभव हो जाती।
जिनके लिए आप शोक कर रही हैं, वे शोक के अधिकारी नहीं हैं।

हे माता, मैं किसी भी स्थिति में धर्म का त्याग नहीं कर सकता।
क्रोध से कांपती गांधारी कठोर स्वर में कहती हैं—

हे यादव, हे माधव! मैं शिवभक्तिनी गांधारी अपने पतिव्रत धर्म से संचित पुण्य-बल से तुम्हें शाप देती हूँ—

जिस प्रकार कुरुवंश का विनाश हुआ,
उसी प्रकार सम्पूर्ण यदुवंश का भी विनाश हो!
शांत मुस्कान के साथ कृष्ण कहते हैं—

माते, यह शाप आपने मुझे नहीं— स्वयं को दिया है।
आप अपने सौ पुत्रों का शोक पूर्ण भी नहीं कर पाईं और आपने एक और पुत्र को स्वयं से छीन लिया।
माते, क्या आप मेरा शव देख पाएँगी...?
मेरा इस शरीर से कोई प्रेम नहीं। मुझे आपका शाप स्वीकार है, क्योंकि न मेरा जन्म होता है न मृत्यु।
पर माते— आपका इस शरीर से प्रेम है और आपने स्वयं को पुनः दुःख-सागर में डुबो दिया है।

कृष्ण की वाणी सुनकर गांधारी पश्चाताप से भर जाती हैं—
हे गोविंद,

कुरुवंश को तो नहीं बचा पाई, कम से कम यदुवंश को बचा लो।
मैं भिक्षा माँगती हूँ, माधव— अब और पुत्रों के शव मैं नहीं देखना चाहती।

कृष्ण करुण किंतु दृढ़ स्वर में कहते हैं—
माते,
न मैंने कुरुवंश के कर्मों में हस्तक्षेप किया, न ही यदुवंश के कर्म-क्षेत्र में करूँगा।
यदुवंशी भी अपने कर्मों का फल भोगेंगे, जैसे कुरुवंशियों ने भोगा।
मैं किसी भी स्थिति में धर्म का त्याग नहीं कर सकता।





राधे कृष्णा

मुझे बहुत दूर मत ब्याहना...!



श्री अशोक कुमार पासी
उप-परामर्शदाता
पीएनजीआरबी

(एक बेटी की पिता से माँग)

रात के ग्यारह बजे थे। डाइनिंग टेबल पर चाय ठंडी हो चुकी थी। बाबा मोबाइल पर एक के बाद एक रिश्ते देख रहे थे -- “देखो, ये लड़का कनाडा में है, ये वाला लंदन में, और ये साल का सत्तर लाख कमाता है।”

बेटी मुस्कुराई, फिर धीरे से मोबाइल उनकी ओर सरका दिया -- “बाबा! मेरा रिश्ता तय करने से पहले मेरी एक बात सुनोगे?”

बाबा ने हँस कर कहा,

“आज तक तेरी कौन-सी बात टाली है?”

वह कुछ पल चुप रही। फिर बोली, “मुझे बहुत दूर मत ब्याहना, बाबा...!”

बाबा ने सहज होकर कहा, “अब दूरियाँ कहाँ रहीं बेटा? चार घंटे की फ्लाइट है, वीडियो कॉल है, हर दिन बात हो जाएगी।”

बेटी ने सिर हिलाया, “वीडियो कॉल पर जब रोते हैं न बाबा, तो सामने वाला आँसू नहीं पोंछ सकता।”

कमरे में सन्नाटा भर गया, “ऐसी जगह मत भेजना, जहाँ आप बीमार पड़ो और मैं टिकट बुक करती रह जाऊँ। जहाँ माँ की तबीयत ख़राब हो और मैं सिर्फ़ स्क्रीन पर उनका चेहरा देख कर खुद को समझाती रहूँ कि ‘सब ठीक हो जाएगा।’ जहाँ किसी त्योहार पर घर आने से पहले मुझे छुट्टियाँ, किराया और कैलेंडर का हिसाब लगाना पड़े।”

बाबा पहली बार कुछ नहीं बोले। बेटी आगे कहती रही, “और हाँ! लड़का कितना कमाता है, ये बाद में देखना।

पहले ये देखना, कि क्या वह अपनी माँ को सिर्फ़ ‘मदर्स डे’ पर याद करता है या रोज़ उनका हाल पूछता है?"

"क्या उसे लगता है, कि रसोई सिर्फ़ औरत की ज़िम्मेदारी है या वह चाय बना कर भी, किसी का दिन आसान कर सकता है?"

"क्या किसी वेटर, ड्राइवर या चौकीदार से बात करते हुए, उसकी आवाज़ बदल जाती है?"

"क्या उसे पेड़ों से प्यार है? क्या उसे जानवरों पर दया आती है? क्या उसे ‘माफ़ करना’ कहना आता है? क्या उसे किसी के सपनों से डर नहीं लगता?"

"और बाबा! अगर किसी दिन मैं नौकरी छोड़ना चाहूँ या नौकरी करना चाहूँ, तो क्या वह दोनों फ़ैसलों में मेरे साथ खड़ा रहेगा?”

बाबा की आँखें भर आईं। उन्हें पहली बार समझ आया, कि बेटियाँ शादी के लिए लड़का नहीं चुनतीं। वे अपने बचे हुए पूरे जीवन का मौसम चुनती हैं।

कुछ दिनों बाद एक रिश्ता आया। न विदेश, न करोड़ों का पैकेज। पहली मुलाक़ात में लड़के ने मेरी बेटी से सिर्फ़ एक सवाल पूछा, “शादी के बाद तुम क्या खोना नहीं चाहती...?”

बेटी ने बिना सोचे कहा,

“अपने माँ-बाप तक बिना झिझक पहुँचने का रास्ता...!”*

लड़का मुस्कुराया, “वो रास्ता कभी बंद नहीं होगा, घर बदल सकता है, मायका नहीं...!”

बाबा ने उसी दिन रिश्ता तय कर दिया। विदाई का दिन था। बेटी कार में बैठ चुकी थी। लोग चावल उछाल रहे थे। ढोल बज रहे थे। फोटो ग्राफ़र बार-बार कह रहा था, “सर, इधर देखिए, एक

स्माइल प्लीज़!”

लेकिन बाबा की नज़र सिर्फ़ अपनी बेटी पर थी। कार चलने ही वाली थी, कि लड़का अचानक नीचे उतरा। वह बाबा के पास आया और बोला, “पापा! एक बात कहनी थी।”

बाबा ने उसकी ओर देखा। उसने कार की चाबी, बाबा के हाथ पर रख दी। और मुस्कुरा कर बोला, “ये गाड़ी जो आप मुझे गिफ्ट दे रहे, आज से आपकी है। जब भी अपनी बेटी की याद आए, किसी से पूछ कर आने की ज़रूरत मत पड़ने दीजिएगा। दरवाज़ा भी आपका है और रास्ता भी...!”

इतना सुनते ही बाबा की आँखों से आँसू बह निकलें। उन्हें पहली बार लगा, उन्होंने अपनी बेटी को किसी के घर नहीं भेजा, किसी बेटे के घर भेजा है।

कार धीरे- धीरे आगे बढ़ गई। बेटी पीछे मुड़ कर देख रही थी। बाबा वहीं खड़े थे। इस बार उनकी आँखों में बेटी को खो देने का दुख नहीं था। उसे खोने का डर ख़त्म हो जाने की शांति थी। उस शाम पहली बार उन्हें अपनी बेटी की बरसों पुरानी बात पूरी तरह समझ आई।

"बाबा! मुझे बहुत दूर मत ब्याहना...!" क्योंकि दूरी किलोमीटर में नहीं होती। दूरी वहाँ होती है, जहाँ बेटी अपने दुख से पहले यह सोचती है, “पापा को बताऊँ या उन्हें परेशान न करूँ...?”



सफलता की कहानी: एक छोटे किसान की मेहनत



सुश्री पारुल
समन्वय प्रभाग
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)

एक गाँव में रमेश नाम का एक साधारण किसान रहता था। उसके पास बहुत ज़्यादा जमीन नहीं थी और न ही आधुनिक खेती के साधन थे। घर की आर्थिक स्थिति भी कमजोर थी, लेकिन रमेश के अंदर मेहनत करने का हौसला बहुत था।

शुरुआत में वह पारंपरिक तरीकों से खेती करता था, जिससे उसे बहुत कम लाभ होता था। कई बार उसे नुकसान भी झेलना पड़ा। गाँव के कुछ लोग उसे कहते थे कि खेती से कुछ खास नहीं होगा, कोई और काम कर लो। लेकिन रमेश ने हार नहीं मानी।

एक दिन उसने कृषि विशेषज्ञों से मिलकर नई तकनीकों के बारे में जानकारी ली। उसने ड्रिप इरिगेशन, जैविक खाद और बेहतर बीजों का उपयोग शुरू किया। शुरुआत में उसे थोड़ी कठिनाई हुई, लेकिन उसने लगातार सीखते हुए मेहनत जारी रखी।



कुछ ही समय बाद उसकी फसल पहले से बेहतर होने लगी। उत्पादन बढ़ा और आमदनी भी कई गुना हो गई। अब वही लोग, जो पहले उसका मजाक उड़ाते थे, उसकी तारीफ करने लगे।

रमेश ने अपनी सफलता से यह साबित कर दिया कि मेहनत, धैर्य और सही जानकारी के साथ कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को बदल सकता है।

सीख:

सच्ची मेहनत और लगन से असंभव लगने वाला काम भी संभव हो जाता है।



छूटते रिश्ते, बचती यादें



श्री शीतला प्रसाद
लेखाकार
(वाणिज्यिक प्रभाग)

जीवन एक निरंतर चलने वाली यात्रा है। इस यात्रा में हम अनेक स्थानों पर रहते हैं, नए लोगों से मिलते हैं, रिश्ते बनाते हैं और अनगिनत यादें संजोते हैं। लेकिन समय के साथ सब कुछ बदल जाता है। जिस शहर में हम रहते हैं, जिस आँगन में खेलते हैं और जिस घर में हमारा बचपन बीतता है, एक दिन वह सब पीछे छूट जाता है।

बचपन का घर केवल ईंट और पत्थरों का बना मकान नहीं होता, बल्कि वह हमारी यादों, संस्कारों और अपनों के प्रेम का प्रतीक होता है। वहीं हमने चलना सीखा, गिरकर संभलना सीखा, जीवन के पहले सपने देखें और परिवार के स्नेह का अनुभव किया। "घर केवल रहने की जगह नहीं, बल्कि हमारी पहचान, संस्कार और अनगिनत यादों का संसार होता है। समय सब कुछ बदल देता है, पर बचपन की यादें कभी नहीं मिटतीं।"

समय हमें आगे बढ़ने के लिए मजबूर करता है। पढ़ाई, नौकरी, विवाह या अन्य कारणों से हमें अपना घर और गाँव छोड़ना पड़ता है। तब महसूस होता है कि जिन गलियों में हमारा बचपन बीता, जिन पेड़ों की छाँव में हम खेलें, वे केवल स्थान नहीं थे, बल्कि हमारे जीवन का सबसे सुंदर हिस्सा थे।

सफर भी छूट जाएगा,
शहर भी छूट जाएगा...

जहाँ पैदा हुए थे हम,
वो दर भी छूट जाएगा...

जिस आँगन में गिरे थे हम,
जहाँ सीखा संभलना था...

कभी सोचा ना था हमने,
वो घर भी छूट जाएगा...

यह कविता हमें याद दिलाती है कि जीवन में कोई भी चीज़ स्थायी नहीं है। इसलिए हमें अपने माता-पिता, परिवार, मित्रों और जन्मभूमि का सम्मान करना चाहिए। जब तक अवसर मिलें, अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना चाहिए और अच्छे कर्म करने चाहिए, क्योंकि अंत में धन-संपत्ति नहीं, बल्कि हमारी यादें और हमारे अच्छे कार्य ही लोगों के दिलों में जीवित रहते हैं।

निष्कर्ष: जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई परिवर्तन है। जो आज हमारा है, वह कल पीछे छूट सकता है। इसलिए वर्तमान को प्रेम, विनम्रता और कृतज्ञता के साथ जीना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है।





'विकास' विनाशकारी कैसे हो जाता है?



श्री शुशांक डोगरा
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(अध्यक्ष कार्यालय)

दुनिया का हर व्यक्ति और हर देश विकास चाहता है। कोई इसे उन्नति कहता है, कोई तरक्की और कोई प्रगति, लेकिन इन सबका मतलब एक ही है – विकास। अब सवाल यह है कि विकास कैसा हो और किसका हो। विकास के आधार पर दुनिया को तीन हिस्सों में बांटा गया है – पहला विकसित, दूसरा अर्धविकसित और तीसरा विकासशील। हमारे देश को विकासशील देशों की श्रेणी में रखा जाता है।

इन्होंके विकास-विकास आपस में लड़ बैठे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थानीय भाषा में "इन्होंके" शब्द बोला जाता है, जिसका मतलब होता है "इन लोगों के"। यहां इसका मतलब विकसित देशों से है। अब सवाल यह है कि किसी देश को विकसित मानने का आधार क्या होना चाहिए? क्या आधुनिक तकनीक, ज्यादा पैसा, बड़ा क्षेत्र, अच्छी आय, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था ही किसी देश को विकसित बनाती है? अगर यही मानक हैं, तो फिर किसी भी देश को पूरी तरह विकसित नहीं कहा जा सकता। 2018 से 2020 के बीच कोरोना महामारी में कई विकसित देशों ने भी अपने बहुत से नागरिक खो दिए। उस समय स्वास्थ्य व्यवस्था के मामले में लगभग सभी देश कमजोर नजर आए।

आज के समय में जिस देश के पास परमाणु हथियार हैं और उन्हें जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल करने की क्षमता है, उसे ज्यादा ताकतवर और विकसित माना जाता है। रूस-यूक्रेन युद्ध इसका उदाहरण है। रूस ने जिस तरह हाल ही में मिसाइलों का परीक्षण किया, उससे कई देशों की चिंता बढ़ गई। क्या ऐसे हालात पैदा करने वाले देश को सबसे ज्यादा विकसित माना जाना चाहिए? रूस की बढ़ती ताकत देखकर अमेरिका को भी अपनी पकड़ कमजोर पड़ती दिखाई देने लगी, इसलिए उसने भी नए परीक्षण करने की घोषणा कर दी।

अमेरिका एक तरफ यूक्रेन का समर्थन करता है, लेकिन दूसरी तरफ जरूरत के मुताबिक उसे सभी हथियार नहीं देता। इसके पीछे उसका तर्क है कि इससे उसके व्यापार पर असर पड़ेगा। इसी तरह भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव के समय भी उसने कहा था कि व्यापार के हित में उसने दोनों देशों के बीच सीजफायर करवाया। अगर परमाणु बम बनाना विकास की निशानी नहीं है, तो फिर ईरान को परमाणु बम बनाने से रोकने की कोशिश क्यों की जाती है? कुछ खतरनाक हथियार बना लेना किसी भी तरह से विकास का सही मतलब नहीं हो सकता।

अगर अपने देश की बात करें तो पुल, सड़क, बांध और यातायात जैसी सुविधाओं में हो रही प्रगति को विकास माना जा सकता है। लेकिन ऐसी कोई भी योजना, जिससे फायदा कम और नुकसान ज्यादा होने की संभावना हो, उसे विकास नहीं कहा जा सकता। असली विकास वही है जिससे लोगों और पूरी मानव जाति का भला हों। जिन साधनों का उपयोग इंसानों को नुकसान पहुंचाने के लिए किया जाए, उनके आधार पर किसी देश को विकसित कहना सही नहीं लगता। अगर कोई देश खुद को विकसित मानकर दूसरे देश पर हमला करता है, तो दूसरा देश भी अपनी रक्षा के लिए जवाब जरूर देगा। ऐसे में अगर विकास का परिणाम खुद के विनाश तक पहुंच जाए, तो फिर ऐसे विकास और विकसित होने का क्या मतलब रह जाता है?

जलवायु परिवर्तन : अस्तित्व के सामने खड़ी वैश्विक चुनौती

"प्रकृति हमारी आवश्यकता पूरी कर सकती है, हमारे लालच की नहीं।"



सुश्री सिमरन
सहायक-सह-डाटा एंट्री ऑपरेटर
(तकनीकी प्रभाग)

21वीं सदी में मानव सभ्यता ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है, लेकिन इस विकास की कीमत हमारी पृथ्वी चुका रही है। बढ़ता वैश्विक तापमान, अनियमित वर्षा, पिघलते हिमनद, समुद्र के बढ़ते जलस्तर और लगातार बढ़ती प्राकृतिक आपदाएँ इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि पृथ्वी की जलवायु तेजी से बदल रही है। जलवायु परिवर्तन अब केवल पर्यावरण से जुड़ा विषय नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व, आर्थिक विकास और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से जुड़ी एक गंभीर चुनौती बन चुका है।

जलवायु परिवर्तन के कारण

जलवायु परिवर्तन के पीछे प्राकृतिक प्रक्रियाओं की भूमिका रही है, लेकिन वर्तमान समय में इसके लिए मानवीय गतिविधियाँ प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं। औद्योगीकरण, जीवाश्म ईंधनों—कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस—का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई तथा बढ़ता शहरीकरण वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ा रहे हैं। ये गैसें पृथ्वी के वातावरण में गर्मी को रोकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।

बदलती जलवायु के व्यापक प्रभाव

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव दुनिया के लगभग हर क्षेत्र में देखा जा रहा है। तापमान में वृद्धि के कारण कई स्थानों पर अत्यधिक गर्मी की लहरें पड़ रही हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में असामान्य वर्षा और बाढ़ की घटनाएँ बढ़ रही हैं। दूसरी ओर, अनेक क्षेत्र लंबे समय तक सूखे का सामना कर रहे हैं।

कृषि क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। तापमान में वृद्धि और वर्षा के बदलते स्वरूप से फसलों की उत्पादकता प्रभावित हो सकती है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर दबाव बढ़ता है। समुद्र के बढ़ते स्तर से तटीय क्षेत्रों और वहाँ रहने वाली आबादी के सामने विस्थापन का खतरा उत्पन्न हो रहा है। जैव-विविधता पर भी इसका गंभीर प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियाँ तेजी से बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल नहीं पा रही हैं।

भारत के लिए विशेष चुनौती

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव और भी व्यापक है। देश की बड़ी आबादी कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। अनियमित मानसून, अत्यधिक गर्मी, बाढ़ और सूखे जैसी घटनाएँ किसानों और ग्रामीण समुदायों की आजीविका को प्रभावित कर सकती हैं। साथ ही, तेजी से बढ़ते शहरों में बढ़ता तापमान और वायु प्रदूषण सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए अतिरिक्त चुनौती पैदा करते हैं।

समाधान : विकास के साथ पर्यावरण का संतुलन

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए केवल सरकारी नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं; इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी आवश्यक है। सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देना, ऊर्जा की खपत को कम करना और सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना महत्वपूर्ण कदम हैं।

इसके साथ ही, वनों का संरक्षण और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण, जल संरक्षण, कचरे का उचित प्रबंधन तथा टिकाऊ जीवनशैली को अपनाना भी आवश्यक है। उद्योगों को स्वच्छ तकनीकों की ओर बढ़ना होगा और विकास की ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी, जिनमें आर्थिक प्रगति के साथ पर्यावरणीय संरक्षण को भी समान महत्व मिलें।

पृथ्वी हमें विरासत में नहीं मिली है; यह आने वाली पीढ़ियों की अमानत है। इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य भी है और जिम्मेदारी भी।

कर्म की वाणी



सुश्री नेहा जैन
परामर्शदाता
(वाणिज्यिक प्रभाग)

बोलना

सभी को आता है,

किसी की "जुबान" बोलती है,

किसी की "नीयत" बोलती है,

किसी का "समय" बोलता है,

किसी का "पैसा" बोलता है,

किसी का "दबदबा" बोलता है।

और जिंदगी के "अंत" में,

कर्मों के "दरबार" में,

इंसान का हर "कर्म" बोलता है।

यही हूँ मैं



सुश्री अनीता रावत
सहायक सह डाटा एंट्री ऑपरेटर
(वाणिज्यिक प्रभाग)

यही हूँ मैं
चेहरे से उतनी सुंदर नहीं,
अपनी सादगी से महकती हूँ।
दिल साफ है मेरा,
मन में जो आए, वो बात कहती हूँ।

अंदर से भले टूट जाऊं,
पर दूसरों को हंसाने का हुनर रखती हूँ।

आज के दौर की लड़की हूँ मैं,
पर संस्कार पुराने रखती हूँ।
गर्व है मुझे मेरे मां-बाप की परवरिश पर,

जिसके लिए भी रहती हूँ,
ताउम्र वफादार रहती हूँ।
कुछ गिने-चुने लोग हैं, मेरी जिंदगी में,
जिनसे मैं बेहताशा प्यार करती हूँ।

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जिसमें सभी भारतीय भाषाओं का समन्वय है।

—राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

हिंदी : हमारी पहचान



श्री मयंक सिंह परिहार
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(सांख्यिकी प्रभाग)

माना हिंदी में अंक कभी थोड़े कम आते हैं,
पर क्यों हिंदी बोलने से हम कतराते हैं?
आधुनिकता की अंधी दौड़ में आगे तो बढ़ जाते हैं,
पर अपनी ही भाषा पर गर्व करना भूल जाते हैं।
कभी हिंदी की मधुर ध्वनि से गूँजता था यह देश,
हर शब्द में बसता था अपनापन, संस्कृति और परिवेश।
समय बदला, जीवन बदला, बदल गए व्यवहार,
"माँ" भी अब "मॉम" बन गई, यही है आज का संसार।

अंग्रेज़ी सीखना प्रगति का मार्ग अवश्य है,
पर हिंदी छोड़ देना न तो आवश्यक है, न उचित है।
विश्व से संवाद अंग्रेज़ी से हो सकता है,
किन्तु अपनी पहचान तो हिंदी ही बनाती है।

हिंदी हमारी अस्मिता है, हिंदी हमारा सम्मान है,
हिंदी भारत की आत्मा है, हिंदी राष्ट्र का अभिमान है।
यही हमारी आन है, यही हमारी बान है,
हिंदी से ही भारत की संस्कृति की पहचान है।

दिनकर की ओजस्वी लेखनी,
निराला की अमर वाणी,
पंत की कोमल संवेदनाएँ,
प्रेमचंद की अमिट कहानी—
इन महान साहित्यकारों की अमूल्य धरोहर,
हिंदी भाषा का अनुपम वैभव और अमर निधि है।

आओ, मिलकर ऐसा संकल्प निभाएँ,
हिंदी को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाएँ।
कार्यालय हो, विद्यालय हो या घर-परिवार,
हिंदी बने संवाद का सहज और सशक्त आधार।

आओ, हिंदी को सर-आँखों पर बिठाएँ,
अपनी मातृभाषा का गौरव पुनः जगाएँ।
मिल-जुलकर पूरे उत्साह और उल्लास के साथ कहें—

हिंदी है हमारी पहचान,
हिंदी है भारत की शान।
हर दिन हिंदी का मान बढ़ाएँ,
आओ, पूरे वर्ष "हिंदी वर्ष" मनाएँ।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
- स्वामी दयानंद

प्राकृतिक गैस – स्वच्छ ऊर्जा का संदेश



सुश्री माधवी बंसल
सहायक परामर्शदाता
(वाणिज्यिक प्रभाग)

प्रकृति का अनुपम है यह उपहार,
ऊर्जा का स्वच्छ और सुंदर आधार।
हर घर तक रोशनी पहुँचाए,
विकास की नई राह दिखाए।

धुएँ से जो राहत दिलाए,
स्वच्छ हवा का संदेश सुनाए।
पर्यावरण का सच्चा मित्र बनें,
हरियाली का विश्वास बनें।

रसोई में जलती नीली लौ,
सुरक्षा और सुविधा का हो संयोग।
उद्योगों को दे नई उड़ान,
बढ़ाए देश की नई पहचान।

पाइपलाइन से गाँव-शहर तक,
ऊर्जा पहुँचे घर-घर तक।
आर्थिक प्रगति का बने आधार,
सशक्त बने भारत हर बार।

संसाधनों का करें सम्मान,
संतुलित हो इसका उपयोग महान।
बचाएँ ऊर्जा, बढ़ाएँ विकास,
यही है उज्ज्वल भारत की आस।

आओ मिलकर यह प्रण करें,
प्राकृतिक गैस का सदुपयोग करें।
स्वच्छ ऊर्जा का यही है मंत्र,
हरित भविष्य बने हमारा तंत्र।

संदेश: "प्राकृतिक गैस केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं, बल्कि स्वच्छ पर्यावरण, सतत विकास और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"



पीएनजीआरबी के संग हरित हाइड्रोजन की नई उड़ान



सुश्री साक्षी गोयल
सहायक परामर्शदाता
(वाणिज्यिक प्रभाग)

हवा में छिपा, जल में समाया,
प्रकृति ने कितना अनमोल रत्न बनाया।

न रंग इसका, न कोई गंध,
फिर भी बदल दे दुनिया का छंद।

स्वच्छ ऊर्जा का यह संदेश,
हरित भविष्य की नई पहचान।

धुआँ नहीं, प्रदूषण नहीं,
धरती को दे नई ज़िंदगी यहीं।

हाइड्रोजन है भविष्य की शान,
स्वच्छ ऊर्जा, समृद्धि की पहचान।

पीएनजीआरबी का है यही प्रयास,
ऊर्जा क्षेत्र में बढ़े विश्वास।

नई नीतियाँ, नई उड़ान,
हरित भारत बने महान।

आओ मिलकर कदम बढ़ाएँ,
ऊर्जा आत्मनिर्भर भारत बनाएँ।

"कर्म– जैसा बोओगे, वैसा पाओगे"



सुश्री किरन कपूर
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(सदस्य के निजी सचिव)

"कर्म – जैसा बोओगे, वैसा पाओगे"
भारतीय दर्शन में कर्म का अर्थ केवल शारीरिक कार्य नहीं है। हमारे विचार, वचन और कर्म—तीनों मिलकर कर्म का निर्माण करते हैं। प्रत्येक कर्म एक संस्कार छोड़ता है और सृष्टि के नियम अनुसार उसका प्रतिफल अवश्य प्राप्त होता है।

कर्म का वास्तविक अर्थ क्या है?

* हर विचार एक बीज है
* हर शब्द एक ऊर्जा है
* हर कर्म भविष्य का निर्माण करता है
* आज के कर्म ही कल की परिस्थितियों को आकार देते हैं

कर्म का सिद्धांत:

सृष्टि में कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता। जो हम दूसरों को देते हैं—प्रेम, सम्मान, सहायता या कटुता—वह किसी न किसी रूप में हमारे पास लौटकर आता है।

"कर्म का अर्थ सजा नहीं, यह तो ब्रह्मांड की प्रेममयी व्यवस्था है जो हमें सीखाती और विकसित करती है।"

कर्म का गहरा संदेश:

कर्म हमें भयभीत करने के लिए नहीं, बल्कि जागरूक बनाने के लिए है। यह हमें याद दिलाता है कि हम अपने जीवन के निर्माता हैं। प्रत्येक क्षण हमें बेहतर चुनाव करने का अवसर देता है।

जीवनोपयोगी युक्ति:

आज जो बीज बोएंगे, कल वही फल मिलेगा। इसलिए अपने जीवन में सद्विचार, सद्वचन और सत्कर्म का बीजारोपण करें।

जीवन का संदेश:

"भाग्य कोई संयोग नहीं, बल्कि हमारे कर्मों का संचित परिणाम है।"

संकल्प लें:

"मैं अपने विचारों को शुद्ध, वाणी को मधुर और कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करूँगा, ताकि मेरा जीवन और समाज दोनों उज्ज्वल बनें।" ॐ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन॥

पर्यावरण से जुड़ा हमारा समाज



श्री मुकेश भारती
बहु कार्यकारी कर्मचारी
(निगरानी प्रभाग)

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है— "परि" तथा "आवरण"। "परि" का अर्थ है चारों ओर तथा "आवरण" का अर्थ है घेरा या आवरण। अर्थात् पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है— चारों ओर से घिरा हुआ वातावरण।

पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है, जो किसी जीवधारी अथवा जीव-समुदाय को प्रभावित करते हैं तथा उनके जीवन, विकास एवं अस्तित्व को निर्धारित करते हैं। प्रत्येक जीव अपने पर्यावरण से जुड़ा हुआ है और उसके चारों ओर व्याप्त समस्त प्राकृतिक एवं मानवीय तत्व उसके जीवन को प्रभावित करते हैं।

व्यापक अर्थों में पर्यावरण उन सभी जैविक एवं अजैविक तत्वों, परिस्थितियों, प्रक्रियाओं तथा घटनाओं का समुच्चय है, जो हमारे जीवन को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। हम जिस वातावरण में रहते हैं, वही हमारा पर्यावरण है। हमारे जीवन की प्रत्येक महत्वपूर्ण गतिविधि इसी के अंतर्गत संपन्न होती है। साथ ही, मनुष्य अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार, एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रित संबंध होता है।

सामान्यतः पर्यावरण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है तथा मनुष्य से इतर उसके चारों ओर विद्यमान समस्त प्राकृतिक एवं सामाजिक तत्वों को पर्यावरण का भाग माना जाता है। किंतु यह भी ध्यान देने योग्य है कि इस पृथ्वी पर अनेक ऐसी मानव सभ्यताएँ रही हैं, जो स्वयं को प्रकृति से अलग नहीं मानतीं। उनके लिए मनुष्य और प्रकृति एक ही इकाई के अभिन्न अंग हैं।

वास्तव में, मनुष्य से पृथक होने का विचार आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के साथ अधिक प्रबल हुआ है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने मनुष्य को प्रकृति में व्यापक परिवर्तन करने में सक्षम बनाया है। इसी आधार पर पर्यावरण को सामान्यतः दो भागों में विभाजित किया जाता है—

1. प्राकृतिक (या नैसर्गिक) पर्यावरण
2. मानव-निर्मित पर्यावरण

यद्यपि पूर्णतः प्राकृतिक पर्यावरण (जिसमें मानव का कोई हस्तक्षेप न हुआ हो) तथा पूर्णतः मानव-निर्मित पर्यावरण (जिसमें सब कुछ मनुष्य द्वारा निर्मित हो) वास्तविक रूप में कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। यह वर्गीकरण केवल मानव हस्तक्षेप की मात्रा के आधार पर किया जाता है।

पारिस्थितिक की तथा पर्यावरण शब्दों का प्रयोग अनेक बार पर्यावास के संदर्भ में भी किया जाता है, किंतु इन तीनों की अवधारणाएँ भिन्न हैं और प्रत्येक का अपना विशिष्ट महत्व है।

**"पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ!"**

ऊर्जा के बिना जीवन : एक दिन की कल्पना



श्री वरुण गोडयाल
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(प्रशासन प्रभाग)

कल्पना कीजिए, एक सुबह आपकी आँख खुलती है और पंखा बंद है। मोबाइल की बैटरी खत्म हो चुकी है, पानी की मोटर नहीं चल रही और रसोई में गैस उपलब्ध नहीं है। घर से बाहर निकलते ही पता चलता है कि ट्रैफिक सिग्नल, सार्वजनिक परिवहन और कई आवश्यक सेवाएँ भी ठप हैं। कुछ ही घंटों में हमें एहसास होने लगता है कि हमारा जीवन ऊर्जा पर कितना निर्भर है।

ऊर्जा हमारे जीवन की वह अदृश्य शक्ति है, जिसका महत्व हमें सामान्य परिस्थितियों में महसूस नहीं होता। घर की रोशनी से लेकर अस्पतालों की मशीनों तक, खेती, उद्योग, परिवहन और संचार—हर क्षेत्र में ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक जीवन की गति ऊर्जा के बिना कुछ ही समय में रुक सकती है।

भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती ऊर्जा की मांग के साथ ऊर्जा सुरक्षा और स्वच्छ ऊर्जा का महत्व भी बढ़ रहा है। प्राकृतिक गैस सहित विभिन्न ऊर्जा स्रोतों का कुशल और सुरक्षित उपयोग, साथ ही पर्यावरण संरक्षण, हमारे भविष्य के लिए आवश्यक है।

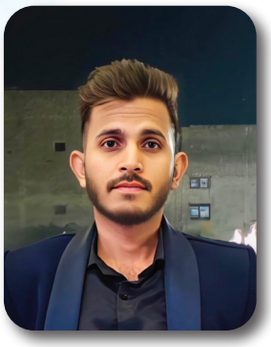
इसलिए ऊर्जा संरक्षण केवल बिजली या ईंधन बचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के बेहतर भविष्य की जिम्मेदारी है। अनावश्यक बिजली बंद करना, ईंधन की बचत करना और स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को अपनाना, हमारे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

ऊर्जा हमारे वर्तमान को गति देती है और हमारे भविष्य की दिशा तय करती है। इसलिए ऊर्जा का सम्मान करें, उसका विवेकपूर्ण उपयोग करें और उसके संरक्षण में अपना योगदान दें—क्योंकि ऊर्जा बचेगी, तभी भविष्य आगे बढ़ेगा।

देश की आत्मा को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना चाहिए, मुझे जान पड़ा है कि आधुनिक भारत की आत्मा को समझने के लिए मुझे हिंदी भाषा और उसमें प्रकाशित होने वाले साहित्य को पढ़ना चाहिए। हिंदी वर्तमान भारत की समृद्धतम भाषा है, ऐसी भाषा को आधुनिक बहुभाषी राष्ट्र की सभी आवश्यकताओं को संतोषजनक ढंग से पूरा कर सकती है।

—डॉ. ऑडोनल स्मैकल

एक बूंद ईंधन की कीमत



श्री शुभम
डाटा एंट्री ऑपरेटर (डीईओ)
(सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग)

हम अक्सर वाहन में ईंधन भरवाते समय उसकी कीमत केवल रुपये में देखते हैं, लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि ईंधन की एक बूंद की वास्तविक कीमत क्या है? उस एक बूंद के पीछे प्राकृतिक संसाधन, वर्षों की मेहनत, तकनीक और पर्यावरण से जुड़ी एक पूरी कहानी होती है।

ईंधन हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। हमारे वाहन, उद्योग, परिवहन और अनेक आवश्यक सेवाएँ ऊर्जा पर निर्भर हैं। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे ऊर्जा स्रोतों ने देश के आर्थिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन इन संसाधनों का असीमित उपयोग संभव नहीं है।

आज बढ़ती ऊर्जा मांग और पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच आवश्यकता है कि हम ईंधन का उपयोग सोच-समझकर करें। वाहन चलाते समय अनावश्यक इंजन चालू न रखना, उचित गति बनाए रखना, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना और ऊर्जा-कुशल साधनों को अपनाना जैसे छोटे प्रयास ईंधन की बड़ी बचत कर सकते हैं।

एक बूंद ईंधन शायद देखने में बहुत छोटी हो, लेकिन करोड़ों लोगों की छोटी-छोटी बचत मिलकर देश के लिए बहुत बड़ा योगदान बन सकती है। ईंधन की बचत केवल पैसे की बचत नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण की रक्षा भी है।

इसलिए अगली बार जब ईंधन की एक बूंद खर्च करें, तो उसकी कीमत केवल रुपये में नहीं, बल्कि भविष्य की एक छोटी-सी बचत के रूप में भी समझें।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।
- पुरुषोत्तम दास टंडन

दैनिक जीवन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग



सुश्री दीक्षा कश्यप
निजी सहायक
(प्रशासन प्रभाग)

आज के समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक केवल वैज्ञानिकों की प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। सुबह अलार्म बजने से लेकर रात को सोने तक, हम जाने-अनजाने कई बार एआई का इस्तेमाल करते हैं।

हमारे दैनिक जीवन में एआई के कुछ प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं:

स्मार्टफोन और वॉइस असिस्टेंट: हमारे फोन में मौजूद सिरी, गूगल असिस्टेंट या एलेक्सा एआई की मदद से ही हमारी आवाज पहचानकर कॉल करने, अलार्म लगाने या गाने बजाने का काम करते हैं।

सोशल मीडिया और मनोरंजन: यूट्यूब, नेटफ्लिक्स और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर आपकी पसंद के वीडियो और पोस्ट दिखाई देना एआई का ही कमाल है। यह तकनीक हमारे व्यवहार को समझकर हमें कंटेंट रिकमेंड करती है।

नेविगेशन और ट्रैवल: रास्ते खोजने के लिए गूगल मैप का उपयोग हम अक्सर करते हैं। एआई रियल-टाइम ट्रैफिक, सबसे छोटे रास्ते और सही समय का अनुमान लगाकर हमारी यात्रा को बेहद आसान बना देता है।

डिजिटल बैंकिंग और ऑनलाइन शॉपिंग: अमेज़न या फ्लिपकार्ट जैसे ऐप्स पर शॉपिंग करते समय एआई सर्च को आसान बनाता है। साथ ही, बैंक खातों में होने वाली धोखाधड़ी (फ्रॉड डिटेक्शन) को रोकने में भी एआई सुरक्षा चक्र का काम करता है।

स्वास्थ्य और शिक्षा: एआई आधारित मेडिकल उपकरण बीमारियों की शुरुआती पहचान में मदद कर रहे हैं। वहीं शिक्षा के क्षेत्र में छात्र अपनी पढ़ाई और भाषा सीखने के लिए चैटबॉट्स का सहारा ले रहे हैं।

निष्कर्ष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हमारे कामों को अधिक तेज, सटीक और सुविधाजनक बना दिया है। हालांकि, तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता से बचते हुए इसका संतुलन और सही दिशा में उपयोग ही एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य का निर्माण करेगा।



एआई और वर्कप्लेस: तकनीक की रफ्तार या नैतिकता की सीमाएं?



सुश्री अलोना यादव
सहायक परामर्शदाता
(जनसंपर्क एवं सोशल मीडिया तथा सूचना प्रौद्योगिकी प्रभाग)

आज के आधुनिक कार्यक्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारी कार्यशैली का अभिन्न अंग बन चुका है। अक्सर यह हमारे बैकग्राउंड में इतनी सहजता से काम करता है कि हमें इसकी मौजूदगी का अहसास तक नहीं होता। सर्च इंजन, रिकमेंडेशन एल्गोरिदम, टार्गेटेड विज्ञापन, वर्चुअल असिस्टेंट और फेशियल रिकग्निशन जैसी रोजमर्रा की तमाम प्रणालियों की बुनियाद एआई ही है।

हालाँकि एआई कोई नई अवधारणा नहीं है और यह कई दशकों से विकसित हो रही है, लेकिन हाल के वर्षों में जेनरेटिव एआई, मशीन लर्निंग और ऑटोमेटेड डिसीजन-मेकिंग के विस्तार ने कॉरपोरेट और पेशेवर दुनिया में इसकी भूमिका को अभूतपूर्व तरीके से बढ़ाया है। इस तेज रफ्तार बदलाव ने जहाँ कार्यकुशलता और उत्पादकता में इजाफा किया है, वहीं कई गंभीर नैतिक प्रश्न भी खड़े कर दिए हैं। डेटा प्राइवेसी, साइबर सुरक्षा, एल्गोरिदम का पूर्वाग्रह, बौद्धिक संपदा, जवाबदेही और तकनीक का जिम्मेदार उपयोग, ये सभी ऐसे मुद्दे हैं जिनकी अनदेखी अब मुमकिन नहीं है।

कार्यस्थल पर एआई के बढ़ते दखल से कई नई नैतिक चुनौतियाँ सामने आई हैं। इनमें मुख्य रूप से दो पहलू सबसे संवेदनशील हैं:

एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह: एआई सिस्टम की अपनी कोई निजी राय या भावनाएँ नहीं होतीं; वह पूरी तरह उसी डेटा पर निर्भर करता है, जिससे उसे प्रशिक्षित किया जाता है। यदि ट्रेनिंग डेटा में ऐतिहासिक या सामाजिक भेदभाव मौजूद है, तो एआई के निष्कर्षों में भी वही पूर्वाग्रह दोहराए जाएंगे या और गहरे हो जाएंगे। यह जोखिम तब बेहद गंभीर हो जाता है जब एआई का उपयोग नई भर्तियों, कर्मचारियों के परफॉर्मेंस रिव्यू या प्रमोशन के फैसलों में किया जा रहा हों।

कर्मचारियों की निजता और निगरानी: आज ऐसी तकनीकें सुलभ हैं, जो कर्मचारियों की गतिविधियों की निगरानी, उनके काम करने के तौर-तरीकों का विश्लेषण और यहाँ तक कि उनके नौकरी छोड़ने के रुझान का भी पूर्वानुमान लगा सकती हैं। यह डेटा रणनीतिक योजना के लिए उपयोगी हो सकता है, लेकिन हद से ज्यादा निगरानी कर्मचारियों के मन में अविश्वास पैदा करती है और इसे उनकी निजता में दखल के रूप में देखा जाता है।

कार्यस्थल पर नैतिक एआई सिद्धांतों को कैसे लागू करें?

कार्यस्थल पर नैतिक एआई सिद्धांतों को केवल कागजी औपचारिकताओं तक सीमित रखने के बजाय असल कामकाजी प्रक्रियाओं में उतारने के लिए एक सुनियोजित दृष्टिकोण आवश्यक है। इसके तहत किसी भी नए एआई टूल को अपनाने से पहले कर्मचारियों, ग्राहकों और समग्र संगठन पर पड़ने वाले उसके तात्कालिक व दूरगामी प्रभावों और जोखिमों का व्यापक पूर्व-मूल्यांकन किया जाना चाहिए। विशेष रूप से भर्ती, परफॉर्मेंस रिव्यू और वर्कफोर्स मैनेजमेंट जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में अत्यधिक सतर्कता बरतते हुए तकनीक का चयन गहन जांच-पड़ताल के बाद ही हों। इसके साथ ही, संगठन के सभी हितधारकों के सुझावों पर आधारित एक स्पष्ट व सुदृढ़ एआई

नीति तैयार की जानी चाहिए, जो इसके मर्यादित और जिम्मेदार उपयोग की रूपरेखा तय करें। किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय में मानवीय विवेक को सदैव सर्वोपरि रखा जाए और एआई के सुझावों को अंतिम फैसले का विकल्प बनाने के बजाय केवल सहायक इनपुट के रूप में देखा जाए। अंततः, सिस्टम की सटीकता, विश्वसनीयता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए नियमित तकनीकी व नैतिक ऑडिट सुनिश्चित किए जाएं, साथ ही कर्मचारियों के लिए निरंतर एआई साक्षरता और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएं ताकि वे इस तकनीक की असीम क्षमताओं के साथ-साथ उसकी व्यावहारिक सीमाओं के प्रति भी पूरी तरह सजग रह सकें।

नैतिकता को सशक्त बनाने का माध्यम भी है एआई

एआई केवल नई चुनौतियाँ ही नहीं लाता, बल्कि मौजूदा नैतिक समस्याओं को हल करने का एक प्रभावी माध्यम भी बन सकता है। जब इसे जिम्मेदारी के साथ डिजाइन किया जाता है, तो यह कई मामलों में इंसान से बेहतर काम करता है:

एआई विशाल डेटा का व्यवस्थित विश्लेषण करके दस्तावेजों की गलतियां, सॉफ्टवेयर कोड की गड़बड़ियां और फैसलों में जाने-अनजाने आए इंसानी पूर्वाग्रह को उजागर कर सकता है। मशीन लर्निंग सिस्टम संदिग्ध लेन-देन और असामान्य व्यवहार के पैटर्न को तुरंत पकड़ लेते हैं। पहचान की चोरी और वित्तीय अनियमितताओं को रोकने में यह तकनीक बेहद कारगर है।

यह समझना जरूरी है कि एआई एक सशक्त सहयोगी है, कोई अंतिम सत्य नहीं। इसकी प्रासंगिकता डेटा की शुद्धता और मानवीय नियंत्रण पर ही टिकी है।

नई तकनीक, नई जिम्मेदारी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किसी भी अन्य तकनीकी क्रांति की तरह अपने आप में न तो अच्छी है और न बुरी। इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे किस तरह गढ़ते हैं, लागू करते हैं और नियंत्रित करते हैं।

संगठनों को केवल यह नहीं पूछना चाहिए कि "एआई क्या-क्या कर सकता है?", बल्कि यह भी विचार करना चाहिए कि "क्या इसका उपयोग नैतिक, निष्पक्ष और उचित है?" जब सुदृढ़ गवर्नेंस, जागरूक वर्कफोर्स और मानवीय संवेदनशीलता एक साथ काम करते हैं, तब एआई सिर्फ प्रोडक्टिविटी बढ़ाने का साधन नहीं रहता, बल्कि एक अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और जवाबदेह कार्यसंस्कृति की नींव बन जाता है।

हिंदी भारत की एक सार्वजनिक भाषा के इतिहास की श्रृंखला में अन्तिम कड़ी के रूप में हमारे सामने आई

- डॉ. सुनिति कुमार चटर्जी

'सत्यवचन'



सुश्री अंजली सोनी
सहायक-सह-डेटा एंट्री ऑपरेटर
(विधि प्रभाग)

- अपने जीवन की तुलना किसी के साथ नहीं करनी चाहिए, सूर्य और चंद्रमा के बीच कोई तुलना नहीं है, जब जिसका वक्त आता है वह चमकता है।
- ऊंचाई पर वो पहुंचते हैं जो प्रतिशोध के बजाय परिवर्तन की सोच रखते हैं।
- जिंदगी छोटी नहीं होती है, लोग जीना ही देरी से शुरू करते हैं। जब तक रास्ते समझ में आते हैं तब तक लौटने का वक्त हो जाता है। बस यही जिंदगी है।
- परमात्मा सभी को एक ही मिट्टी से बनाता है। बस फर्क इतना है कि कोई बाहर से खूबसूरत होता है तो कोई भीतर से।
- गलत आरोपों को लेकर चिंतित न रहें बल्कि उसका सामना करें, याद रखिए समय का ग्रहण तो चांद और सूर्य भी झेलते हैं।
- किसी को तुम दिल से चाहो और वो तुम्हारी कदर न करें, तो ये उसकी बदनसीबी है तुम्हारी नहीं।
- जन्म होने पर बंटने वाली मिठाई से शुरू हुआ ज़िंदगी का यह खेल श्राद्ध की खीर पर आकर खत्म हो जाता है। यही जीवन की मिठास है और बड़े दुर्भाग्य की बात है कि इंसान इन दोनों मौकों पर ये दोनों चीजें नहीं खा पाता।
- गरीबों में अच्छा वक्त आने की उम्मीद रहती है लेकिन अमीरों को सदा बुरा वक्त आने का खौफ रहता है।
- भरोसा तो अपनी सांसों का भी नहीं है और हम इंसान पर करते हैं।

> **"निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल।**
> **बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।"**
>
> —भारतेंदु हरिश्चंद्र

दीपोपर्व उत्सव



श्री मारोती पंदलवाड
बहु कार्यकारी कर्मचारी
(प्रशासन प्रभाग)

आया है दीपों का त्योहार,
हर ओर फैला है प्रकाश।
दीपावली आने का सबको था इंतजार,
दीपों से जगमग हो जाता घर-संसार।
दीपावली है खुशियों का त्योहार,
बम-पटाखे फोड़कर
फैलाएं न प्रदूषण अपार।
दीपों संग मनाएं दीपावली का त्योहार,
हर ओर फैलाएं खुशियों का संसार।
हर घर रोशन हो जाए,
ऐसे मनाएं दीपावली का त्योहार।
प्रेम-सौहार्द का माहौल बनाकर,
सबको खिलाएं पकवान।
प्रेम का प्रकाश फैलाकर,
सबको दें खुशियों का उपहार।

नई सोच, नई उड़ान



सुश्री आरती वर्मा
डेटा एंट्री ऑपरेटर
(सी. बी. जी. प्रकोष्ठ)

हर सुबह एक नया संदेश लाती है,
उम्मीदों की किरण साथ लाती है।
मेहनत की राह पर जो बढ़ते हैं,
वही अपने सपनों को सच करते हैं।

छोटे-छोटे प्रयास ही बनते हैं आधार,
इन्हीं से मिलता है सफलता का उपहार।
मुस्कान, सहयोग और सच्ची लगन,
यही है हर कर्मयोगी का अमूल्य धन।

आओ मिलकर ऐसा वातावरण बनाएँ,
जहाँ सम्मान और विश्वास को अपनाएँ।
क्योंकि जब साथ मिलकर कदम बढ़ते हैं,
तभी सफलता के नए इतिहास गढ़ते हैं।

"कर्म से ही पहचान बनती है,
और सकारात्मक सोच से सफलता मिलती है।"

पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए कर्मियों की सूची

इस अवधि के दौरान निम्नलिखित अधिकारी/कार्मिक पीएनजीआरबी से सेवामुक्त हुए, पीएनजीआरबी की ओर से उनके सुखद जीवन की शुभकामनाएं:-

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम
1.	श्री ए. रमना कुमार	सदस्य (निगरानी आधारभूत अवसंरचना और तकनीकी)
2.	सुश्री सुधा रानी रेलांगी	सदस्य (विधि)
3.	लेफ्टिनेंट कर्नल पवन कुमार उनियाल	निदेशक (प्रशासन)
4.	मो. तनवीर अख्तर	निदेशक (प्राधिकरण)
5.	श्री राकेश कुमार शाही	उप-निदेशक, प्रभारी (उपभोक्ता मामले)
6.	श्री गगन अग्रवाल	उप-निदेशक प्रभारी (तकनीकी)
7.	श्री सुमित सरकार	सहायक (निदेशक) (तकनीकी)
8.	श्री सुनीत वर्मा	विशेषज्ञ परामर्शदाता (रणनीतिक योजना-2)
9.	श्री अमित कुमार	परामर्शदाता (प्राधिकरण)
10.	श्री नवीन डागर	परामर्शदाता (आईटी)
11.	श्री प्रथुरी सोमेश्वर राव	परामर्शदाता (प्रशासन)
12.	सुश्री नेहा पी. भट्टाचार्जी	परामर्शदाता (निगरानी)
13.	श्री प्रशांत कुमार रिबाडिया	उप-परामर्शदाता (प्राधिकरण-3)
14.	श्री सुरेंद्र कुमार नागोरी	उप-परामर्शदाता (वाणिज्यिक)
15.	सुश्री निगार अली	उप-परामर्शदाता (प्राधिकरण)
16.	सुश्री शिवानी	सहायक परामर्शदाता (वाणिज्यिक)
17.	श्री अमित त्रिपाठी	सहायक परामर्शदाता (सांख्यिकी)
18.	श्री तन्मय वत्स	सहायक परामर्शदाता (रणनीतिक योजना-2)

19.	श्री सकारिया प्रतीक कांजीभाई	सहायक परामर्शदाता (प्राधिकरण-7)
20.	श्री अनुज कुमार सिंह	सहायक परामर्शदाता (तकनीकी-7)
21.	सुश्री हर्षिता तोमर	सहायक परामर्शदाता (विधि)
22.	श्री आदित्य सचदेवा	सहायक परामर्शदाता (निगरानी-4)
23.	श्री रॉबिन्स राज	सहायक परामर्शदाता (निगरानी)
24.	श्री शुभम्	सहायक परामर्शदाता (निगरानी)
25.	श्री निखिल यादव	सहायक परामर्शदाता (निगरानी)
26.	श्री अम्बिकेश तिवारी	सहायक परामर्शदाता (निगरानी)
27.	श्री वामन वशिष्ठ	सहायक परामर्शदाता (तकनीकी)
28.	श्री बालाजी सहगल	सहायक परामर्शदाता (रणनीतिक योजना)

हम सभी भारतवासियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि
हम हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएं
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए कर्मियों की सूची

इस अवधि के दौरान पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए निम्नलिखित कार्मिकों का हार्दिक स्वागत है:-

क्र.स.	नाम श्री/श्रीमती	पदनाम
1.	श्री लखपत राय जैन	विशेषज्ञ सलाहकार (रणनीतिक योजना)
2.	श्री प्रदीप तंवर	निदेशक (तकनीकी)
3.	श्री सार्थक सतीश अडसुल	उप-निदेशक-3 (निगरानी)
4.	श्री सिमरनजीत सिंह	उप-निदेशक-3 (प्राधिकरण)
5.	श्री रजत रैना	उप-निदेशक-2 (आईटी)
6.	श्री तरुण जैन	सहायक निदेशक (रणनीतिक योजना)
9.	श्री सुजीत सागर केरकेट्टा	परामर्शदाता-1 (आईटी)
11.	श्री अजीत कुमार	परामर्शदाता-1 (आईटी)
12.	श्री नगेन्द्र सिंह	परामर्शदाता (रणनीतिक योजना प्रभाग)
14.	श्री संजय कोहली	परामर्शदाता (प्रशासन)
15.	श्री अविनाश चंद्रा	परामर्शदाता (समन्वय)
16.	श्री रोहित खरे	उप-परामर्शदाता-4 (वाणिज्यिक)
17.	श्री वरुण तलवार	उप-परामर्शदाता-3 (विधि)
18.	सुश्री खुशबू यादव	उप-परामर्शदाता-3 (विधि)
19.	श्री सोमांशु जैरथ	उप-परामर्शदाता-2 (उपभोक्ता मामले)
20.	सुश्री अलोना यादव	सहायक परामर्शदाता (पीआर और एसएम, आईटी)
21.	सुश्री साक्षी गोयल	सहायक परामर्शदाता-1 (वाणिज्यिक)
22.	श्री वंशदीप सिंह	सहायक परामर्शदाता-6 (निगरानी)

23.	श्री सुमित कुमार कामती	सहायक परामर्शदाता (एफएसडी-1, आईटी)
24.	मोहम्मद ज़ैद	सहायक परामर्शदाता-4 (प्राधिकरण)
25.	श्री रुद्रांश नाथ त्रिपाठी	सहायक परामर्शदाता-4 (निगरानी)
26.	श्री ऋषिकेश दुआरा:	सहायक परामर्शदाता-5 (प्राधिकरण)
27.	सुश्री यल्ला तिरुमाला तेजस्विनी उर्मीला देवी	सहायक परामर्शदाता-3 (प्राधिकरण)
28.	सुश्री विदुषी भड़ाना	सहायक परामर्शदाता-8 (निगरानी)
29.	श्री आदित्य गुप्ता	सहायक परामर्शदाता (सांख्यिकी)
30.	सुश्री माधवी बंसल	सहायक परामर्शदाता-2 (वाणिज्यिक)
31.	श्री अतीब मेराज	सहायक परामर्शदाता (सततता प्रकोष्ठ)
32.	श्री करी प्रशांत	सहायक परामर्शदाता (सीबीजी प्रकोष्ठ)
33.	श्री माधव सारंगी	सहायक परामर्शदाता (आईटी)

मैं कहता हूं कि आप अपनी भाषा में बोलें, अपनी भाषा में लिखें। उनको गरज होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे। मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिंदी भाषा का दर्जा बढ़ेगा

– महात्मा गांधी

दैनिक उपयोग में आने वाली संक्षिप्त टिप्पणियाँ

इस अवधि के दौरान पीएनजीआरबी में सम्मिलित हुए निम्नलिखित कार्मिकों का हार्दिक स्वागत है:-

1.	Every meeting of the board will be chaired by the Chairman.	बोर्ड की हर बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष द्वारा की जाएगी।
2.	I have been directed to inform you.	मुझे आपको यह सूचित करने का निदेश दिया गया है।
3.	I fully agree with the office note.	मैं कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णतः सहमत हूँ।
4.	For such action as may be necessary.	यथा आवश्यक कार्रवाई के लिए।
5.	This is a partial list.	यह एक आंशिक सूची है।
6.	A certificate should also be furnished with the report.	रिपोर्ट के साथ एक प्रमाण-पत्र भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
7.	Ratification of the proposal is required.	प्रस्ताव का अनुसमर्थन आवश्यक है, प्रस्ताव का अनुमोदन आवश्यक है।
8.	Advance can be granted.	अग्रिम धनराशि दी जा सकती है।
9.	An appraisal system has been introduced.	एक मूल्यांकन प्रणाली शुरू की गई है, एक आकलन प्रणाली शुरू की गई है।
10.	The scheme was launched on pilot basis.	योजना को प्रायोगिक आधार पर शुरू किया गया।
11.	The fund will be released in two instalments.	निधि दो किस्तों में जारी की जाएगी।
12.	Impact assessment and evaluation of the project would be carried out periodically.	परियोजना के प्रभाव आकलन और मूल्यांकन समय-समय पर किया जाएगा।
13.	Intellectual Property Rights.	बौद्धिक संपदा अधिकार।
14.	We are not concerned with it.	इससे हमारा कोई सरोकार नहीं है, इससे हमारा कोई संबंध नहीं है।
15.	Verified and found correct.	पड़ताल की और ठीक पाया, सत्यापित किया गया तथा सही पाया गया।

16.	The relevant file is placed below.	संबंधित फ़ाइल नीचे रखी गई है।
17.	Submitted for consideration.	विचारार्थ प्रस्तुत है।
18.	Please expedite.	कृपया कार्रवाई शीघ्र करें, कृपया कार्य में तेजी लाएँ।
19.	Put up a summary.	सारांश प्रस्तुत करें, संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करें।
20.	Order may be issued.	आदेश जारी किया जा सकता है।
21.	Obtain formal sanction.	औपचारिक स्वीकृति प्राप्त करें।
22.	Needful be done.	आवश्यक कार्रवाई की जाए, आवश्यक कार्यवाही करें।
23.	Matter is under consideration.	विषय विचाराधीन है, मामला विचाराधीन है।
24.	May be treated as urgent.	इस मामले को अत्यावश्यक समझा जाए।
25.	Keep pending.	लंबित रखा जाए।
26.	Information is being collected and will be furnished soon.	सूचना एकत्र की जा रही है और शीघ्र ही प्रस्तुत की जाएगी।
27.	Give top priority to this work.	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।
28.	Further action not necessary.	आगे की कार्रवाई की आवश्यकता नहीं है।
29.	Fix a date for meeting.	बैठक हेतु तारीख तय करें, बैठक हेतु तिथि निर्धारित की जाए।



30.	For sympathetic consideration.	सहानुभूतिपूर्ण विचारार्थ।
31.	For signature please.	हस्ताक्षर के लिए, हस्ताक्षरार्थ।
32.	Draft for approval.	मसौदा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है, प्रारूप अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।
33.	Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण मांगा जाए।
34.	A dedicated Capacity Building Cell will be set up.	एक समर्पित क्षमता निर्माण प्रकोष्ठ स्थापित किया जाएगा।
35.	Early action in the matter is requested.	अनुरोध है कि इस मामले में शीघ्र कार्रवाई करें।
36.	The budgetary allocation has been enhanced.	बजटीय आवंटन बढ़ाया गया है, बजटीय आवंटन में वृद्धि की गई है।
37.	This requires administrative approval.	इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन अपेक्षित है।
38.	It needs further clarification.	इसे और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, इस पर और स्पष्टीकरण अपेक्षित है।
39.	Copy of the letter referred to above is sent herewith.	उपर्युक्त पत्र की प्रतिलिपि इसके साथ भेजी जा रही है।
40.	Case is resubmitted as directed on previous page.	पूर्व पृष्ठ पर दिए गए निर्देशानुसार मामला पुन: प्रस्तुत है।
41.	Brief note is placed below.	संक्षिप्त टिप्पणी नीचे प्रस्तुत है।
42.	As required under the rules.	जैसा कि नियमों के अधीन अपेक्षित है/हों।
43.	As may be considered expedient.	जैसा कि समीचीन प्रतीत हों।
44.	As already pointed out.	जैसा कि पहले बताया जा चुका है।
45.	Approved draft typed and put up for signatures, please.	अनुमोदित प्रारूप टाइप कर हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है, स्वीकृत मसौदा टाइप कर हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।
46.	Office to note and comply.	कार्यालय ध्यान दें और पालन करें, कार्यालय इसे नोट करें और अनुपालन करें।
47.	You may take necessary action.	आप तदनुसार आवश्यक कार्रवाई करें।
48.	With immediate effect.	इसी समय से, तात्कालिक प्रभाव से, तत्काल से।

49.	Without any further reference.	बिना किसी अन्य संदर्भ के, बिना पुनःसंदर्भ दिए।
50.	Without assigning any reason.	बिना कोई कारण बताए।
51.	Without delay.	अविलंब।
52.	Without fail.	अवश्य, बिना चूक।
53.	With reference to.	के संबंध में, के प्रसंग में, के संदर्भ में ।
54.	You are hereby authorised to sign the document	आपको एतद्द्वारा दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत किया जाता है।
55.	You are hereby informed that.	आपको इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि।
56.	Please put up for perusal, please.	कृपया अवलोकनार्थ प्रस्तुत करें।
57.	Put up for verification.	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें।
58.	Reasons for delay should be explained.	देरी/विलंब के कारण बताए जाएं।
59.	Please sign in Hindi.	कृपया हिंदी में हस्ताक्षर करें।
60.	Reminder may be sent.	अनुस्मारक भेजा जाए, स्मरण पत्र भेज दें।
61.	Required information is furnished herewith.	अपेक्षित सूचना इसके साथ भेजी जा रही है।
62.	Retrospective effect cannot be given to this order.	इस आदेश को पूर्व प्रभाव से लागू नहीं किया जा सकता।
63.	Resubmitted as desired.	यथापेक्षा पुन: प्रस्तुत है।
64.	Sanction hereby accorded to.	इसके लिए एतद्द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती है।
65.	Sanction as proposed.	यथाप्रस्तावित स्वीकृत, प्रस्ताव के अनुसार स्वीकृति प्रदान की जाती है।
66.	As above.	उपर्युक्त के अनुसार।
67.	Bills for signature please.	बिल हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत है, कृपया बिलों पर हस्ताक्षर कर दें।
68.	Preceding Notes.	पूर्ववर्ती टिप्पणियां।

69.	Advance can be granted.	अग्रिम धनराशि दी जा सकती है।
70.	Please acknowledge receipt.	कृपया पावती भेजें, कृपया प्राप्ति-सूचना दें।
71.	Seen and returned.	देखा और वापस किया।
72.	List of documents is enclosed.	दस्तावेजों की सूची संलग्न है।
73.	This contract will be terminated soon.	यह संविदा शीघ्र समाप्त हो जाएगी, यह अनुबंध जल्द समाप्त हो जाएगा।
74.	Till further orders.	अगले आदेश तक।
75.	Kindly review the case.	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें।
76.	The undersigned is directed to acknowledge the receipt of your letter no. dated	अधोहस्ताक्षरी को आपके पत्र संख्या..... दिनांक..... की प्राप्ति की पावती देने का निर्देश दिया गया है।
77.	Most immediate.	अति तत्काल, अत्यावश्यक, अत्यन्त तत्काल।
78.	Necessary action may be taken.	आवश्यक कार्रवाई की जा सकती है, आवश्यक कार्रवाई की जाए।
79.	No action necessary.	कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं।
80.	Orders communicated.	आदेश संप्रेषित कर दिया गया।
81.	Please discuss.	चर्चा कीजिए।
82.	Submitted for order.	आदेशार्थ प्रस्तुत।
83.	Submitted for perusal.	अवलोकनार्थ प्रस्तुत।
84.	Fully agree with the office note.	कार्यालय की टिप्पणी से पूर्णत: सहमत हूं।
85.	Put up for orders please.	कृपया आदेश के लिए प्रस्तुत करें।
86.	The proposal is quite in order.	यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल है।
87.	Copy enclosed.	प्रतिलिपि संलग्न है।
88.	Accepted for payment.	भुगतान के लिए स्वीकृत।
89.	Early orders are solicited.	शीघ्र आदेश देने की कृपा करें, शीघ्र आदेश अपेक्षित हैं।

90.	For information and guidance.	सूचना और मार्गदर्शन के लिए।
91.	Please expedite the return of this file.	कृपया इस फ़ाइल को शीघ्र लौटाएं।
92.	Issue for consideration.	विचारार्थ प्रस्तुत, विचारार्थ विषय।
93.	Please expedite compliance.	कृपया शीघ्र अनुपालन कीजिए।
94.	Signed, sealed and delivered.	हस्ताक्षरित, मुहरबंद और सुपुर्द किया गया।
95.	Vetting of the draft.	प्रारूप का पुनरीक्षण, मसौदे का परीक्षण।

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही
राष्ट्र भाषा पद की अधिकारिणी है
- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

इनसे मदद लें- कार्यालय के दैनिक कामकाज़ में प्रयोग होने वाले कुछ उपयोगी अंग्रेज़ी-हिंदी शब्दः-

क्र.सं.	अंग्रेज़ी	हिंदी
1.	Checking	जाँच
2.	Inspection	निरीक्षण
3.	Verification	सत्यापन
4.	Investigation	अन्वेषण
5.	Observation	पर्यवेक्षण
6.	Oversee	अवलोकन/संवेक्षण
7.	Examination	परीक्षण
8.	Unfair	अनुचित
9.	Promotion	उन्नति
10.	Research	शोध/अनुसंधान
11.	Development	विकास
12.	Progress	प्रगति
13.	Increase	बढ़ोत्तरी
14.	Growth	वृद्धि
15.	Augmentation	संवर्धन
16.	Relief	राहत
17.	Relaxation	ढ़ील
18.	Concession	रियायत
19.	Rebate	छूट
20.	Discount	बट्टा
21.	Compensation	क्षतिपूर्ति

22.	Reduction	कटौती
23.	Reimbursement	प्रतिपूर्ति
24.	Grant	अनुदान
25.	Acceptance	स्वीकृति
26.	Permission	अनुज्ञा
27.	Approval	अनुमोदन
28.	Balance Sheet	तुलन पत्र
29.	Withdrawal	अदायगी
30.	Miscellaneous	विविध
31.	Vision	अभिदृष्टि
32.	Access	पहुंच, प्रवेश करना
33.	Follow-up	अनुवर्ती
34.	Grievance procedure	शिकायत (निवारण) पद्धति
35.	Indent	मांगपत्र
36.	Law and order	कानून और व्यवस्था
37.	Outlook	दृष्टिकोण
38.	Pagination	पृष्ठ-संख्या डालना
39.	Reasonable	युक्तियुक्त, तर्कसंगत
40.	Sender	भेजनेवाला, प्रेषक
41.	Third party	तृतीय पक्ष, अन्य पक्ष
42.	Retirement	सेवानिवृत्ति
43.	Recommendation	सिफारिश, अनुशंसा

44.	Underlined	रेखांकित
45.	Verification	सत्यापन
46.	Warranty	वारंटी, आश्वासन
47.	Opening balance	आरंभिक शेष
48.	Dead line	निर्धारित समय-सीमा, समय सीमा
49.	General expenses	सामान्य व्यय
50.	Hall mark	प्रमाण चिह्न, हॉल मार्क

इंगलैंड में हमारा क्रांतिकारियों का दल था। हम प्रति दिन प्रण दुहराते थे कि हमारा देश हिंदुस्तान, हमारा गीत वंदेमातरम्, हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है

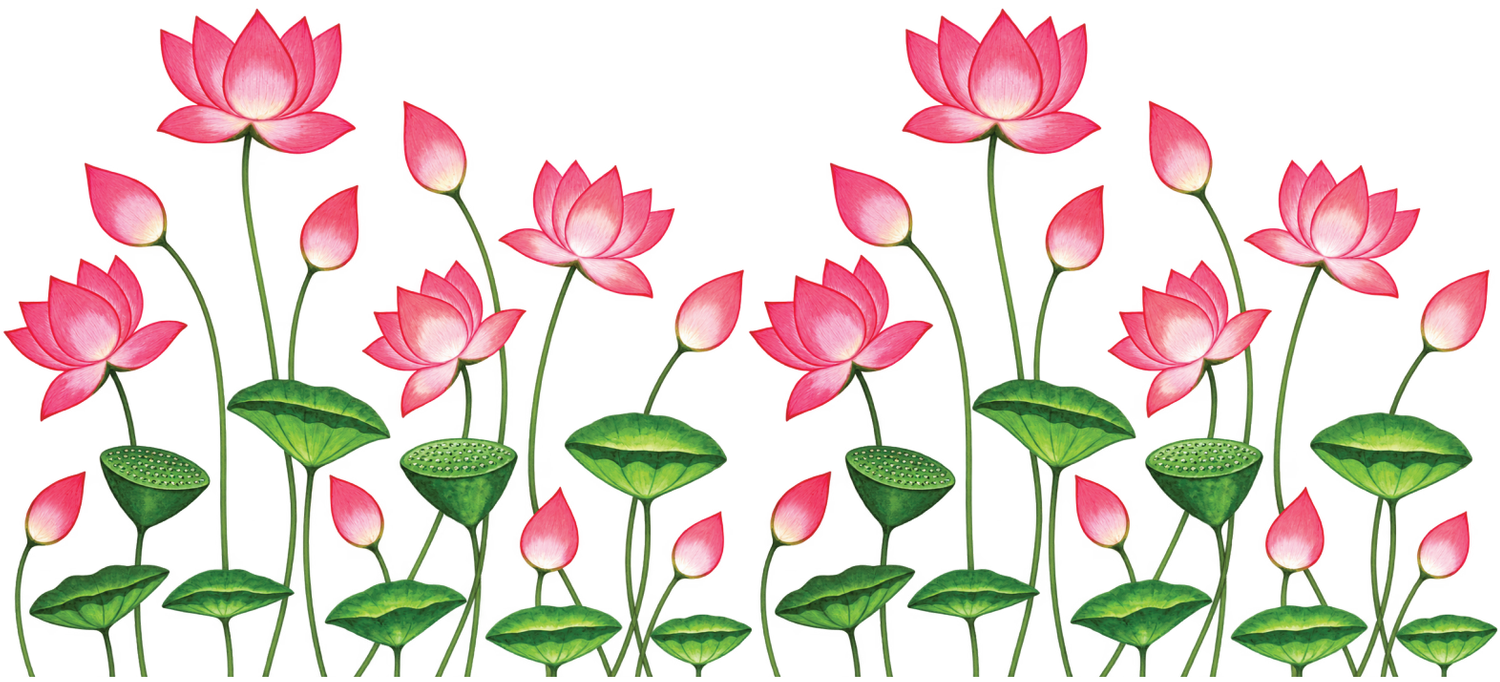
- विनायक दामोदर सावरकर

पीएनजीआरबी

दर्पण

2025-26

पी एन जी आर बी
PNGRB



पी एन जी आर बी
PNGRB

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड
Petroleum and Natural Gas Regulatory Board

www.pngrb.gov.in

ई-400, चतुर्थ तल, टावर-ई, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, नौरोजी नगर, नई दिल्ली - 110029
E-400, 4th Floor, Tower-E, World Trade Center, Nauroji Nagar, New Delhi - 110029

Design & Printed at : Royal Press, Okhla, New Delhi